जो होना था हो के रहा...

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Jo Hona Tha Ho Ke Raha (Whatever Had to Happen…)
Cover Page picture: Destiny
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
जो होना था हो के रहा... 7
1 बलडूर की कहानी 9
2 अकिलिस की एड़ी 18
3 दुर्योधन की कहानी 25
4 शिशुपाल की कहानी 39
5 राजा परीक्षित की कहानी 45
6 गौतम बुद्ध की कहानी 58
7 वराह मिहिर की कहानी 63
किस्मत की कुछ लोक कथाऐं 75
8 सूरज की बेटी 77
9 ग्वालिन रानी 90
10 जादूगरनी का सिर 101
11 इस्मेलियन सौदागर 113
12 चिड़ियों की भाषा 123
13 झरने की कहानी 132
14 एक देश जहाँ कोई कभी नहीं मरता 146
15 बदकिस्मत वासिली 155
16 किस्मत 182
17 ज़िन्दगी का भेद 190
18 तीन कुत्ते 212
19 अमीर मार्क 241

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब स्सौ साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

जो होना था हो के रहा...

घटनाऐं और दुर्घटनाऐं तो जीवन का एक हिस्सा हैं। या यों कहें कि जीवन बना ही इन्हीं से हैं। वैसे तो घटनाओं या दुर्घटनाओं दोनों का ही पहले से पता नहीं चलता पर कभी कभी पता चल भी जाता है। पर अगर पता चल जाता है तो बहुत बार ऐसा होता है कि हम उस दुर्घटना से अपने आपको बचाने की बहुत कोशिश करते हैं क्योंकि कोई दुर्घटना नहीं चाहता पर हमारी सब कोशिशें बेकार जाती हैं और वह दुर्घटना हो कर ही रहती है।

यहॉ कई देशों की कहानियों से निकाली गयी ऐसी ही कुछ कहानियॉ दी जा रही हैं जिनमें लोगों को दुर्घटना का पहले से पता था सो उन्होंने उन दुर्घटनाओं को न होने देने की बहुत कोशिश की परन्तु वे नाकामयाब रहे। हिन्दू धर्म में हम इसको भाग्य, किस्मत या होनी कहते हैं। सो भाग्य घटनाओं के विकास का वह क्रम है जो हमारे नियन्त्रण में नहीं है। वह किसी अलौकिक शक्ति द्वारा नियन्त्रित है। कहते हैं कि होनी को टाला नहीं जा सकता या भाग्य बहुत प्रबल है या किस्मत में ऐसा ही लिखा था।

इस पुस्तक में कुछ लोक कथाऐं, कुछ कहानियॉ, कुछ दंत कथाऐं, कुछ परियों की कथाऐं सभी प्रकार की कहानियॉ शामिल है। आशा है तुम लोगों को ये कहानियॉ पसन्द आयेंगी और भाग्य के बारे में कुछ जानकारी देंगी कि भाग्य किस प्रकार काम करता है।

एक कहानी इसमें नौर्स देशों[1] की लोक कथाओं के एक बड़े महत्वपूर्ण चरित्र बलडूर के बारे में हैं कि किस तरह से उसको मरने से बचाने के लिये उसकी मॉ सबसे दया की भीख मॉगती है पर नहीं बचा पाती। नौर्स देशों में पॉच देश आते हैं – फिनलैंड, नौर्वे, डेनमार्क, स्वीडन और आइसलैंड। दूसरी कहानी इसमें ग्रीस यानी यूनान के महाकाव्य इलियड के एक चरित्र अकिलिस की कहानी है। इस कहानी में भी अकिलिस की मॉ अपने बेटे को अमर बनाने की कोशिश करती है पर बेकार। सो जब जब जो जो होना होता है वह होता है। तीसरी कहानी इसमें ईरान के महाकवि फ़िरदौस के लिखे हुए एक महाकाव्य "शाहनामे" से ली गयी है जो भारत में बहुत कम जानी जाती है पर पश्चिम में इसका बहुत अधिक अध्ययन किया गया है।

इसके बाद तीन कहानियॉ इसमें भारत के महाकाव्य महाभारत से ली गयी है। एक दुर्योधन की कहानी है जिसमें दुर्योधन को मरने से बचाने के लिये उसकी मॉ गान्धारी क्या क्या नहीं करती पर जो होना था हो के रहा... । इसकी दूसरी कहानी राजा शिशुपाल की है जिसमें उसकी मॉ तो खुद भगवान से उसकी ज़िन्दगी की भीख मॉग लेती है। भगवान उसकी मॉ को एक शर्त पर उसको छोड़ने का वायदा करते हैं और वह वही शर्त तोड़ देता है। पर वह क्या करे? जो होना होता है उसको तो होना ही है... । इसकी तीसरी कहानी राजा परीक्षित की है कि किस प्रकार वह भी अपनी मौत से बचना चाहते थे पर दो दो साधन उनको मौत से नही बचा सके....

एक कहानी इसमें बौद्ध धर्म के चलाने वाले गौतम बुद्ध की है। इनके पिता इनको राजा बनाने की कोशिश में क्या क्या करते हैं पर उनकी सब कोशिशें बेकार। बुद्ध जी भिक्षु बन कर जंगल चले जाते हैं। फिर वही कि जब जब जो जो होना होता है उसे कोई नहीं रोक सकता।

इसके बाद एक ऐतिहासिक कहानी है – ज्योतिषी वराहमिहिर की। कि किस प्रकार उनकी भविष्यवाणी सच निकली और राजा राजकुमार को किसी प्रकार भी न बचा सका। और इसके बाद में कुछ लोक कथाऐं हैं।

---

[1] Norse or Nordic or Scandinavian countries are five in Europe continent situsted in its Northern part. They are Denmark, Finland, Norway, Sweden and Iceland (situated on the Western side of England). They are quite different from the rest of the European countries.

इन सब कहानियों में ये लोग या तो किसी ख़ास चीज़ से मारे गये हैं या फिर किसी ख़ास तरीके से मारे गये हैं या फिर जो वे नहीं होने देना चाहते हैं उसको रोकने के लिये उन्होंने लाख कोशिश की पर वे उसको रोक नहीं पाये हैं। सबका निचोड़ यही है कि जो होना होता है वह हो कर ही रहता है चाहे कोई उसको रोकने की कितनी भी कोशिश क्यों न करे ... ।

1 बलडूर की कहानी[2]

यह नौर्स देशों की एक बहुत ही मशहूर दंत कथा है। इसमें एक माँ अपने बेटे को न मरने देने के लिये दुनियाँ के सारे आदमी, जानवरों पशु पक्षियों और पौधों से प्रार्थना करती है कि वे उसके बेटे को नुकसान न पहुँचायें और सब उसकी बात मान भी लेते हैं पर फिर भी क्या हुआ...?

नौर्स देशों के देवताओं[3] के रहने की जगह यानी आसगार्ड बहुत सुन्दर जगह थी। वहाँ हर समय रोशनी रहती थी और देवता लोग अपनी ज़िन्दगी का सबसे अच्छा हिस्सा वहीं गुजारा करते थे।

वे लोग वहाँ कभी लेट जाते, कभी एक दूसरे की तारीफ करते और कभी अमर करने वाले सेब खा लेते जो वहीं बागीचे में उगते थे।

कभी कभी जब कोई देवता नीचे धरती की तरफ देखता तो उसको लगता कि उसकी दुनियाँ से बाहर भी लोग रहते हैं और बड़े साइज़ के लोग[4] भी रहते हैं पर वे अमर नहीं हैं।

---

[2] Story of Baldr – Adapted from the Web Site : http://www.tomthumb.org/426/how-loki-killed-baldr-stories-of-the-norse-gods/ and http://mythology.wikia.com/wiki/Balder
Read more Norse folktales and Norse myths in Hindi in the book "Norse Desh Ki Dant Kathayen" by Sushma Gupta available from hindifolktales@gmail.com as an e-book for free.

[3] Norse gods

[4] Humans and Giants

वे जितनी जल्दी पैदा होते थे उतनी ही जल्दी मर भी जाते थे। इसलिये वे देवता उनकी तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं दे पाते थे।

पर एक बार एक बड़ी दुख भरी घटना घटी। एक बार बड़े साइज़ के लोगों ने लोकी[5] को स्वर्ग में जहॉ वे लोग रहते थे एक दरार खोलने के लिये कहा गया ताकि वे वहॉ से अमर करने वाले सेब चुरा सकें।

अब देवताओं के बूढ़ा होने का और उनके बाल सफेद होने का समय भी आ गया था। सब देवताओं को लोकी पर विश्वास था कि लोकी ऐसा कभी नहीं करेगा कि वह सेबों की चोरी के लिये उन बड़े लोगों के लिये उस बागीचे में दरार खोल दे।

क्योंकि उसने दूसरे देवताओं से ऐसा न करने का वायदा किया था इसलिये वे सब इस दरार खोलने के बारे में उसकी तरफ से बिल्कुल बेफिक्र थे।

बलडूर[6] स्वर्ग का सबसे अच्छा देवता था। वह बहुत सुन्दर था और वहॉ का तारा कहलाता था। वह रोशनी का देवता था। वह अपनी पवित्रता, गुणों और सब अच्छी बातों के लिये मशहूर था।

[5] Loki is one of the Norse gods.

[6] Baldur (or Baldr) – is the son of Odin and Freya (Frigga). He is the brother of Hermod, Hoder and Thor.

और इस सबकी वजह से उसका चेहरा हमेशा धूप की तरह चमकता रहता था।

बलडूर की पत्नी का नाम नन्ना[7] है। उनका एक बेटा है जिसका नाम फ़ौरसेटी[8] है जो न्याय का देवता है।

बलडूर के पास सबसे बड़ा जहाज़ था जिसका नाम रिंगहौर्न[9] था। यह जाने पहचाने सब जहाज़ों में सबसे बड़ा जहाज़ था। इसका घर भी बहुत सुन्दर और चमकदार था जहॉ कोई बुराई और गन्दगी नहीं आ सकती थी।

अपनी इज़्ज़त और साहस के अलावा बलडूर केवल अपनी मौत के लिये ही ज़्यादा मशहूर है।

हालॉकि बलडूर सबको बहुत प्यारा था इसलिये किसी के लिये भी यह सोचना बहुत मुश्किल था कि कोई उसका बुरा भी सोच सकता था। पर फिर उसको कुछ ऐसे बुरे सपने आने लगे जिनमें वह अपनी बड़ी हिंसा वाली मौत देखता था।

एक दिन उसने अपनी मॉ फ्रिग[10] को इन सपनों के बारे में बताया तो उसकी मॉ दुनियॉ भर की यात्रा पर निकल पड़ी।

[7] Nanna is the wife of Baldur

[8] Forseti is the son of Baldur and is the god of Justice

[9] Ringhorn – the ship of Baldur. It is like Pushpak Vimaan of Raavan or Kuber.

[10] Frigg – mother of Baldur, sometimes known as Freya also.

वह दुनियॉ के हर ज़िन्दा आदमी, जानवर और पौधे से यह वायदा लेना चाहती थी कि वह उसके बेटे बलडूर को किसी तरह का कोई भी नुकसान नहीं पहुॅचायेगा।

इसके लिये वह दुनियॉ के सब ज़िन्दा आदमियों, जानवरों और पौधों के पास गयी और उनसे यह प्रार्थना की वे उसके बेटे को किसी तरह से भी नुकसान न पहुॅचायें। सबने उससे वायदा किया कि वे कभी उसके बेटे को कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।

देवता लोग उसकी इस कोशिश से बहुत प्रभावित हुए। बलडूर के अजेय होने की खुशी में और उसकी इज़्ज़त बढ़ाने के लिये उन्होंने एक खेल निकाला।

इस खेल में वे उसके ऊपर कोई भी हथियार फेंकते तो वह उसको बिना कोई नुकसान पहुॅचाये ही वापस आ जाता। देवता यह खेल खेलते और देख कर खुश और सन्तुष्ट होते कि कोई भी हथियार बलडूर को ज़रा सा भी नुकसान नहीं पहुॅचा पा रहा था।

पत्थर की बड़ी बड़ी चट्टानें उसके सिर पर फेंकी जातीं तो वे बजाय उसको कोई नुकसान पहुॅचाने के खुद ही सब चकनाचूर हो कर उसके सामने ही गिर पड़तीं।

लोहे के चक्र उस पर चलाये जाते तो वे अपने घेरे से बाहर निकल जाते। और अगर उसके ऊपर तीर चलाये जाते तो वे उसके पैरों में जा गिरते।

और अगर उस देवता को देख कर बलडूर मुस्कुरा देता जो उस पर यह सब हथियार चला रहा था तो वह उसका इनाम होता।

यह सब देख कर लोकी बहुत चिढ़ रहा था। हालॉकि जब भी यह खेल खेला जाता और कोई दूसरा उसको देखता होता तो वह हॅस हॅस कर खूब ताली बजाता। इससे दूसरे को ऐसा लगता जैसे कि वह खेल उसको बहुत अच्छा लग रहा था पर अन्दर ही अन्दर वह बहुत ही कुढ़ रहा होता।

यह सच था कि लोकी एक देवता था पर वह एक बड़े साइज़ के आदमी का बेटा भी था और उसकी पत्नी भी बड़े साइज़[11] की स्त्री थी। इसलिये देवताओं से ज़्यादा उसको मालूम था कि किसी भी बात को ज़रा सा भी इधर उधर करने की कितनी कीमत थी।

बस उसको एक विचार आया। उसने सफाई करने वाली एक बुढ़िया का रूप रखा और बलडूर की मॉ फ्रिग से बतियाने चला गया।

"आपका बेटा कितना सुन्दर और ताकतवर है।"

"हॉ, वह तो मेरी ही नहीं बल्कि सबकी जान है।"

"और उसको तो कोई जीत भी नहीं सकता।"

"हॉ, दुनियॉ में चाहे वह धरती पर हो या स्वर्ग में कोई उसको न तो जीत सकता है और न ही कोई नुकसान पहुॅचा सकता है।"

बुढ़िया ने पूछा — "पर यह सब हुआ कैसे?"

[11] Translated for the word "Giantess"

फ़िग शान से बोली — "क्योंकि मैंने हर ज़िन्दा आदमी और पौधे से और यहाँ तक कि हर बेजान चीज़ से भी यह वायदा करा लिया है कि वे मेरे बेटे को किसी भी तरह का कोई भी नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।"

बुढ़िया ने पक्का करने के लिये उससे फिर से पूछा — "क्या आपको पूरा यकीन है कि आपने सबसे यह वायदा ले लिया है?"

अब फ़िग कुछ सोच में पड़ गयी और बोली — "हाँ ले तो लिया है पर...."

"पर क्या....?"

"पर एक पौधा था, बहुत छोटा सा – मिसिल्टो[12]। शायद यही नाम था उसका। पर वह इतना छोटा था कि मैंने उससे यह वायदा लेना जरूरी नहीं समझा।"

यह सुन कर लोकी की आँखों में चमक आ गयी। वह वहाँ से तुरन्त उठा और धरती की तरफ चल दिया। वहाँ से वह मिसिल्टो का एक छोटा सा टुकड़ा स्वर्ग ले आया।

[12] Mistiltoe, pronounced as "Misilto", is a fungus type plant. These plants attach to and penetrate the branches of a tree or shrub by a structure called the haustorium, through which they absorb water and nutrients from the host plant. That is why it is called parasite. See the picture – the white fungus is Mistiltoe.

स्वर्ग में आ कर उसने देखा तो देवता लोग तो बलडूर पर कई तरह के हथियार फेंकते फेंकते ही नहीं थक रहे थे बल्कि उनको उसमें बड़ा आनन्द आ रहा था।

पर वहॉ एक देवता ऐसा भी था, एक अन्धा देवता, जो एक तरफ खड़ा था और बस दूसरों के आनन्द को केवल सुन सुन कर ही आनन्द ले रहा था। वह था बलडूर का अन्धा भाई होडूर[13]।

लोकी उसकी तरफ धीरे धीरे बढ़ा और उसने होडूर से पूछा — "दूसरे देवताओं की तरह से तुम भी बलडूर का आदर क्यों नहीं कर रहे?"

होडूर ने एक लम्बी सॉस ली — "लोकी, तुम तो जानते हो कि मैं अन्धा हूँ और फिर मेरे पास कोई हथियार भी तो नहीं है।"

"मगर यह तो अफसोस की कोई बात न हुई होडूर। तुम भी दूसरे देवताओं की तरह उसका आदर कर सकते हो।"

"वह कैसे?"

"मैं तुम्हारी सहायता करूँगा होडूर। लो तुम यह छोटा सा पौधा लो और इसको तुम हथियार की जगह इस्तेमाल कर सकते हो।"

यह कह कर लोकी ने होडूर को मिसिल्टो पौधे का वह टुकड़ा दे दिया जो वह धरती से अभी अभी स्वर्ग ले कर आया था।

यह वही पौधा था जिस पौधे से फ्रिग ने बलडूर को छोड़ देने की प्रार्थना नहीं की थी और जिसे वह धरती से केवल इसी लिये ले

[13] Hodur – He was the blind brother of Baldur – Odin and Freya's another son.

कर आया था ताकि वह बलडूर को मार सके क्योंकि वही एक पौधा था जो उसको मार सकता था।

बेचारे होडूर को क्या मालूम था कि लोकी के दिये हुए उस टुकड़े से वह अपने भाई की हत्या करने जा रहा है। उसने मिसिल्टो का वह टुकड़ा लोकी से लिया और खुशी से बलडूर को यह सोच कर फेंक कर मारा कि वह भी बलडूर का आदर कर रहा था।

पर यह क्या? वह टुकड़ा तो बलडूर की गर्दन में जा कर लगा और उस टुकड़े ने उसको तुरन्त ही मार दिया।

होडूर को जब पता चला कि उसके हथियार से तो उसका भाई मर गया तो वह तो हक्का बक्का रह गया पर वह क्या कर सकता था। उस बेचारे को तो कुछ पता ही नहीं था।

बलडूर के मरने का सब देवताओं को बड़ा दुख हुआ। ओडिन ने हरमोड[14] को मौत की देवी हीला के पास भेजा कि वह बलडूर की ज़िन्दगी वापस कर दे। तो उसने जवाब दिया कि वह उसको तभी ज़िन्दा कर सकती है जब दुनियॉ के सारे मरे और ज़िन्दा लोग उसके लिये रोयें।

लोकी तब तक जादूगरनी थौक[15] बन चुका था। केवल वही एक था जो बलडूर के लिये नहीं रोया। इसलिये बलडूर हीला के पास ही रहा।

[14] Hermod – another son of Odin and Freya
[15] Thokk

अब देवताओं ने बलडूर के अन्तिम संस्कार की तैयारी की। उन्होंने उसके शरीर को लाल रंग के कपड़े में लपेट कर उसके जहाज रिंगहौर्न में रख दिया जैसे किसी मरे आदमी के शरीर को लोग चिता पर रखते हैं।

उसकी चिता पर उसका घोड़ा और उसका और सामान भी रख दिया। उसके बाद वह जहाज समुद्र में धकेल दिया गया।

उसके पास ही उसकी चिता पर उसकी पत्नी नन्ना थी क्योंकि बलडूर के मरने के बाद में वह भी दिल के दर्द से मर गयी थी।

बलडूर को मरता देख कर लोकी अपनी जीत की खुशी में लोट पोट हो गया पर समय रहते ही वह सॅभल गया और वहॉ से भाग निकला। पर वह भागने नही पाया देवताओं ने उस चालाक धोखेबाज देवता को रास्ते में ही पकड़ लिया।

2 अकिलिस की एड़ी[16]

अकिलिस की कहानी हमने यूनान यानी ग्रीस देश के साहित्य से ली है। अकिलिस ग्रीस के महाकवि होमर के महाकाव्य इलियड[17] का एक मुख्य पात्र है। यह ट्रोजन की लड़ाई[18] का हीरो था। इसकी मॉ थैटिस एक परी या देवी[19] थी और इसका पिता पैल्यूस मिरमीडोन्स का राजा[20] था।

यह कहानी अकिलिस की मौत के बारे में है जो इलियड में तो नहीं दी हुई है पर और दूसरे स्रोत बताते हैं कि अकिलिस ट्रोजन की लड़ाई के आखीर में पैरिस के हाथों मारा गया था। पैरिस ने इसकी एड़ी में अपना तीर मारा था इसी से इसकी मौत हुई।

बच्चो तुम लोगों को यह सुन कर बड़ा अजीब लग रहा होगा कि उसको मारने के लिये पेरिस ने उसकी एड़ी में ही अपना तीर क्यों मारा।

---

[16] Achilles' Heel

[17] Achilles was the hero of Greek poet Homer's epic Iliad. It is the most famous narrative for Achilles' deeds in the Trojan War.

[18] Trojan War – it occurred circa 1250 BC and was one of the final battles between human and immortals.

[19] Thetis – a nymph. Nymph means Goddess or Apsaraa. Greeks believe that Nymphs lived in forests and water bodies.

[20] Peleus was the King of Myrmidons

किसी को जान से मारने के लिये साधारणतया लोग छाती में तीर मारते हैं, या फिर सिर में तीर मारते हैं पर पेरिस ने अपना तीर उसकी एड़ी में मारा – क्यों? यही इस कहानी का मुख्य विषय है।

हम यह कहानी थेटिस परी से शुरू करते हैं। थेटिस परी का घर समुद्र में था। दो ग्रीक देवता ज्यूस और पोसीडौन[21] थेटिस से शादी करना चाहते थे।

पर प्रोमेथ्यूस[22] ने ज्यूस को चेतावनी दी कि थेटिस का जो बेटा होगा वह अपने बाप से भी बढ़ कर होगा इसलिये दोनों देवताओं में से किसी को भी थेटिस से शादी नहीं करनी चाहिये। थेटिस को पैल्यूस[23] से ही शादी कर लेनी चाहिये। सो थेटिस ने पैल्यूस से ही शादी कर ली।

पैल्यूस एक बहुत अच्छा पति था और एक बहुत अच्छा पिता था पर वह देवियों आदि के रहन सहन से बिल्कुल ही अनजान था।

पैल्यूस और थेटिस को यह बेटा इस शर्त पर दिया गया था कि उनका यह बेटा लड़ाई में मारा जायेगा और इस तरह अपनी मॉ को बहुत दुखी करेगा। पर थेटिस चाहती थी कि उसके बेटे को न तो कोई जीत सके और न ही कोई मार सके।

इसके आगे यह कहानी दो तरीके से कही जाती है। कुछ का कहना है कि थेटिस ने अकिलिस के सारे शरीर पर अमृत मला और

[21] Zeus and Poseidon – two Greek gods

[22] Prometheus – was a Titan – Titan was a powerful race of Greece.

[23] Peleus – husband of Thetis Nymph and the father of Achilles.

फिर आग के ऊपर लटकाये रखा ताकि उसके सारे सांसारिक लक्षण जल जायें।

पर जब उसके पिता पैल्यूस ने यह देखा तो वह तो सकते में आ गया। उसने तुरन्त ही अपने बेटे को आग के ऊपर से खींच लिया और उसको पालने के लिये चेरों[24] को दे दिया। फिर उसी ने उसको पाला पोसा और पढ़ाया लिखाया।

गुस्से में आ कर पैल्यूस ने थेटिस को अपने घर से निकाल दिया तो थेटिस ने भी अकिलिस को फर्श पर फेंका और अपने पति को यह बताये बिना ही अपने घर समुद्र में चली गयी कि इस रस्म से उनका अकिलिस अमर हो चुका था।

कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि थेटिस ने अपने बेटे को अमर बनाने के लिये एक पवित्र नदी स्टिक्स[25] में उसकी एड़ी पकड़ कर उसको उलटा लटका दिया था। क्योंकि उन दिनों ऐसा विश्वास किया जाता था कि जो कोई भी स्टिक्स नदी के पानी को छूता था वह अमर हो जाता था।

[24] Cheron – name of the person who brought up Achilles

[25] Styx River – a sacred river in Greece

पर क्योंकि उसकी मॉ ने उसको एड़ी से पकड़ कर पानी में लटकाया था इसलिये उसकी एड़ी उस पानी को नही छू सकी और उसी की वजह से उसकी वह एड़ी सांसारिक रह गयी।[26]

इसी लिये उसका सारा शरीर तो अमर हो गया पर एड़ी अमर नहीं हो सकी और पेरिस को उसको मारने के लिये उसकी एड़ी में तीर मारना पड़ा।

यह दूसरी कहानी ज़्यादा सही लगती है क्योंकि उसकी एड़ी स्टिक्स नदी में डुबोने से रह गयी तभी तो उसकी एड़ी कमजोर रह गयी और तभी तो उसमें तीर मारने से वह मर गया।

ट्रोजन की लड़ाई और अकिलिस की मौत

क्योंकि देवी ऐरिस[27] थेटिस और पैल्यूस की शादी में नहीं बुलायी गयी थी इसलिये वह बहुत नाराज थी। सो इस बीच उसने इसमें एक चाल खेली।

एक बार राजकुमार पैरिस के दरबार में तीन देवियॉ खड़ी थीं – अफ्रोडाइट, हीरा और अथीना[28]। तो ऐरिस ने गुस्से में आ कर उनकी तरफ एक सोने का सेब फेंका जिस पर लिखा था "सबसे सुन्दर देवी के लिये"।

[26] It is in the same way as Gandhari's sight made Duryodhan's whole body of iron except the covered part with cloth.

[27] Eris – a goddess of Discord

[28] Aphrodite, Hera and Athena – three goddesses. Hera was the wife and sister of Zeus.

तो तीनों देवियॉ यह सोच कर उसे बीच में ही पकड़ने के लिये दौड़ीं कि वह इनाम शायद उनके लिये था। जब झगड़ा ज़्यादा बढ़ा तो ट्रौय के राजकुमार पैरिस को इसका फैसला करने के लिये बुलाया गया कि यह सोने का सेब किस देवी को मिलना चाहिये।

देवी अफ्रोडाइट ने पैरिस से पहले ही स्पार्टा के राजा मैनैलौस[29] की पत्नी हेलेन देने का वायदा किया था।

सो यह इनाम तो पैरिस के लिये बहुत अच्छा मौका था सो पैरिस ने अफ्रोडाइट को सबसे सुन्दर देवी घोषित कर दिया और वह सोने का सेब अफ्रोडाइट को दे दिया जिससे हीरा और अथीना दोनों देवियॉ नाराज हो गयीं।

पैरिस को अपने इस लालच और इच्छा की कीमत बाद में अपने परिवार की ज़िन्दगी दे कर और ट्रौय को नष्ट भ्रष्ट होते देख कर चुकानी पड़ी थी।

पैरिस एक बार स्पार्टा के राजा मैनैलौस के घर गया तो उसने पैरिस का बहुत अच्छा स्वागत किया। उस समय मैनैलौस को किसी के मरने में जाना था तो वह तो उसके मरने में चला गया और अपनी पत्नी को घर पर ही छोड़ गया।

इससे पैरिस को राजा मैनैलौस की पत्नी हेलेन के साथ भागने का अच्छा मौका मिल गया और वे दोनों पानी के जहाज से ट्रौय भाग गये।

[29] Menelaus, the King of Sparta

जब मैनैलौस वापस लौटा तो उसे पता चला कि उसकी पत्नी हेलेन तो पैरिस के साथ ट्रौय भाग गयी है तो उसने ट्रौय पर चढ़ाई कर दी।[30]

हर आदमी इस लड़ाई के बारे कुछ कुछ सोच रहा था कि एक भविष्य का हाल बताने वाले ने मैनैलौस से कहा कि यह लड़ाई तुम हार जाओगे जब तक कि अकिलिस तुम्हारे साथ लड़ने नहीं आयेगा। इसलिये मैनैलौस ने अपनी इस लड़ाई के नवें साल में अकिलिस को लड़ने के लिये बुलाया।

ट्रोजन की यह लड़ाई दस साल तक चली थी। अकिलिस नवें साल में स्पार्टा के मैनैलौस की तरफ से यह लड़ाई लड़ने के लिये आया था। बाद में मैनैलौस और पैरिस के आपस में अकेले की लड़ाई भी हुई। उस समय पैरिस मरने ही वाला था कि देवी ने उसे बचा लिया।

अकिलिस की मॉ थेटिस ने फिर एक देवी से अकिलिस के लिये एक जिरहबख्तर[31] तैयार करने की प्रार्थना की जो उसकी रक्षा कर सके। सो उसको पहन कर अकिलिस फिर से सबको मार गिराने लगा।

उधर पैरिस ने अपोलो देवता की सहायता से अकिलिस की एड़ी में तीर मार कर उसकी हत्या कर दी।

[30] This war is famous as Trojan War in Greek Mythology and has been described at many places including Homer's Iliad and Odyssey.

[31] Translated for the word "Armor"

उसके शरीर का यही एक हिस्सा था जो उस पवित्र पानी से अनछुआ रह गया था। और इसी लिये कमजोर भी रह गया था। पैरिस का तीर वहीं काम कर सकता था सो उसने उसके उसी जगह तीर मार कर उसको मार दिया।

अकिलिस की मॉ ने उसको बचाने की बहुत कोशिश की पर जो होना था सो तो हो के रहा। उसको तो मरना ही था सो उसका सारा शरीर अमर होने पर भी उसकी एड़ी कमजोर रह गयी और उसी एड़ी में तीर मारने से वह मर गया।

उसकी मॉ की सारी कोशिशें भी उसको न बचा सकीं। जैसा जब जब होना होता है वैसा तब तब होता हैं उसे कोई रोक नहीं सकता...

3 दुर्योधन की कहानी

यह भारत देश की एक बहुत ही मशहूर ऐतिहासिक कथा है और यूनान देश की "अकिलिस की एड़ी" जैसी ही है।

भारत की महाभारत की लड़ाई को तो कौन नहीं जानता। भगवान कृष्ण और उनकी गीता को भी कौन नहीं जानता। यह गीता भगवान कृष्ण ने इसी महाभारत में अपनी बुआ के बेटे और अपने दोस्त अर्जुन से कही थी।

गीता एक ऐसी किताब है जो दुनियॉ भर में पढ़ी और मानी जाती है और एक सौ पचास से भी ज़्यादा भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

महाभारत की लड़ाई दो सौतेले भाइयों के बच्चों की राज्य के लिये लड़ाई की कहानी है – धृतराष्ट्र और पांडु के बच्चों की लड़ाई की कहानी। शुरू शुरू में राजा शान्तनु हस्तिनापुर के राजा थे। उनके तीन बेटे थे – भीष्म, चित्रांगद और विचित्रवीर्य।

भीष्म ने राजगद्दी पर बैठने से मना कर दिया और उन्होंने शादी भी नहीं की। चित्रांगद राजगद्दी पर बैठने के कुछ दिनों बाद ही एक लड़ाई में मारे गये। सो आखीर में विचित्रवीर्य को राजा बना दिया गया।

विचित्रवीर्य की दो रानियॉ थी। दोनों के एक एक बेटा था – बड़ी रानी से अन्धा धृतराष्ट्र और छोटी रानी से बीमार पांडु। इनमें धृतराष्ट्र बड़े थे और पांडु छोटे थे।

हालॉकि बड़े होने के नाते धृतराष्ट्र को राजा होना चाहिये था पर क्योंकि धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे इसलिये पांडु को राजा बना दिया गया।

धृतराष्ट्र ने पांडु को बाहर से तो राजा स्वीकार कर लिया पर मन ही मन वह उसको राजा स्वीकार नहीं कर सके। वह हमेशा यही सोचते रहते कि अगर वह अन्धे न होते तो आज वही राजा होते।

अब इसमें वह खुद तो कुछ कर नहीं सकते थे सो अब वह अपने बच्चों के आने का इन्तजार करने लगे। उनको यह पूरी उम्मीद थी कि उनके बच्चे पांडु के बच्चों से बड़े होंगे।

क्योंकि वह खुद भी पांडु से बड़े थे और उनकी शादी भी उनसे पहले हुई थी सो अगर उनके पांडु से पहले बेटा हो जाये तो कम से कम उनका बेटा ही राजा बन जायेगा। पर ऐसा न हो सका।

समय आने पर धृतराष्ट्र के सौ और पांडु के पॉच बेटे हुए। धृतराष्ट्र के सौ बेटे कौरव कहलाये। पांडु के पॉच बेटे पांडव कहलाये।

पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। पांडु के एक भी नहीं दो दो बेटे धृतराष्ट्र के सबसे बड़े बेटे दुर्योधन से बड़े थे – युधिष्ठिर और भीम।

फिर भी धृतराष्ट्र खुद को और अपने सबसे बड़े बेटे दुर्योधन को यह कह कर बड़ा करते रहे कि क्योंकि वह कुरु परिवार के सबसे बड़े बेटे का सबसे बड़ा बेटा है इसलिये यह राज्य उसी का है।

यह बीज दुर्योधन के दिमाग में इतना गहरा और मजबूती से बैठा दिया गया कि वह किसी और को हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठा सोच भी नहीं सकता था।

इसी लिये दुर्योधन और उसका छोटा भाई दुशासन अपने चाचा पांडु के बेटे पॉचों पांडवों से बहुत जलते थे और उनको उनके हिस्से का राज्य नहीं देना चाहते थे।

पांडवों को केवल नीचा दिखाने के लिये ही नहीं बल्कि उनको मारने के लिये भी कौरवों ने बहुत तरकीबें की पर पांडवों की अच्छी किस्मत कि वे सब मुसीबतों से बच निकले।

पांडवों को हस्तिनापुर में देख कर दुर्योधन के मन में युधिष्ठिर के लिये इतनी ज़्यादा जलन पैदा हो गयी कि वह पांडु के पॉचों बेटों को जान से ही मारने की योजनाऐं बनाने लगा।

उसने कई बार कोशिश भी की पर कुछ तो पांडवों की किस्मत अच्छी थी और कुछ वे सावधान थे सो वे बचते रहे। ऐसे ही माहौल में दोनों के बच्चे बड़े होते जा रहे थे।

अब हस्तिनापुर का युवराज[32] घोषित करने का समय आ गया था तो सबका कहना था कि क्योंकि पांडु राजा थे इसलिये उनके मरने के बाद उनके सबसे बड़े बेटे युधिष्ठिर को ही युवराज घोषित करना चाहिये पर धृतराष्ट्र और उनका बेटा दुर्योधन इसके लिये कतई तैयार नहीं थे।

फिर भी सबकी राय के अनुसार पांडु के सबसे बड़े बेटे युधिष्ठिर को ही युवराज घोषित कर दिया गया।

इस बीच पांडवों की शादी द्रौपदी से हो गयी। अब दुर्योधन ने साफ साफ अपने पिता धृतराष्ट्र से कह दिया — "जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं पिता जी उसी तरह से एक राज्य में दो राजा नहीं रह सकते। हस्तिनापुर मेरा है और मैं उसका राजा हूँ।

अगर आपको युधिष्ठिर को राज्य देना ही है तो हस्तिनापुर का बँटवारा कर दें। और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो मैं अपनी जान दे दूँगा।"

धृतराष्ट्र दुर्योधन को बहुत प्यार करते थे। उसकी जान देने की बात तो वह सोच भी नहीं सकते थे सो हस्तिनापुर का बँटवारा हो गया। दुर्योधन हस्तिनापुर का राजा हो गया और पांडवों को खांडवप्रस्थ दे दिया गया।

खांडवप्रस्थ एक उजाड़ जगह थी। पांडवों ने मेहनत कर के उसको स्वर्ग बना लिया और उसका नाम इन्द्रप्रस्थ रख दिया। अपने

[32] Crown King

आस पास के देशों को जीत कर उन्होंने अपनी सम्पत्ति भी खूब बढ़ा ली और फिर श्रीकृष्ण की सलाह पर उन्होंने वहॉ राजसूय यज्ञ किया।

पर जब जब जो जो होना होता है वह तो तभी तभी होता है। उसे कोई नहीं रोक सकता, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

इस यज्ञ में बहुत सारे राजाओं और सब रिश्तेदारों को बुलाया गया। हस्तिनापुर से भी सभी लोग गये सिवाय धृतराष्ट्र के।

पहले तो दुर्योधन को युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ करना ही अच्छा नहीं लग रहा था पर वहॉ जा कर जब उसने युधिष्ठिर की सम्पत्ति, महल और शान शौकत देखे तो उसकी जलन तो और कई गुना बढ़ गयी।

इस यज्ञ में एक और बुरी घटना घट गयी। मय नाम के दानव ने तीसरे पांडव अर्जुन के लिये अपनी जान बचाने के लिये अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये युधिष्ठिर के लिये एक राज सभा बनायी।

यह राज सभा बहुत ही विचित्र थी। इसमें जहॉ पानी था वहॉ की जमीन सूखी दिखायी देती थी और जहॉ दरवाजा था वहॉ दीवार दिखायी देती थी।

जब यज्ञ समाप्त हो गया और सब लोग जाने लगे तो युधिष्ठिर ने दुर्योधन को कुछ और समय के लिये रोक लिया और उसको अपनी राज सभा देखने के लिये कहा।

दुर्योधन रुक गया और युधिष्ठिर की राज सभा देखने चला गया। वह वहॉ अकेला ही घूम रहा था कि एक जगह उसको लगा कि वहॉ पानी है सो उसने अपने कपड़े ऊपर कर लिये ताकि वे भीग न जायें। पर जब उसको पता चला कि वहॉ तो सूखी जमीन थी तो वह बहुत शर्मिन्दा हुआ।

इसी तरह से एक जगह उसको लगा कि वहॉ तो सूखी जमीन है तो वह वहॉ से ऐसे ही जा रहा था कि वह पानी में गिर पड़ा और उसके सारे कपड़े गीले हो गये।

इत्तफाक से द्रौपदी बाहर छज्जे पर खड़ी थी। यह देख कर वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी और बोली — "अन्धे का बेटा तो अन्धा ही होता है।" यह सुन कर दुर्योधन के तन बदन में आग लग गयी।

उसके बाद इन्द्रप्रस्थ से वह चला तो आया पर इस बेइज़्ज़ती की आग में बराबर जलता रहा। कुछ दिनों बाद उसने अपने मामा शकुनि की सहायता से पांडवों को नीचा दिखाने की एक तरकीब सोची। उसके शकुनि मामा जुए का पॉसा बहुत अच्छा फेंकते थे सो उसने युधिष्ठिर को चौसर[33] यानी जुआ खेलने का न्यौता भेजा।

उन दिनों क्षत्रिय लोग साधारणतया जुआ खेलने को मना नहीं करते थे सो युधिष्ठिर को उसका यह न्यौता स्वीकार करना पड़ा।

[33] Chausar is kind of dice game played in ancient India

इन्द्रप्रस्थ से पॉचों पांडव, द्रौपदी और पांडवों की मॉ कुन्ती सब हस्तिनापुर आये। जहॉ जुआ खेला जाने वाला था वहॉ परिवार के सभी बड़े और गुरू लोग बैठे हुए थे।

जुए का खेल शुरू हुआ। दुर्योधन ने चालाकी से युधिष्ठिर को इस बात पर राजी कर लिया कि उसकी तरफ से उसका पॉसा उसके मामा ही फेंकेंगे।

अब क्योंकि शकुनि पॉसा बहुत अच्छा फेंकता था सारे दॉव दुर्योधन जीतता चला गया। इन सारे दॉवों में उसने युधिष्ठिर की सारा धन, सारी सम्पत्ति, उनका राज्य, नौकर चाकर, यहॉ तक कि उनके चारों भाई भी जीत लिये।

आखीर में युधिष्ठिर बोले — "अब तो मेरे पास दॉव पर लगाने के लिये कुछ भी नहीं है।"

पर दुर्योधन का उद्देश्य तो अभी पूरा नहीं हुआ था सो वह तुरन्त बोला — "अभी तो वह द्रौपदी बची है।"

युधिष्ठिर ने एक बार सोचा और फिर उसको भी दॉव पर लगा दिया। वह वह दॉव भी हार गये और इस तरह से अब द्रौपदी भी दुर्योधन की हो गयी।

दुर्योधन ने द्रौपदी को राजभवन से जुआ खेलने वाली जगह बुलवाया। द्रौपदी ने मना किया तो दुर्योधन का छोटा भाई दुशासन उसको बालों से पकड़ कर खींचता हुआ वहॉ ले आया।

दुर्योधन ने द्रौपदी को अपनी दॉयी जॉघ पर बैठने के लिये कहा और फिर अपने भाई को आज्ञा दी कि वह उस भरी सभा में द्रौपदी के सारे कपड़े उतार दे।

इस समय दूसरा पांडव भीम द्रौपदी का यह अपमान नहीं सह सका और उसने उसी समय प्रतिज्ञा की कि वह लड़ाई में धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को मार देगा और दुर्योधन की वह जॉघ तोड़ देगा जिस पर उसने द्रौपदी को बैठने के लिये कहा था।

दुर्योधन और भीम दोनों ही लड़ने के लिये गदा हथियार का इस्तेमाल करते थे। गदा से लड़ने में नियम के अनुसार गदा से जॉघ पर वार नहीं किया जाता था। इस तरह भीम की प्रतिज्ञा और दोनों के हथियार गदा आपस में मेल नहीं खाते थे।

पर दुर्योधन के पिता धृतराष्ट्र को विश्वास था कि भीम नियम के खिलाफ गदा का इस्तेमाल दुर्योधन की जॉघ पर नहीं कर सकता क्योंकि वह सभी पांडवों को धर्म पालन करने वाला मानते थे।

जबकि दूसरी तरफ दुर्योधन की मॉ गान्धारी हमेशा ही यह कहती थी कि "जब भीम ने यह प्रतिज्ञा की है तो कुछ सोच समझ कर ही की है क्योंकि इतनी छोटी सी बात तो वह भी जानता है कि गदा से लड़ने में दुश्मन की जॉघ पर गदा से वार नहीं किया जाता।" सो वह उससे बहुत डरती थी।

यह महाभारत की लड़ाई अठारह दिन चली। दुर्योधन के पास बहुत बड़े बड़े वीर थे। वे उसको सत्रह दिन तक बचाये रहे पर

अठारहवें दिन जब लड़ने के लिये केवल वह अकेला ही बच रहा तो गान्धारी को चिन्ता हुई।

धृतराष्ट्र जन्म से ही अन्धे थे और गान्धारी बहुत सुन्दर थी। वह शिव की भक्त भी थी। जब गांधारी की शादी धृतराष्ट्र से हुई तो उसने यह सोचते हुए कि "जिस दुनियॉ को उसका पति नहीं देख सकता उस दुनियॉ को देखने का उसको भी कोई अधिकार नहीं है।" अपनी ऑखों पर हमेशा के लिये पट्टी बॉध ली थी।

उसके सौ बेटे भी हो गये थे पर उसने किसी का चेहरा तक नहीं देखा था। फिर भी वह अपने सबसे बड़े बेटे दुर्योधन को बहुत प्यार करती थी। खास कर के जबसे भीम ने उसकी जॉघ तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी तबसे वह उसके बारे में बहुत चिन्तित भी रहती थी।

सो लड़ाई के सत्रहवें दिन रात को जब दुर्योधन लड़ाई के मैदान में अकेला रह गया तो मॉ का प्यार अपनी हद पार कर गया। वह भीम की प्रतिज्ञा याद कर के बहुत डर गयी।

सो गांधारी ने दुर्योधन को रात को ही अपने महल में बुला भेजा और उससे कहा — "बेटा, आज मुझे लगता है कि भीम का अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का समय आ गया है। तुम जा कर गंगा नदी में नहा आओ और तुरन्त मेरे पास आओ। और देखो मेरे पास बिना कोई कपड़ा पहने ही आना।

आज मैं अपनी तपस्या की सारी ताकत तुमको दे कर तुम्हें बचाना चाहती हूॅ। आज मैं पहली और आखिरी बार अपनी इन

ऑखों पर से यह पट्टी हटा कर तुमको जी भर कर देखने वाली हूँ।"

दुर्योधन यह सुन कर हँसा और बोला — "माँ, तुम अपनी ताकत दोगी मुझे? जब इतने बड़े बड़े वीर मारे गये तो तुम्हारी ताकत अब इस राज्य को क्या बचायेगी?"

गान्धारी को दुर्योधन का यह ताना अच्छा नहीं लगा पर फिर भी वह अपने गुस्से को पीते हुए बोली — "तुम्हारे अन्दर यही तो कमी है कि तुम किसी की सुनते ही नहीं हो। जाओ और जो मैं कहती हूँ वह करो। और याद रखना कि मेरे सामने बिना कपड़ों के ही आना। तुम स्त्री की ताकत को नहीं जानते।"

"क्या? बिना कपड़ों के? माँ मैं अब इतना छोटा बच्चा नहीं हूँ जो मैं तुम्हारे सामने बिना कपड़े पहिने आऊँ। मैं अब बड़ा हो गया हूँ। तुम्हारे सामने मैं अब बिना कपड़ों के कैसे आ सकता हूँ?"

"बेटे, माँ के सामने बिना कपड़ों के आने में कोई शर्म नहीं होती। अब जाओ और जल्दी से गंगा नहा कर मेरे पास आ जाओ।"

और दुर्योधन वहाँ से गंगा नहाने चला गया।

X X X X X X X

उधर श्रीकृष्ण को उनके दूत ने खबर दी कि गांधारी ने दुर्योधन को गंगा नहाने भेजा है।

"इस समय रात को?"

"जी हॉ अभी इसी समय।"

श्रीकृष्ण गांधारी की ताकत को जानते थे। वह ताड़ गये कि जरूर ही कुछ गड़बड़ घोटाला है। वह तुरन्त ही दुर्योधन से मिलने के लिये चल दिये।

जब दुर्योधन गंगा नहा कर गांधारी के महल की तरफ जा रहा था तो रास्ते में उसको श्रीकृष्ण मिल गये।

श्रीकृष्ण ने पूछा — "अरे दुर्योधन, इतनी रात गये तुम कहॉ से आ रहे हो?"

"मैं गंगा नहा कर आ रहा हूँ। मॉ ने मुझे कहा है कि मैं गंगा नहा कर उनके सामने बिना कपड़ों के जाऊँ।"

"क्या? तुम इतने बड़े हो कर मॉ के सामने बिना कपड़ों के जाओगे?"

दुर्योधन ने लापरवाही से कहा — "मैंने भी मॉ से ऐसा ही कहा था तो मॉ ने कहा कि मॉ के सामने बिना कपड़े पहन कर जाने में शर्म कैसी? सो मॉ ने ऐसा ही कहा है।"

श्रीकृष्ण बोले — "वह तो ठीक है पर तुमको तो सोचना चाहिये कि इतने बड़े हो कर तुम मॉ के सामने बिना कपड़ों के कैसे

जाओगे। यह अच्छा लगता है क्या? बचपन की बात दूसरी थी पर अब तो तुम बड़े हो।"

"क्या करूँ। माँ का ऐसा ही कहना है।"

श्रीकृष्ण बोले — "तो ऐसा करो। कम से कम कमर के नीचे और घुटनों के ऊपर तक एक कपड़ा बाँध लो। तब चले जाना।"

उस बेवकूफ लापरवाह दुर्योधन की समझ में उनकी बात आ गयी और गांधारी की बात न मानते हुए उसने गांधारी के सामने जाने से पहले घुटनों से ऊँचा एक कपड़ा अपनी कमर में बाँध लिया।

जब वह गांधारी के सामने पहुँचा तो गांधारी ने अपनी आँखों की पट्टी हटाने से पहले दुर्योधन से पूछ कर पक्का किया — "बेटे, तुम गंगा नहा आये?"

"हाँ जी।"

"और तुमने कोई कपड़ा भी नहीं पहन रखा?"

"नहीं माँ।"

"अच्छा तो अब मैं अपनी आँखें खोलती हूँ।" कह कर उसने बहुत धीरे धीरे अपनी आँखें खोलीं।

उसकी आँखों में से एक चमक निकली और उस रोशनी में नहा कर दुर्योधन का सारा शरीर वज्र का हो गया।

कुछ पल बाद जब गांधारी सामान्य रूप से देखने के लायक हुई तो उसने देखा कि दुर्योधन ने तो कमर से नीचे कपड़ा पहन रखा था।

वह अपना सिर पीटते हुए बोली — "बेटे यह क्या? मैंने तो तुमसे कहा था कि तुम मेरे सामने बिना कपड़ों के आना। अब मेरे देखने की ताकत से तुम्हारे शरीर का वह हिस्सा तो वज्र का हो गया जो बिना कपड़ों के था पर वह हिस्सा मुलायम रह गया जो कपड़े से ढका हुआ था।

अब तो भगवान खुद भी आ जायें तो वह भी तुमको भीम के वार से नहीं बचा सकते। तुमने यह छोटा सा कपड़ा पहन कर मेरी ज़िन्दगी भर की सारी पूजा बेकार कर दी।

तुम अपनी आदत से बाज़ नहीं आये। कम से कम इस आखिरी समय में तो तुमने अपने बड़ों का कहना मान लिया होता। अब भीम तुम्हारी जॉघ तोड़े बिना नहीं रहेगा। मैंने अपनी ज़िन्दगी भर की कमाई, अपनी सारी ताकत तुम्हारे ऊपर लगा दी थी पर...।"

इतना कह कर वह बहुत देर तक रोती रही। दुर्योधन ने एक बार कहा भी कि "मैं दोबारा तुम्हारे सामने बिना कपड़ों के आ जाता हूँ। पर मॉ भीम के साथ मेरी गदा की लड़ाई तो होगी और गदा के

नियमों के अनुसार वह मेरी जॉघ पर गदा से वार नहीं कर सकते। तुम बेकार ही चिन्ता करती हो।"

पर गांधारी बोली — "बेटे, पहली बात तो यह है कि मैं कोई जादूगरनी नहीं हूँ जो मैं दोबारा तुम्हारे ऊपर जादू कर दूँगी। वह मेरी जीवन भर की तपस्या की ताकत थी जो तुमने आज यह छोटा सा कपड़ा पहन कर बेकार कर दी।

और दूसरी बात यह है कि मैं भीम को तुमसे ज़्यादा जानती हूँ वह अपनी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ेगा।"

यह सुन कर दुर्योधन अनमना सा हो कर चला गया और गांधारी वहीं रोती बैठी रह गयी।

अगले दिन जब भीम और दुर्योधन की लड़ाई हुई तो भीम ने दुर्योधन की जॉघ पर गदा मार कर उसकी जॉघ तोड़ दी और उसको मार दिया।

अगर दुर्योधन अपनी मॉ का कहना मान कर अपनी मॉ के सामने बिना कपड़ों के चला जाता तो? तो आज भारत का इतिहास शायद कुछ और ही होता।

पर वह ऐसे चला कैसे जाता? जैसा जैसा जब जब होना होता है होता तो वैसे ही है न... ?

दुर्योधन को तो मरना ही था और वैसे ही मरना था जैसे मरना था तो गांधारी की कोशिश उसे कैसे बचा सकती थी।

4 शिशुपाल की कहानी

यह कहानी भी भारत की है और महाभारत से ली गयी एक दूसरी कहानी है। श्रीकृष्ण की कई बुआ थीं। उनकी एक बुआ श्रुतश्रवा को जब उनकी शादी के बहुत दिनों बाद बेटा हुआ तो महल में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। उनके बहुत सारे रिश्तेदार भी उनको बधाई देने आये।

इत्तफाक से जब यह बच्चा पैदा हुआ था तो इसके तीन ऑख और चार हाथ थे। ऐसे बच्चे को देख कर महल में सब डर गये। रानी ने तो इस बच्चे को फेंकने का इरादा भी कर लिया था।

पर जब वह उसको फेंकने ही वाली थी कि आकाशवाणी हुई कि "इस बच्चे को मत फेंको यह बच्चा बहुत ही वीर बलशाली और बहुत ही मशहूर राजा होगा।"

यह सुन कर रानी रुक गयी पर फिर बोली — "मगर इसकी मौत कैसे होगी?"

आकाशवाणी ने फिर कहा — "जिस किसी की गोद में जा कर इस बच्चे के दो हाथ और एक ऑख झड़ जायें वही इसकी मौत का जिम्मेदार होगा।"

रानी बच्चे को घर के अन्दर ले आयी और उसको पालने पोसने लगी। पर अब उसको यह जानने की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी कि उसको कौन मारेगा।

इसको जानने के लिये आकाशवाणी के कहे अनुसार अब वह हर एक आने वाले की गोद में उस बच्चे को देती और देखती कि किसकी गोद में जा कर उसकी एक ऑख और दो हाथ झड़ेंगे।

समय बीत रहा था। श्रीकृष्ण, उनके बड़े भाई बलराम और उन दोनों की माता देवकी भी उस बच्चे को देखने के लिये आये। देवकी ने बच्चे को गोद में लिया, उसको लाड़ किया और वापस उसकी मॉ को दे दिया।

फिर बलराम ने उस बच्चे को गोद में लिया, उसके साथ थोड़ा खेला और वापस अपनी बुआ को दे दिया। पर जब श्रीकृष्ण की बारी आयी तो उन्होंने उसको अपनी गोद में लेने से मना कर दिया।

यह देख कर श्रीकृष्ण की बुआ उससे जिद करने लगी कि वह भी उस बच्चे को गोद में ले ले। देवकी और बलराम भी कहने लगे "ले लो न कृष्ण। बुआ की बात रख लो।"

हालॉकि श्रीकृष्ण उसको गोद में लेना नहीं चाहते थे पर मॉ और भाई के आगे उनकी एक न चली और उनको भी उसे गोद में लेना ही पड़ा।

पर जैसे ही उन्होंने उसको गोद में लिया उस बच्चे की एक ऑख और दो हाथ झड़ कर नीचे गिर गये और वह बच्चा सामान्य हो गया।

यह देख कर श्रुतश्रवा तो रो पड़ी। श्रीकृष्ण की कुछ समझ में नहीं आया कि उनकी बुआ क्यों रो पड़ी थी। वह तो केवल आश्चर्य से उन्हें देखते ही रह गये।

बुआ ने रोते हुए श्रीकृष्ण से पूछा — "तो क्या तू अपनी बुआ के बेटे को मारेगा?"

श्रीकृष्ण उस समय छोटे थे। उनकी फिर भी कुछ समझ में नहीं आया कि यह सब क्या हो गया और उनकी बुआ उनको अपने बेटे का मारने वाला क्यों समझ रही हैं।

बाद में उनकी बुआ ने उनको पूरी कहानी बतायी तो श्रीकृष्ण बोले — "मुझे नहीं मालूम बुआ कि आगे क्या होने वाला है। पर अगर इसकी मौत मेरे ही हाथों लिखी है तो मैं क्या कर सकता हूॅ।"

बुआ उनके पैरों पर सिर रख कर बोली — "बेटा, यह हमारे बुढ़ापे की सन्तान है इसको छोड़ दो। इसको मत मारना।"

श्रीकृष्ण बोले — "बुआ, जैसा कि मैंने अभी आपसे कहा कि अगर इसकी मौत मेरे ही हाथों लिखी है तो मैं क्या कर सकता हूॅ। पर हॉ मैं इतना जरूर कर सकता हूॅ कि आपके कहने पर मैं इसके ऐसे सौ अपराध माफ कर दूॅगा जिनमें से हर एक अपराध पर मैं इसको मार सकूॅ।"

उनकी बुआ ने यह सोच कर सब्र कर लिया कि सौ अपराध तो बहुत होते हैं इतने अपराध तो यह शायद कृष्ण के लिये कर भी न पाये। इसके अलावा जब तक यह बड़ा होगा तब तक मैं इसको समझा लूँगी।

वह कृष्ण जी से उसकी जान की इतनी ही भीख माँग कर बहुत खुश थी।

X X X X X X X

समय बीतता गया। सब बच्चे बड़े हो गये। श्रीकृष्ण ने द्वारिका बसा ली। अब वे पांडवों के साथ मिल कर उनकी सहायता करते थे। शिशुपाल भी राजा हो गया था।

पर श्रुतश्रवा के लगातार समझाने बुझाने पर भी शिशुपाल के दिल में श्रीकृष्ण के लिये नफरत बढ़ती ही गयी।[34] और फिर वह दिन भी आया जब उसके जन्म के समय की भविष्यवाणी को सच होना था।

राजा युधिष्ठिर ने राजा बनने के बाद राजसूय यज्ञ किया। उसमें देश देश के राजे महाराजे आये। उनके ताऊ धृतराष्ट्र के बेटे कौरव भी आये। विदुर जी, भीष्म पितामह, गुरू द्रोण, कुलगुरू कृपाचार्य भी आये। श्रीकृष्ण और राजा शिशुपाल भी आये।

[34] This hatred for Shree Krishn increased from the episode of Rukmini's marriage. This is another long story.

अब सभा में यह सवाल उठा कि सबसे पहले पूजा किसकी की जाये। किसी ने भीष्म का नाम लिया तो किसी ने वेद व्यास जी का। फिर सबने एक राय हो कर यह निश्चय किया कि सबसे पहले श्रीकृष्ण की ही पूजा होनी चाहिये क्योंकि आज उनसे बड़ा तो कोई और है ही नहीं।

उसी समय शिशुपाल सभा में घुसा और श्रीकृष्ण की पूजा होते देख कर आपे से बाहर हो गया। उसने आव देखा न ताव और बस श्रीकृष्ण को गालियॉ सुनानी शुरू कर दीं।

दो चार पल तो लोग उसकी गालियॉ सुनते रहे पर फिर भीष्म और विदुर जी ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की कि श्रीकृष्ण को इस तरह गालियॉ देना ठीक नहीं पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया। वह तो बस गालियॉ देता ही चला जा रहा था।

वहॉ बैठे लोगों से जब नहीं सहा गया तो भीष्म ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि वह ही उसको चुप करें, नहीं तो सजा दें।

श्रीकृष्ण बोले — "आज इसको बोलने दीजिये पितामह, क्योंकि आज इसी के बोलने का दिन है। आज यह चुप करने से भी चुप नहीं होगा।"

फिर उन्होंने भीष्म पितामह को उसके जन्म की कहानी सुना कर शिशुपाल से कहा — "शिशुपाल, मैंने तुम्हारी मॉ से वायदा किया था कि "मैं आपके कहने पर इसके वे स्सौ अपराध माफ कर दूॅगा जिन पर हर एक पर मैं इसको मार सकता हूॅ।"

इसलिये आज तुम ऐसे सौ अपराध बेधड़क कर सकते हो जिन पर हर एक पर मैं तुमको मार सकता हूँ। पर तुम्हारे एक सौ एकवें अपराध के बाद का मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

इतना सुनने के बाद भी शिशुपाल बेधड़क हो कर श्रीकृष्ण को बुरा भला कहता रहा और सौवीं गाली के बाद बोला — "और यह ले अब एक सौ एकवीं गाली। अब मैं देखता हू कि तू मेरा क्या बिगाड़ता है।"

कह कर उसने जैसे ही श्रीकृष्ण को एक सौ एकवीं गाली दी श्रीकृष्ण ने अपने चक्र को याद किया और भरी सभा में उसका गला काट दिया। सब लोग देखते के देखते रह गये।

इस तरह शिशुपाल की मॉ ने तो भगवान से भी अपने बेटे की ज़िन्दगी की भीख मॉग ली थी पर कोई क्या कर सकता है। होता तो वही है न जो होना होता है।

और जब जब जो जो होना होता है वह भी तभी ही हो कर रहता है... ।

5 राजा परीक्षित की कहानी[35]

यह कहानी भी भारत के ही नहीं बल्कि दुनियॉ भर के सबसे बड़े महाकाव्य महाभारत से ली गयी है। इस महाकाव्य में एक परिवार की पॉच पीढ़ियों की कहानी है जिसमें तीसरी पीढ़ी – यानी कौरवों और पांडवों का हाल ही इसका मुख्य विषय है।

जब कौरवों और पांडवों की लड़ाई खत्म हो गयी। उसमें सारे कौरव यानी सौ कौरव मारे गये और सारे पांडव यानी पॉचों पांडव जीत गये तो पांडवों ने कई सालों तक राज्य किया। इस बीच भगवान श्रीकृष्ण अपने धाम चले गये।

जिस दिन भगवान श्रीकृष्ण अपने धाम गये उसी दिन से धरती पर कलि युग[36] आ गया। भगवान श्रीकृष्ण के जाने के बाद पांडव भी अर्जुन के पोते यानी अभिमन्यु के बेटे परीक्षित को राजा बना कर स्वर्ग चले गये।

इस तरह राजा परीक्षित कलि युग के पहले राजा थे। यह इन्हीं राजा की कहानी है। यह एक ऐसे राजा की कहानी है जो यह जानता था कि उसकी मौत फलॉ दिन होने वाली है।

[35] Story of Raja Pareekshit – taken from Mahabharat

[36] According to Hindu mythology there are four Yug – Sat Yug, Tretaa Yug, Dwaapar Yug and Kali Yug. Mahabharat happened in the end of Dwaapar Yug and Yudhishthir was the last king of Dwaapar Yug.

उसने अपनी उस मौत से बचने के लिये अपना सारा ज़ोर लगा दिया पर वह नहीं बच सका। कैसे? तो लो पढ़ो यह कहानी और जानो कि कैसे।

जब परीक्षित राजा बने तो उन्होंने सुना कि कलि उनके राज्य में रहने आ गया है तो उन्होंने कहा कि मैं अपने राज्य में कलि को नहीं रहने दूँगा। ऐसा सोच कर वह कलि से लड़ने चल दिये।

वह कलि को मारने ही वाले थे कि कलि ने उनसे प्रार्थना की कि ब्रह्मा जी ने जब उसे बनाया है तो उसे कहीं तो रहना ही पड़ेगा। सो अगर वह कलि को अपने राज्य में थोड़ी सी जगह दे दें तो वह उनके सारे राज्य को तंग नहीं करेगा।

तो राजा परीक्षित ने कलि को अपने राज्य में चार जगहें दे दी जहाँ वह रह सकता था – जहाँ जुआ खेला जा रहा हो, जहाँ शराब पी जा रही हो, जहाँ पर स्त्री पुरुष आपस में एक दूसरे से प्रेम कर रहे हों और जहाँ लालच हो।

कलि ने कहा कि ये चारों जगहें तो उसके राज्य में उसके लिये पाना बहुत मुश्किल था[37] इसलिये अगर वह उसको कुछ और जगहें दे दें तो उनकी बड़ी मेहरबानी होगी।

तब राजा ने उसको रहने के लिये एक जगह और दी और वह थी सोना। सोना कलियुग के लिये बहुत अच्छी जगह थी क्योंकि

[37] It was so because in those days people were not like that, they were of good character, but if he got such places he could live there.

वह तो उन दिनों सभी के पास होता था। और इसका मतलब यह था कि वह अब उनके सारे राज्य में हर जगह रह सकता था।

उसने राजा को धन्यवाद दिया और तुरन्त ही कूद कर राजा के सोने के मुकुट में बैठ गया। अब जब भी राजा परीक्षित अपना मुकुट पहनते तो वह कुछ अजीब सा महसूस करते।

एक दिन राजा परीक्षित शिकार खेलने गये। उन्होंने एक हिरन को अपना निशाना बनाया पर जल्दी ही वह उनकी आखों से ओझल हो गया।

तभी उनको शमीक ऋषि का आश्रम दिखायी दे गया तो वह उनसे यह पूछने चले आये कि उन्होंने उनका हिरन देखा है क्या। शमीक ऋषि एक बहुत ही शक्तिशाली ऋषि थे।

शमीक ऋषि उस समय ध्यान[38] में बैठे थे इसलिये उनको पता ही नहीं चला कि उनके आश्रम में कोई आया भी है इसलिये वह कुछ नहीं बोले।

राजा ने दो तीन बार उनसे पूछा पर जब वह कुछ नहीं बोले तो राजा गुस्से में भर कर जाने के लिये उठे तो पास में ही उनको एक मरा हुआ सॉप पड़ा दिखायी दे गया।

उन्होंने उसको अपने धनुष की नोक से उठाया और उसको ऋषि के गले में डाल कर वहॉ से चले आये।

[38] Translated for the word “Meditation”. In the state of meditation a person is so much absorbed in himself that he does not know what is happening around him.

शमीक ऋषि के एक बेटा था जिसका नाम था श्रंगी। वह पास में ही अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। उसके एक दोस्त ने आ कर उसको बताया कि राजा परीक्षित तुम्हारे पिता के आश्रम में आये थे और उनके गले में एक मरा हुआ सॉप डाल कर चले गये हैं।

श्रंगी ने पूछा — "पर मेरे पिता की गलती क्या थी?"

इस पर उसके दोस्त ने उसको सारी घटना सुना दी।

श्रंगी भी अपने पिता की तरह से अपने तप की वजह से बहुत शक्तिशाली था। यह सुन कर उसको बहुत गुस्सा आया कि राजा ने बिना किसी गलती के मेरे पिता का अपमान किया है।

सो तुरन्त ही उसने राजा को शाप दिया "वह पापी राजा जिसने मेरे पिता के साथ ऐसा किया है वह आज से सातवें दिन तक्षक नाग[39] के काटने से मर जायेगा।"

बाद में जब श्रंगी आश्रम में आया तो उसने अपने पिता को बताया कि उसने क्या किया था।

शमीक ऋषि बोले — "बेटा, तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था। वह राजा थे। राजा भगवान के समान होता है। जब राजा ही नहीं रहेगा तो प्रजा का पालन कौन करेगा। सब जगह अशान्ति फैल जायेगी।

[39] Takshak Naag is the son of Maharshi Kashyap and is supposed to be immortal. There are many stories of Takshak Naag.

हम लोग ब्राह्मण हैं हमको अपने गुस्से पर काबू रखना सीखना चाहिये। अपनी शक्ति का यह मतलब नहीं है कि उसका नाजायज फायदा उठाया जाये। तुम तो अपना शाप वापस नहीं ले सकते इस लिये अब मुझे ही कुछ करना होगा।"

अपने बेटे की इस गलती के लिये उन्होंने अपने एक शिष्य को राजा के पास भेजा कि वह वहॉ जा कर उनको इस शाप के बारे में बता दे।

उधर जब राजा परीक्षित शिकार से घर आये और अपना मुकुट उतार कर रखा तो उनको याद आया कि वे उन ऋषि के साथ क्या कर के आये थे। वह तो यह सोच कर ही बहुत दुखी हो गये कि यह मैंने क्या किया। ऐसा मुझसे कैसे हो गया।

असल में यह काम कलि का था जो उनके मुकुट में बैठा हुआ था। उसी ने उनकी अक्ल खराब की थी। सो जब राजा ने अपना मुकुट उतार दिया तब उनको ऋषि के साथ किये गये अपने बर्ताव का पछतावा हुआ।

पर अब क्या हो सकता था। वह उन ऋषि के पास जा कर उनसे माफी मॉगने की सोचने लगे।

तभी ऋषि का भेजा हुआ उनका शिष्य वहॉ आ पहुँचा। उसने राजा को ऋषि का सन्देश दिया और कहा कि ऋषि अपने बेटे के इस शाप के लिये बहुत शर्मिन्दा हैं।

राजा परीक्षित ने उस शिष्य को यह कह कर वापस भेज दिया कि "ऋषि से कहना कि बस वे मुझ पर दयालु रहें। मुझे और कुछ नहीं चाहिये।"

इस शाप को सुन कर राजा ने अपने मन्त्रियों और दूसरे खास आदमियों को बुलाया और इस बारे में सलाह की कि अब क्या करना चाहिये।

सबने उनको सुझाया कि उनको किसी ऐसी अकेली जगह चले जाना चाहिये जो हर तरफ से सुरक्षित हो और उसके चारों तरफ कड़ा पहरा लगा देना चाहिये।

तुरन्त ही राजा ने दिन रात लगा कर एक ऐसा महल बनवाया जो सब तरफ से सुरक्षित था। वह एक बहुत ऊँचे खम्भे पर बना हुआ था।

वहाँ तीन वैद्य थे और बहुत सारी दवाऐं उसमें रखी हुई थीं। ब्राह्मणों ने उसको मन्त्रों से सुरक्षित कर रखा था। हवा को भी अन्दर आने के लिये राजा से हुक्म लेना पड़ता था। वह ऐसे ही महल में रहने चले गये और वहीं जा कर रहने लगे। वहाँ वह बेफ़िक्र हो कर रह रहे थे।

X X X X X X X

यह तो हुई भूमिका – अब सुनो असली कहानी। राजा परीक्षित की राजधानी हस्तिनापुर में एक बहुत ही योग्य वैद्य रहता था जिसका

नाम था कश्यप। उसने भी सुना कि श्रंगी ऋषि ने राजा परीक्षित को शाप दिया है कि "आज से सातवें दिन वह तक्षक नाग के काटे से मर जायेंगे।"

कश्यप वैद्य ने सोचा कि अगर मैं राजा को तक्षक नाग के काटे से बचा पाया तो देश भर में मेरी तारीफ होगी, राज दरबार में मेरी इज़्ज़त बढ़ेगी और मुझे बहुत पैसा मिलेगा।

कश्यप वैद्य बहुत होशियार वैद्य था। उसको पूरा विश्वास था कि वह राजा परीक्षित को तक्षक नाग के काटे से बचा लेगा।

अब वह तक्षक नाग को राजा को काटने से रोक तो नहीं सकता था पर वह उसके काटने के बाद राजा को ज़िन्दा तो कर ही सकता था।

यही सोच कर वह सातवें दिन राजा के महल की तरफ चल दिया कि जब तक्षक राजा को काट कर चला जायेगा तो वह राजा को ज़िन्दा कर देगा।

उधर सातवें दिन राजा भी बहुत परेशान थे पर उनके मन्त्री उनको यह कह कर तसल्ली दे रहे थे कि क्योंकि उस महल की इतनी ज़्यादा सुरक्षा थी कि तक्षक उस महल में किसी तरह भी नहीं आ सकता था इसलिये उनको अधिक चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं थी।

और जब उसके आने का समय टल जायेगा तो फिर राजा की जान को कोई खतरा भी नहीं था।

इधर सातवें दिन श्रंगी ऋषि के शाप के अनुसार तक्षक नाग भी राजा को काटने के लिये चल दिया। रास्ते में तक्षक नाग को पता चला कि राजा परीक्षित के राज्य का एक वैद्य मेरे काटे का इलाज करने के लिये राजा के पास जा रहा है।

तक्षक ने सोचा कि अगर वह वैद्य उसके काटे का इलाज कर देगा तब तो उसकी बड़ी बेइज़्ज़ती हो जायेगी सो उसको किसी तरह राजा परीक्षित के पास जाने से रोकना चाहिये।

पहले उसको यह देखने के लिये उस वैद्य का इम्तिहान लेना चाहिये कि जब वह राजा को काटे तो राजा यकीनन मर जाये और फिर वह वैद्य उसको ज़िन्दा न कर सके।

सो तक्षक ने एक ब्राह्मण का रूप रखा और कश्यप से रास्ते में मिला। उसने कश्यप से पहले उसके काम के बारे में पूछा कि वह क्या करता है और फिर यह पूछा कि इस समय वह जल्दी जल्दी कहाँ जा रहा है।

कश्यप ने उसको बताया कि वह एक वैद्य है और क्योंकि आज तक्षक नाग राजा परीक्षित को काटने वाला है तो वह राजा की जान बचाने जा रहा है।

तक्षक बोला — "मैं ही वह तक्षक हूँ जो उस राजा को काट कर मारने जा रहा हूँ। तुम रुक जाओ क्योंकि तुम उसका इलाज कर ही नहीं सकते जिसे मैं काट लूँ।"

कश्यप बोला — "पर मुझे अपने ऊपर पूरा यकीन है कि मैं उसका इलाज कर पाऊँगा जिसको तुमने काटा हो।"

यह सुन कर तक्षक बोला — "अगर तुम यह बात इतने यकीन के साथ कह सकते हो कि तुम मेरे काटे से मरे आदमी को फिर से ज़िन्दा कर सकते हो तो पहले तुम मुझे इस बरगद के पेड़[40] को ज़िन्दा कर के दिखाओ तब मैं जानूँ कि तुम परीक्षित को भी ज़िन्दा कर सकते हो। मैं इस पेड़ को अभी काटता हूँ।"

"ठीक है तुम काटो मैं इसको अभी ज़िन्दा कर के दिखाता हूँ।"

तक्षक ने उस पेड़ पर अपना फन मारा और वह पेड़ देखते देखते चारों तरफ से आग की लपटों से घिर गया और धू धू कर के जलने लगा। जब वह पेड़ पूरा जल गया तो तक्षक ने कश्यप को कहा कि अब वह उसको ज़िन्दा कर के दिखाये।

कश्यप ने उस पेड़ की राख उठायी और तक्षक से कहा — "ओ नागों के राजा। अब तुम मेरी शक्ति देखो।"

कह कर उसने कुछ मन्त्र पढ़े और उसने उस पेड़ को कुछ पलों में ही ज़िन्दा कर दिया।

[40] Banyan tree – this tree is very huge. Many times it has many trunks. From among them it is impossible to find the original tree trunk. In Calcutta, Bengal there is such a tree that even an army can rest under its shade.

पहले उसमें से कल्ला फूटा, फिर दो पत्तियॉ आयीं, फिर डंडी निकली, फिर बड़ी बड़ी शाखें, फिर और पत्तियॉ, और जल्दी ही वह एक हरा भरा पेड़ बन कर खड़ा हो गया।

तक्षक को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसका तो मुँह ही खुला का खुला रह गया। वह डर भी गया क्योंकि वह सोचता था कि उसके काटे का तो कहीं इलाज ही नहीं है पर इस वैद्य ने तो उसके सामने सामने ही उसके काटे हुए पेड़ को जो बिल्कुल ही जल कर राख हो चुका था फिर से हरा भरा कर दिया था।

तक्षक बोला — "यह ठीक नहीं है कि तुम मेरा जहर इस तरह से नष्ट करो। जितना पैसा तुम राजा से आशा कर रहे हो मैं तुमको उससे कहीं ज़्यादा पैसा दूँगा बस तुम राजा को ज़िन्दा करने का इरादा छोड़ दो।

तुमने इस पेड़ को तो ज़िन्दा कर दिया पर तुम उस राजा को ज़िन्दा नहीं कर पाओगे जिसको एक ब्राह्मण ने शाप दे रखा है। और फिर तुम्हारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी और फिर तुम्हारी प्रसिद्धि ऐसे चली जायेगी जैसे ग्रहण लगने से सूरज की धूप चली जाती है।"

तक्षक आगे बोला — "मैं तुमको जितना तुम सोच रहे हो उससे भी कहीं ज़्यादा दूँगा इसलिये तुम राजा के पास मत जाओ।"

यह सुन कर कश्यप ने अपने योग ध्यान से यह जान लिया कि राजा का समय अब इस धरती पर खत्म हो चुका है और फिर मैं तो

वहाँ केवल पैसे और प्रसिद्धि के लिये जा रहा था। अब कम से कम मुझे उससे ज़्यादा पैसा तो यहीं मिल ही रहा है तो मैं वहाँ जा कर क्या करूँगा।

सो वह बोला — "ठीक है। तुम मुझे पैसे दे दो मैं वापस चला जाता हूँ।"

कह कर उसने अपनी इच्छा अनुसार तक्षक से पैसे लिये और घर वापस चला गया। उधर तक्षक भी राजा को काटने के लिये राजा के पास चल दिया।

X X X X X X X

अब सुनो कहानी आगे की कि तक्षक राजा परीक्षित के इतने सुरक्षित महल में कैसे घुसा। तक्षक कश्यप को निबटा कर परीक्षित के महल की तरफ चला। वहाँ आ कर उसको पता चला कि परीक्षित तो बहुत ही सुरक्षित महल में रह रहा था। उसमें घुसना तो बहुत ही कठिन था।

सो उसने राजा को धोखा देने का निश्चय किया। पर वह उसको धोखा कैसे दे।

उसने कुछ साँप ब्राह्मण के रूप में फल, कुश घास[41] और जल आदि ले कर राजा के पास भेजे जैसे वे उसके पास उसको

[41] Kush is a kind of grass which is used in Hindu worship. It is called holy grass too.

आशीर्वाद देने के लिये आ रहे हों। उन्हीं में से एक फल में तक्षक एक कीड़े का रूप रख कर छिप कर बैठ गया।

ब्राह्मण होने के नाते राजा ने उन सब ब्राह्मणों का स्वागत किया, उनकी लायी हुई चीज़ें स्वीकार कीं और उनको वापस भेज दिया। जब ब्राह्मण चले गये तो राजा ने अपने मन्त्रियों को उन फलों को खाने के लिये कहा।

किस्मत ने राजा को मजबूर किया और उन सबके दिल में उसी समय उन फलों को खाने की इच्छा जाग उठी, खास कर के वह वाला फल जिसके अन्दर तक्षक छिप कर बैठा हुआ था।

जैसे ही राजा ने उस फल को अपने मुँह से काटा उसमें से एक भद्दा सा कीड़ा निकला। राजा ने उस कीड़े को लिया और कहा — "सूरज डूब रहा है। मुझे अब किसी जहर से डर नहीं है इसलिये अगर यह तक्षक है तो मुझे काट ले।"

और राजा के मन्त्रियों ने भी राजा की बदकिस्मती के वश में आ कर कहा "ऐसा ही हो।" राजा ने अपनी मौत का समय आया जान कर उस कीड़े को अपनी गर्दन पर रख लिया।

तुरन्त ही वह कीड़ा तक्षक नाग में बदल गया और उसकी गर्दन के चारों तरफ लिपट कर उसकी गर्दन में काट लिया। राजा वहीं का वहीं मर गया।

यह देख कर राजा के मन्त्री तो बहुत डर गये और डर के मारे पीले पड़ गये। तक्षक वहाँ से एक लाल धारी के रूप में उड़ कर

बाहर चला गया। तक्षक के वहॉ से जाते ही परीक्षित का वह महल धू धू कर के जल उठा। यह देख कर मन्त्री भी वहॉ से भाग गये।

इतना सुरक्षित महल और इतना होशियार वैद्य दोनों में से कोई भी राजा को नहीं बचा सका।

सो जब जब जो जो होना होता है वह तो तब तब होता ही है कोई चाहे कुछ भी कर ले....

6 गौतम बुद्ध की कहानी

यह कहानी भी भारत देश की है। गौतम बुद्ध वह हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म चलाया। इनका जन्म करीब **644** बीसी में हुआ था और ये **524** बीसी में इस दुनियॉ को छोड़ गये थे। इस तरह ये करीब अस्सी साल तक ज़िन्दा रहे।

ये राजा शुद्धोदन के बेटे थे। राजा शुद्धोदन की राजधानी कपिलवस्तु थी जो उस समय उत्तरी बिहार में थी।

कहते हैं कि इनके जन्म के पहले इनकी मॉ को कई ऐसे सपने आये थे जिनसे उनको पता चल गया था कि उनको कोई दैवी सन्तान पैदा होने वाली है।

जब ये पैदा हुए तो इनके पिता राजा शुद्धोदन ने इनको सिद्धार्थ नाम दिया। इनका जन्म क्योंकि क्षत्रिय जाति की शाक्य शाखा में हुआ था इसलिये इनको शाक्य मुनि भी कहा जाता है। ज्ञान मिल जाने के बाद ही ये गौतम बुद्ध कहलाये।

जन्म के बाद इनके पिता ने इनका भविष्य जानने के लिये कई ज्योतिषी बुलाये तो उन्होंने राजा को बताया कि आपका यह बेटा या तो चक्रवर्ती राजा बनेगा या फिर सब कुछ छोड़ कर चक्रवर्ती संत या साधु बन जायेगा।

इन आठ ज्योतिषियों में से एक ज्योतिषी कोदन्ना[42] भी थे। उन्होंने कहा "नहीं राजन आप इसमें से राजा शब्द निकाल दें। यह बच्चा केवल चक्रवर्ती सन्त ही बनेगा चक्रवर्ती राजा नहीं।"

जब राजा ने कोदन्ना की भविष्यवाणी सुनी तो वह तो बहुत उदास और दुखी हो गये और गहरे विचारों डूब गये कि उनका अकेला बेटा राज्य छोड़ कर चल जायेगा। इसलिये उन्होंने बालक सिद्धार्थ के लिये महल में ही सारी सुख सुविधाओं का इन्तजाम कर दिया।

पहली बात तो उस बच्चे को महल के बाहर जाने ही नहीं दिया जाता और अगर जाने भी दिया जाता तो इस बात का खास ध्यान रखा जाता कि उसको कोई ऐसी दर्द भरी घटना न दिखायी दे जिससे उसका मन संसार से हट जाये।

इस तरह से काफी समय गुजर गया। जब सिद्धार्थ चौबीस साल के हो गये तो उनकी शादी यशोधरा के साथ कर दी गयी। इस तरह कई साल तक सिद्धार्थ ने बहुत ही आरामदेह ज़िन्दगी गुजारी। फिर उनको एक बेटा हुआ जिसका नाम रखा गया राहुल।

पर जो कुछ भाग्य में लिखा है उसे कौन टाल सकता है।

एक बार सिद्धार्थ की इच्छा कहीं दूर घूमने की हुई तो उन्होंने अपने नौकरों से कहा कि वे उनको कहीं दूर घुमाने के लिये ले

[42] Kodanna – one of the eight astrologers who came on the occasion of Gautam Buddha's birthday to predict his future.

चलें। तो रास्ते में उन्होंने उस दिन जो कुछ देखा उसने तो उनकी ज़िन्दगी ही बदल दी।

सबसे पहले उन्होंने एक कोढ़ी आदमी देखा। उसके सारे शरीर पर घाव से हो रहे थे। उन्होंने अपने नौकरों से पूछा कि इस आदमी को क्या हुआ है। यह ऐसा क्यों दिखायी देता है। उन्होंने उनको बताया कि यह आदमी बीमार है।

सिद्धार्थ ने पूछा — "यह बीमारी क्या होती है?"

नौकरों ने कहा — "राजकुमार, यह तो शरीर है। बीमारियॉ तो इसे लगती ही रहती हैं। इसमें शरीर का कभी कोई अंग खराब होता है तो कभी कोई।"

राजकुमार सिद्धार्थ यह सुन कर चिन्ता में पड़ गये।

आगे चले तो उन्होंने एक बूढ़ा देखा जिसके शरीर पर झुर्रियॉ पड़ी हुई थीं, उसकी कमर झुकी हुई थी और वह लाठी के सहारे बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था।

सिद्धार्थ ने अपने नौकरों से पूछा — "इस आदमी को क्या हुआ?"

नौकरों ने कहा — "राजकुमार, यह बुढ़ापा है। भगवान जिसको लम्बी उमर देता है तो वह बूढ़ा तो होता ही है।"

राजकुमार सिद्धार्थ यह सुन कर फिर चिन्ता में पड़ गये।

और आगे चले तो उन्होंने एक मरा हुआ आदमी देखा जिसकी अर्थी को लोग अपने कन्धों पर शमशान लिये जा रहे थे। उसके पीछे पीछे लोग रोते हुए चले जा रहे थे

सिद्धार्थ ने उसको देख कर पूछा — "ये चार आदमी किसको उठा कर लिये जा रहे हैं? और इसके पीछे पीछे जाने वाले लोग रो क्यों रहे हैं?"

नौकरों ने बताया कि यह आदमी मर गया है और ये लोग इस को शमशान लिये जा रहे हैं इसका अन्तिम संस्कार करने के लिये।

राजकुमार सिद्धार्थ ने फिर पूछा — "यह मरना क्या होता है और यह आदमी क्यों मर गया?"

नौकर बोले — "राजकुमार मौत तो हर आदमी को आती है। जो इस दुनियॉ में आया है वह एक दिन जायेगा भी जरूर। अब क्योंकि यह चला गया और ये लोग इसको फिर कभी नहीं देख पायेंगे इसलिये ये लोग इसके पीछे पीछे रोते जा रहे हैं।"

उन्होंने राजकुमार सिद्धार्थ को गरीबी और दुख के बारे में और भी बहुत कुछ बताया। राजकुमार सिद्धार्थ का मन यह सब देख सुन कर बहुत दुखी हो गया। उन्होंने नौकरों से तुरन्त ही घर वापस चलने के लिये कहा।

घर आ कर वह बहुत परेशान हो गये। कई सवाल उनके दिमाग में घूमने लगे — "इस धरती पर जीने का क्या मतलब है?"

"यह ज़िन्दगी केवल यहाँ आनन्द मनाने के लिये ही नहीं है इसका कुछ और भी मतलब है। वह मतलब क्या है।" आदि आदि।

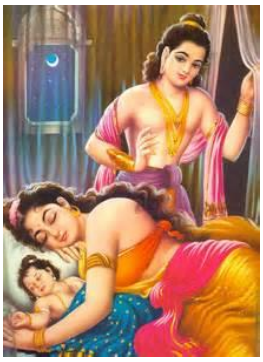

सोचते सोचते वह इतना परेशान हुए कि एक दिन वह अपने नन्हें से बच्चे राहुल और पत्नी यशोधरा को रात में अकेला सोते हुए छोड़ कर घोड़े पर सवार हो कर महल से चले गये और फिर कभी वापस घर नहीं आये।

क्या भाग्य था उनका। पिता ने बेटे को कितना सँभाल कर रखा कि वह कोई दुख न देखे पर फिर भी जब समय आया तो उनके बेटे ने उनके बिना दिखाये ही वे सब दुख देख लिये जिनसे उसको बचा कर रखा गया था।

और फिर एक दिन महलों के सब ऐशो आराम छोड़ कर वह राजकुमार भिक्षु बन गया और गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

और फिर जो होना होता है वह तो होता ही है न। किसी के रोके रुकता नहीं चाहे कोई लाख कोशिश कर ले ... वह दुनियाँ भर के बहुत बड़े संत बन गये।

7 वराह मिहिर की कहानी[43]

किस्मत की यह कहानी भी भारत की कहानियों से ली गयी है। वराह मिहिर भारत के एक बहुत बड़े ज्योतिषी हो गये हैं। इनका जन्म भारत की उज्जयिनी नगरी में हुआ था पर कब हुआ था इसके बारे में लोग एकमत नहीं हैं। कुछ का कहना है कि ये **505** एडी में पैदा हुए थे।

पर यह सब मानते हैं कि यह राजा विक्रमादित्य के समय में उनके राज दरबार में उनके नव रत्नों में से एक थे। उनके दरबार के दूसरे नव रत्न थे महाकवि कालीदास, वैद्यराज धन्वन्तरि, आचार्य वररुचि आदि। और ये सब ईसा पूर्व पहली सदी में थे।

यह बहुत बड़े खगोल शास्त्री, ज्योतिषी और गणितज्ञ[44] थे। इन्होंने कई किताबें लिखी हैं जो आज भी ज्योतिष में बहुतायत से इस्तेमाल की जाती हैं।

पंच सैद्धान्तिका इनकी खगोल शास्त्र की एक किताब है। इन की बृहत संहिता किताब कई विषयों पर लिखी गयी एक किताब है। इन्होंने कुछ किताबें ज्योतिष पर भी लिखी हैं जिनमें बृहत

[43] Varaah Mihir's Story – taken from http://sushmajee.com/reldictionary/sketches/sketches-n-z/sk-varaahmihir-2.htm
[This story is like "Pareekshit's Story" given above.]
[44] Astronomer, Astrologer and Mathematician

जातक बहुत मशहूर है। इस किताब को लोग आजकल भी बहुत इस्तेमाल करते हैं।

इनके बेटे पृथुयश और उसकी पत्नी लीलावती भी ज्योतिषी थे और उन्होंने भी किताबें लिखी हैं जो अभी तक काफी मशहूर हैं।

यहाँ हम वराह मिहिर के जीवन की एक बहुत ही खास घटना दे रहे हैं जो शायद बहुत कम लोगों को मालूम है। यह घटना उनके ज्योतिष के ज्ञान पर आधारित है।

वह राजा विक्रमादित्य के दरबार में अपने ज्योतिष के ज्ञान के लिये बहुत मशहूर थे। उनकी कई भविष्यवाणियाँ सच हो चुकी थीं और उनके लिये उनको राजा से इनाम भी मिल चुका था इसी लिये राजा उनको मानते भी बहुत थे।

इस घटना से इस बात का भी पता चलता है कि इनका नाम वराह मिहिर कैसे पड़ा। इनका अपना नाम केवल मिहिर था। वराह संस्कृत में सूअर को कहते हैं। यह शब्द इनके नाम से पहले इस घटना के बाद ही जोड़ा गया था।

एक बार राजा के बेटा हुआ तो राजा ने इनसे अपने बेटे के भविष्य के बारे में पूछा। मिहिर ने राजकुमार की जन्म कुंडली बनायी और भगवान का ध्यान कर के देखा तो पाया कि राजकुमार की उम्र में कुछ दोष है। यह दोष बहुत गम्भीर है और इसका कोई उपचार नहीं है।

उस बालक की अपने जीवन के अठारहवें साल में एक खास दिन एक जंगली वराह या सूअर के द्वारा मृत्यु निश्चित थी और किसी भी आदमी का किया गया कोई इलाज, कोई दवा, कोई मन्त्र या पूजा या यज्ञ उसकी इस मृत्यु को न तो टाल सकता था और न ही रोक सकता था।

अपने सबसे ज़्यादा विश्वास वाले ज्योतिषी से अपने बेटे के बारे में यह भविष्यवाणी सुन कर राजा विक्रमादित्य ने अपने प्रधान मन्त्री भट्टी को बुला कर उनसे राय ली। दोनों में यह तय हुआ कि राजकुमार के लिये अस्सी फीट ऊँची दीवार से घिरा एक खास महल बनवाया जाये।

उस महल के अन्दर और बाहर हर जगह दस हजार पहरेदार दिन रात पहरा देंगे। यह पहरा भी इतना कड़ा होगा कि उस ऊँची दीवार से घिरी जगह में कोई चूहा या बिल्ली तक नहीं आ पायेगी फिर किसी जंगली सूअर का तो कहना ही क्या है।

ऐसा ही किया गया। राजकुमार के लिये अस्सी फीट ऊँची दीवार से घिरा एक खास महल बनवाया गया और उस महल की रखवाली के लिये हर मुमकिन कोशिश की गयी। राजकुमार के ऊपर भी सख्त निगरानी रखी गयी।

इस तरह से वह राजकुमार अपने ही घर के अन्दर करीब करीब कैदी की तरह से रहने लगा। किसी भी हालत में किसी भी वजह से उसको अपना घर छोड़ कर बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी।

बल्कि राजा ने उसको खुद को भी उस महल की सातवीं मंजिल पर रखा हुआ था और वह नीचे की भी किसी भी मंजिल पर आ जा नहीं सकता था।

यह सब इन्तजाम इतना पूरा और पक्का था कि इसके बारे में यह कहा जा रहा था कि "राजकुमार मर तो सकता है पर कम से कम सूअर की वजह से नहीं।"

इतनी सुरक्षा का इन्तजाम करने बाद राजा ने एक बार फिर अपने ज्योतिषी मिहिर से पूछा कि क्या इस सबके बाद भी वह अपनी भविष्यवाणी को दोबारा सोच कर उसमें कुछ बदलाव लाना चाहेंगे?

मिहिर ने कहा कि उनको बहुत अफसोस है कि वह राजकुमार को बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते।

जैसे जैसे राजकुमार के मरने का दिन पास आता जा रहा था राजा बार बार मिहिर से पूछ रहे थे कि क्या वह अपनी भविष्यवाणी बदलना चाहेंगे पर मिहिर बार बार अफसोस के साथ कहते कि उनको बहुत दुख है कि वह अपनी भविष्यवाणी नहीं बदल सकते।

सारे लोगों के दिलों में तनाव बढ़ता जा रहा था। राजकुमार की मृत्यु के बारे में नहीं बल्कि मिहिर की भविष्यवाणी की साख के बारे

में। उनके दुश्मनों का सोचना था कि जितनी उनकी साख थी उतनी उनकी योग्यता नहीं थी।

और कम से कम इतने सुरक्षित महल में रहने के बाद तो राजकुमार को कोई छू भी नहीं सकता था। और हालॉकि राजकुमार मर सकता था पर राजा के इस इन्तजाम के साथ वह सूअर के द्वारा मर सकता था यह तो बिल्कुल ही नामुमकिन था।

और अगर राजकुमार सूअर के द्वारा नहीं मरा तो मिहिर तो जरूर ही बदनाम हो जायेंगे। लोग बस यही सोच रहे थे।

उनके दोस्त लोग जिनको उनमें और उनकी योग्यता में पक्का विश्वास था उनको भी यह सब इन्तजाम देख कर शक होने लगा था कि अब उनकी भविष्यवाणी कैसे सच होने वाली थी।

क्योंकि उस जगह में तो जहॉ इस समय राजकुमार रह रहा था एक चूहे का भी छिप कर अन्दर जाना किसी भी हालत में नामुमकिन था फिर जंगली सूअर का तो कहना ही क्या।

आखिर वह दिन भी आया जब इस घटना को घटना था। राजकुमार अब अठारह साल का हो गया था। राजा विक्रमादित्य अपने दरबार में बैठे थे। हर घंटे पर कोई न कोई उनको राजकुमार की सुरक्षा की सूचना ला कर दे रहा था।

दरबार में उनके दरबार के सारे ज्योतिषी और नव रत्न मौजूद थे। सारा शहर मिहिर की भविष्यवाणी के परिणाम का इन्तजार कर

रहा था। क्या वह सच होगी या नहीं? राजकुमार की मृत्यु का समय शाम के पॉच बजे का बताया गया था।

हालॉकि राजा विक्रमदित्य मिहिर की बहुत तारीफ और इज़्ज़त करते थे पर जैसे जैसे पॉच बजे का समय पास आ रहा था राजा को भी मिहिर की भविष्यवाणी पर शक होने लगा था।

राजा ने एक बार फिर से मिहिर से पूछा कि क्या वह अभी भी अपने कहे पर कायम हैं कि राजकुमार आज ही मरेगा और शाम के पॉच बजे ही मरेगा?

अगर वह दोबारा गणित करें तो क्या वह यह बता सकते हैं कि राजकुमार ऐसे ही मरेगा या फिर सूअर के द्वारा ही मरेगा। क्योंकि सूअर के द्वारा मरना तो राजा को बिल्कुल ही नामुमकिन लग रहा था।

राजा ने उनको यह भी सलाह दी कि वह अब भी अपने कहे से मुकर जायें ताकि उनको बदनामी का सामना न करना पड़े।

फिर राजा ने यह भी प्रतिज्ञा की कि अगर मिहिर की यह नामुमकिन बात सच हो गयी तो वह मिहिर को राज दरबार में सबसे ऊॅचा ओहदा और सोने का रत्न जड़ित वराह का शाही चिन्ह देंगे। वहॉ बैठे सभी लोगों ने राजा की इस प्रतिज्ञा की बहुत तारीफ की।

सब लोगों की ऑखें मिहिर पर लगी थी। मिहिर उठे और उन्होंने एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने अपने ज्ञान को बहुत कम बताया और कहा कि यह बड़ी बदकिस्मती की बात है कि वशिष्ठ

जी[45] जैसे ऋषि भी अगर यहॉ होते तो राजकुमार के कर्मों को नहीं बदल सकते थे।

फिर उन्होंने भी एक प्रतिज्ञा की कि अगर उनकी यह भविष्यवाणी गलत निकल गयी तो फिर वह कभी ज्योतिषी का काम नहीं करेंगे वह कभी दरबार में नहीं आयेंगे बल्कि वह उज्जैन ही छोड़ देंगे और जीवन के आखिरी दिन तक तपस्या के लिये किसी घने जंगल में चले जायेंगे।

पर मिहिर का कहना था कि जैसा कि उन्होंने कहा है राजकुमार की मृत्यु भी आयेगी और भाग्य को कोई नहीं बदल सकता। और राजकुमार की मृत्यु भी सूअर के द्वारा ही होगी।" इतना कहने को बाद वह चुप हो कर बैठ गये।

दोपहर बाद दो बजे राजा फिर अपने दरबार में आये। अब राजा की सेना के ऊॅचे अधिकारी हर आधे घंटे बाद उनको राजकुमार की खबर देने के लिये आ रहे थे। सब इन्तजाम ठीक चल रहा था।

राजा ने अपने नौकरों को हुक्म दे रखा था कि वह इस समय में और ज़्यादा सावधान रहें और राजा को खुद को यह यकीन था कि उनके बेटे को कोई नुकसान नहीं पहुॅचेगा।[46]

---

[45] Vashishth Ji was a very able sage. He had lots of powers. He was the son of Brahmaa Ji and teacher of Shri Raam.

[46] [My Note : I do not understand that when the matter was so crucial, means the matter of life and death of the prince, and they all knew the time of his death then why the King Vikramaditya himself was not with him, at least for a short time – say for half an hour or so? Or he could keep his son in

पर मिहिर बिल्कुल शान्त बैठे थे। ऐसा कैसे हो सकता था कि कुछ ही घंटों में उनकी भविष्यवाणी गलत हो जाये पर फिर भी वह बिल्कुल शान्त थे।

समय गुजरता जा रहा था। पॉच बजे के आधा घंटे बाद एक चौकीदार दरबार में आया और उसने राजा को बताया कि राजकुमार के महल में सब कुछ ठीक है कहीं कोई हल्ला गुल्ला नहीं है।

मिहिर बोले — "राजकुमार तो मेरे बताये हुए समय पर मर चुके हैं महाराज। आप सब लोग वहॉ जा कर देख सकते हैं।"

तभी दूसरा चौकीदार वहॉ आया और उसने भी यही कहा कि महल में सब ठीक है और शान्त है।

फिर भी राजा अपने बेटे को देखने के लिये उसके महल की तरफ चल दिये। रास्ते में जो और चौकीदार खड़े थे राजा उनसे भी पूछता जा रहे थे कि महल में सब कैसा था और वे भी यही जवाब दे रहे थे कि सब ठीक है और कहीं भी कुछ भी गड़बड़ नहीं है।

अब छह बज रहे थे। राजा ने मिहिर से फिर कहा — "लगता है कि तुम्हारी भविष्यवाणी गलत हो चुकी है क्योंकि हमारे किसी भी चौकीदार ने हमको यह नहीं बताया कि महल में कुछ गड़बड़ है।"

और राजा यह मान ही नहीं सकते थे कि उनके चौकीदार ऐसी बात के बारे में झूठ भी बोल सकते हैं।

---

front of his eyes. If I had been there I would sit down with him. And this is not a story, it is the real accident.]

मिहिर बोले — "महाराज की जय हो। राजकुमार इतने घंटे, इतने मिनट और इतने सेकंड पर मर चुके हैं। मैंने तो यह सब देख लिया है पर आपका कोई भी चौकीदार इसको नहीं देख पाया। इसमें कोई शक नहीं है कि यह बड़े दुख की बात है पर यह तो हो चुका है और आपका बेटा खून में लथपथ पड़ा है।

कोई चौकीदार इसको देख नहीं पाया और कोई दूसरा भी उसके साथ नहीं है। आप जब वहॉ पहुँचेंगे तभी आप मेरी भविष्यवाणी की सचाई को जान पायेंगे। आइये चलें चल कर देखें।"

जब वे सब महल में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि हर मंजिल पर शान्ति थी पर सातवीं मंजिल पर राजकुमार के करीब एक दर्जन दोस्त कई तरह के खेल खेलने में लगे हुए थे जैसे शतरंज आदि।

जब राजा ने उनसे राजकुमार के बारे में पूछा तो वे बोले — "वह अभी तक तो हमारे साथ ही खेल रहे थे और तब तक वह बिल्कुल ठीक थे। वह अभी अभी कुछ ताजा हवा लेने के लिये बाहर छत पर चले गये हैं।"

मिहिर बोले — "राजकुमार जरूर ही सूअर की वजह से हुए जख्मों से खून से लथपथ मरे हुए पड़े होंगे। अगर आप छत पर जायेंगे तो जैसा कि मैंने कहा है आप सब उनको वहॉ मरा हुआ देख कर आश्चर्य में पड़ जायेंगे।"

मिहिर आगे बोले — "यह भविष्यवाणी मेरी नहीं है। इस तरह की आश्चर्यजनक और न सोच पाने वाली घटनाओं को बताने के

लिये न तो मेरे पास ज्ञान है और न ही मेरी योग्यता है। ये सारी भविष्यवाणियॉ तो मैं भगवान सूर्य की कृपा से करता हूॅ। वे भविष्यवाणियॉ जिनको उनका सहारा मिलता है क्या कभी गलत निकल सकती हैं?"

वे सब बाहर छत पर पहुॅचे तो उन्होंने बड़े डर और दुख से देखा कि राजकुमार एक पलंग पर लेटा हुआ है और उसके दोनों तरफ खून का एक तालाब सा बन गया है। उसकी शक्ल नकली सूअर के लोहे के खुरों से बिगड़ गयी है।

असल में यह सूअर राजा का शाही निशान था और एक झंडे के डंडे से जुड़ा हुआ था। सारे लोग राजकुमार की मौत के दुख के साथ साथ इस भविष्यवाणी के सच होने की खुशी में डूबे हुए थे।

राज विक्रमदित्य ने अपने वायदे के अनुसार मिहिर को सोने का रत्न जड़ित शाही निशान दिया और उसी दिन से उनका नाम वराह मिहिर पड़ गया।

सो अब तुम यह जानना तो जरूर चाहोगे कि इतनी सब सुरक्षा का इन्तजाम होते हुए भी राजकुमार वराह द्वारा कैसे मर गया और उसका राजा पिता सब तरह से समर्थ होते हुए भी अपने बेटे को क्यों न बचा सका। जब जब जैसा होना होता है...

तो लो पढ़ो कि राजकुमार की मौत कैसे हुई – शाम को चार बजे राजकुमार अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था कि उसको अपनी छाती में कुछ घुटन महसूस हुई तो उसने अपने ताश के पत्ते पास में

बैठे एक दोस्त को दिये और उससे अपनी जगह खेलने के लिये कहा।

फिर वह किसी से बिना कुछ कहे उठ कर बाहर छत पर चला गया। वहॉ शाही निशान सूअर एक बहुत ही ऊॅचे डंडे पर लगा हुआ था। इस तरह के ये शाही निशान महलों और किले आदि सभी मुख्य मुख्य जगहों के ऊपर लगे हुए थे इसलिये इस सूअर की तरफ किसी ने ध्यान ही नहीं दिया।

उसी झंडे के डंडे के पास ही एक पलंग पड़ा था जिस पर बहुत ही मुलायम गद्दे और तकिये लगे हुए थे। यह पलंग राजकुमार के आराम के लिये लगाया गया था ताकि जब भी वह आराम करना चाहे तो वहॉ बाहर खुले में आराम कर सके।

जब वह अपने दोस्तों के साथ खेल खेल रहा था तो जब उसको छाती में कुछ घुटन सी हुई सो वह ताजा हवा के लिये बाहर आ गया और आ कर उस पलंग पर लेट गया।

ठीक पॉच बजे हवा का एक तेज़ झोंका आया और उसने उस झंडे वाले डंडे पर लगे लोहे के सूअर को ढीला कर के राजकुमार के ऊपर गिरा दिया जो उस पलंग पर सीधा लेटा हुआ था।

सूअर के खुर उसकी छाती और पेट में लगे और उसके दॉत उसके सिर और मुॅह में जा लगे। उसके शरीर से बहुत सारा खून बह गया और वह वहीं तुरन्त ही मर गया।

उस सूअर के गिरने की आवाज गद्दे में घुस गयी थी इसलिये वह आवाज किसी को सुनायी भी नहीं पड़ी।

और क्योंकि राजकुमार अक्सर छत पर जाया करता था और वहॉ खेल भी ज़ोरों पर चल रहा था किसी ने उसकी गैरहाजिरी ज़्यादा महसूस भी नहीं की।

कोई क्या कर सकता है जब जब जैसा होना होता है...

किस्मत की कुछ लोक कथाऐं

पुस्तकों से, महाकाव्यों से और कई धर्मों की दंत कथाऐं देने के बाद अब हम यहॉ कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनसे यह पता चलता है कि उन्होंने भी तकदीर बदलने की बहुत कोशिश की पर वे सब भी अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहे।

8 सूरज की बेटी[47]

किस्मत की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश के उसके पिसा शहर की लोक कथाओं से ली है। पिसा शहर का नाम तो तुमने सुना ही होगा। वहॉ की झुकती हुई मीनार दुनियॉ के आठ आश्चर्यों में से एक है।

एक बार एक राजा और एक रानी थे जिनके बहुत दिनों से कोई बच्चा नहीं था। कुछ दिनों बाद रानी को बच्चे की आशा हो गयी।

जब उनको यह पता चला कि अब उनके घर बच्चा आने वाला है तो उन्होंने कई ज्योतिषियों को यह जानने के लिये बुलाया कि वह लड़का होगा या लड़की। और वह किस तारे में पैदा होगा आदि आदि।

सितारे देख कर ज्योतिषी बोले — "यह बच्चा एक लड़की होगी और उसका भाग्य कहता है कि बीस साल की उम्र से पहले पहले वह सूरज को प्यारी होगी और उसकी बेटी की मॉ बनेगी।

---

[47] The Daughter of the Sun – a folktale from Italy from its Pisa area.
Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". 1980. Read most of its stories in Hindi by Sushma Gupta under the title "Italy Ki Lok Kathayen" in 7 parts. Write to the author to obtain their e-version.
[This story is also like "Pareekshit's Story" and "Varaah Mihir's Story"]

राजा और रानी यह सब जान कर बहुत परेशान हुए कि उनकी बेटी सूरज की बेटी की मॉ बनेगी। वह सूरज जो आसमान में रहता है और शादी नहीं कर सकता।

ऐसी बुरी किस्मत को दूर रखने के लिये उन्होंने एक इतनी ऊॅची मीनार बनवायी कि सूरज खुद भी उसकी तली तक न पहुॅच सके।

वह बच्ची पैदा होने के बाद से अपनी आया के साथ उस मीनार में तब तक के लिये बन्द कर दी गयी जब तक वह बीस साल की नहीं होती। सूरज भी तब तक उसको नहीं देख सकता था और न ही वह सूरज को देख सकती थी।

उस आया के अपनी भी एक बेटी थी जो राजा की बेटी के बराबर थी सो दोनों लड़कियॉ उस मीनार में एक साथ ही खेल खेल कर बड़ी होती रहीं।

एक दिन जब वे दोनों बीस साल की होने वाली थीं तो उनको लगा कि वे मीनार के बाहर की चीज़ों का आनन्द लें तो आया की बेटी बोली — "चलो एक कुर्सी के ऊपर दूसरी कुर्सी रख कर उस ऊॅची वाली खिड़की पर चढ़ते हैं। वहॉ से हम देख पायेंगे कि इस मीनार के बाहर क्या है।"

दोनों ने यह काम बहुत जल्दी कर लिया। वे एक के ऊपर एक कुर्सियॉ रख कर खिड़की तक पहुँच गयीं और उस खिड़की से बाहर झॉका – बड़े बड़े पेड़, बहती हुई नदी, आसमान में उड़ती हुई चिड़ियॉ, बादल और सूरज।

जैसे उन्होंने सूरज को देखा वैसे ही सूरज ने भी राजा की बेटी को देखा तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। उसने अपनी एक किरन को भेजा। और जैसे ही उस किरन ने राजा की बेटी को छुआ राजा की बेटी को बच्चे की आशा हो गयी – सूरज की बेटी।

समय आने पर सूरज की बेटी मीनार में पैदा हुई तो आया ने राजा के गुस्से के डर के मारे बच्ची को शाही कपड़ों में लपेटा और बीन्स के एक खेत में ले जा कर छोड़ आयी।

बहुत जल्दी ही जब राजा की बेटी बीस साल की हो गयी तो राजा ने यह सोचते हुए अपनी बेटी को मीनार में से निकाल लिया कि अब तो उसकी बेटी बीस साल की हो गयी है इसलिये अब सूरज से उसे कोई खतरा नहीं है।

पर उसको तो इस बात का ज़रा भी पता नहीं था कि वह अनहोनी तो पहले ही घट चुकी थी जिसकी वजह से उसको मीनार में रखा गया था।

जब जब जो जो होना होता है वह तो होता ही है... राजा की बेटी के सूरज की बेटी पैदा हो चुकी थी और बीन्स के खेत में पड़ी रो रही थी।

एक दूसरा राजा शिकार खेलने के लिये उस खेत से गुजर रहा था कि उसे किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनायी दी। उसने इधर उधर देखा तो एक बच्चा खेत में पड़ा रो रहा था।

खेत में पड़ी उस बच्ची के ऊपर उसको दया आ गयी तो उसने उस बच्ची को उठा लिया और उसे ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया।

उस राजा ने उस बच्ची के लिये एक आया रख ली और वह आया उसको पालने लगी। इस तरह से वह बच्ची उस दूसरे राजा के महल में उनकी अपनी बेटी की तरह पलने लगी।

उस राजा के अपना भी एक बेटा था जो उससे थोड़ा सा ही बड़ा था। वह भी उसी के साथ साथ बड़ा होने लगा।

राजा का बेटा और यह सूरज की बेटी दोनों साथ साथ बड़े होते होते एक दूसरे से प्रेम करने लगे।

राजा का बेटा उससे शादी करने का बड़ा इच्छुक था पर उसका पिता उस लड़की से उसकी शादी इसलिये नहीं करना चाहता था क्योंकि वह एक पायी गयी लड़की थी और उसके माता पिता का कोई पता नहीं था।

राजा ने उस लड़की को यह सोच कर अपने महल से दूर एक अकेले घर में भेज दिया कि इस तरह से उसका अपना बेटा शायद उसको भूल जायेगा।

पर राजा ने यह सपने में भी नहीं सोचा था कि वह सूरज की बेटी थी और उसके अन्दर कई जादुई ताकतें थीं जो आदमियों में नहीं होती थीं।

जैसे ही वह महल से चली गयी राजा ने अपने बेटे की शादी एक अच्छे राज घराने की एक लड़की से पक्की कर दी। शादी वाले दिन चीनी चढ़े बादाम[48] दुलहिन और दुलहे के सब रिश्तेदारों और दोस्तों को भेजे गये। वे बादाम सूरज की बेटी को भी भेजे गये।

जब दूतों ने सूरज की बेटी के घर का दरवाजा खटखटाया तो वह उसे खोलने आयी पर उसका तो सिर ही नहीं था।

वह बोली — "ओह अफसोस, मैं अपने बालों में कंघी कर रही थी तो मैंने अपना सिर मेज पर उतार कर रख दिया था। उसको तो मैं वहीं मेज पर रखा छोड़ आयी। मैं ज़रा जा कर अपना सिर ले आऊँ। अभी आयी।"

कह कर उसने दूतों को घर के अन्दर बुलाया, अपना सिर मेज पर से उठा कर लगाया और मुस्कुरायी और बोली — "अब मुझे यह बताओ कि मैं तुम्हें शादी की भेंट के लिये क्या दूँ।"

इतना कह कर वह दूतों को रसोईघर में ले गयी।

[48] Translated for the words "Glazed Almonds"

वहॉ जा कर उसने कहा — "ओवन खुल जाओ।" और ओवन खुल गया।

सूरज की बेटी दूतों को देख कर फिर मुस्कुरायी और फिर बोली — "लकड़ी ओवन में जाओ।" और लकड़ी उड़ कर ओवन में चली गयी।

वह फिर बोली — "ओवन तुम जल जाओ और जब तुम गर्म हो जाओ तो मुझे बुला लेना।"

कह कर वह दूतों से बोली — "अब बताओ क्या अच्छी खबर है?"

ये सब देख कर तो वे दूत आश्चर्य से हक्का बक्का रह गये और उनके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी। वे कुछ कहने के लिये शब्द ढूँढने लगे कि तभी ओवन की आवाज आयी — "मालकिन।"

सूरज की बेटी बोली —"मैं अभी आयी।" कह कर वह उस गर्म ओवन में सिर के बल घुस गयी और एक तैयार पाई[49] निकाल लायी।

उसको उन दूतों को देते हुए वह बोली — "यह पाई राजा के लिये शादी की दावत के लिये ले जाओ।"

ऑखें फाड़े और केवल फुसफुसाते हुए वे दूत वहॉ से वह पाई ले कर घर आ गये और

[49] Pie – any vegetable or fruit wrapped in a white flour dough sheet and baked. See the picture above.

राजा को आ कर सब बातें बतायीं पर वहाँ तो कोई उनकी बातों का विश्वास ही नहीं कर रहा था।

राजा के बेटे की दुलहिन उस लड़की से बहुत जलती थी क्योंकि हर आदमी जानता था कि राजा का बेटा पहले उसको प्यार करता था।

वह बोली — "उँह, यह तो कुछ भी नहीं। मैं जब अपने घर में रहती थी तो मैं भी ऐसे काम बहुत करती थी।"

राजा का बेटा बोला — "अच्छा, तो ज़रा फिर कुछ हमारे सामने भी तो करके दिखाओ।"

दुलहिन बोली — "हाँ हाँ लेकिन.... ।"

पर राजा का बेटा उसको खींच कर रसोईघर में ले गया।

दुलहिन बोली — "ओ लकड़ी, ओवन में जाओ।" पर लकड़ी तो ओवन में नहीं गयी। नौकरों ने उसमें लकड़ी अपने हाथ से रखी।

दुलहिन फिर बोली — "ओवन में आग जल जाओ।" पर ओवन तो ठंडा का ठंडा ही पड़ा रहा। उसमें तो आग अपने आप जली ही नहीं।

नौकरों ने उसको अपने हाथ से जलाया और जैसे ही वह गर्म हो गया तो उस घमंडी दुलहिन ने उसके अन्दर घुसने की जिद की। पर वह उसके पूरी तरह से अन्दर घुसने भी नहीं पायी थी कि वह उसकी तेज़ गर्मी से जल कर मर गयी।

कुछ समय बाद राजा के बेटे की दूसरी शादी की गयी।

उस दिन भी चीनी चढ़े बादाम दुलहिन और दुलहे के सब रिश्तेदारों और दोस्तों को भेजे गये। सो वे बादाम सूरज की बेटी को भी भेजे गये।

एक बार फिर दूतों ने जा कर सूरज की बेटी के घर का दरवाजा खटखटाया तो इस बार वह दरवाजा खोलने नहीं आयी बल्कि दीवार में से निकल कर आयी और उनका स्वागत किया।

वह बोली — "अफसोस, घर का दरवाजा आजकल अन्दर से खुलता ही नहीं। मुझे हमेशा ही दीवार में से हो कर बाहर आना पड़ता है और फिर दरवाजे को बाहर से ही खोलना पड़ता है।"

कह कर उसने घर का दरवाजा बाहर से खोला और उनको अन्दर ले गयी। उनको रसोईघर में ले जाते हुए वह बोली — "इस बार मैं शादी की भेंट के लिये क्या बनाऊँ।"

"लकड़ी ओवन में जाओ और जल जाओ।" और पल भर में ही लकड़ियाँ ओवन में चली गयीं और जल गयीं।

यह सब दूतों के सामने ही हो गया तो यह देख कर तो उनको ठंडा पसीना आ गया।

फिर वह बोली — "कड़ाही, आग के ऊपर जाओ। तेल कड़ाही में जाओ। और जब तुम गर्म हो जाओ तो मुझे बुला लेना।"

कुछ पल बाद ही आवाज आयी — "मालकिन, मैं तैयार हूँ।"

सूरज की बेटी बोली — "यह लो।" कह कर उसने अपने हाथ की दसों उँगलियाँ कड़ाही के गर्म तेल में डाल दीं। तुरन्त ही उसकी दसों उँगलियाँ बहुत सुन्दर दस तली हुई मछलियाँ बन गयीं। ऐसी सुन्दर मछलियाँ कभी किसी ने देखी नहीं थीं।

मछलियाँ निकालने के बाद उसकी उँगलियाँ फिर से वापस आ गयीं। सूरज की बेटी ने उन मछलियों को अपने हाथ से पत्तों में लपेटा और मुस्कुरा कर उनको उन दूतों को दे दिया।

यह नयी दुलहिन भी पहली वाली दुलहिन की तरह से इस लड़की से जलती थी। जब उसने उन दूतों से उस लड़की की मछलियाँ बनाने वाली कहानी सुनी तो वह बोली — "तुम लोग देखो कि मैं मछली कैसे तलती हूँ।"

दुलहे ने उसके कहे अनुसार चूल्हे पर कड़ाही रखी, उसमें तेल डाला और उसको खूब गर्म होने दिया। सूरज की बेटी की नकल करके उसने भी अपनी उँगलियाँ उस गर्म तेल में डाल दीं और उनकी जलन से वह मर गयी।

तब रानी माँ ने दूतों को आड़े लिया — "तुम लोगों की ऐसी कहानियों ने इस घर की कई दुलहिनों को मार डाला है। आगे से ऐसा कुछ नहीं करना।"

राजा और रानी ने फिर किसी तरह अपने बेटे की शादी एक तीसरी लड़की से करने के लिये तैयारी की तो एक बार फिर से दूत चीनी चढ़े बादाम ले कर सूरज की बेटी के पास गये।

वहॉ जा कर उन्होंने एक बार फिर उसके घर का दरवाजा खटखटाया तो वह बोली — "मैं यहॉ हूॅ ऊपर।" दूतों ने ऊपर देखा तो उसको हवा में लटके पाया।

वह बोली — "मैं ज़रा एक मकड़ी के जाले पर चढ़ कर सैर करने यहॉ चली आयी थी। मैं अभी नीचे आती हूॅ।"

कह कर वह जाले के सहारे सहारे नीचे आयी और दूतों से बादाम ले कर बोली — "इस बार तो मैं सचमुच ही नहीं जानती कि मुझे भेंट के लिये क्या करना चाहिये।"

कुछ देर सोचने के बाद वह बोली — "चाकू, इधर आओ।" चाकू उसके पास आ गया तो उसने उसको पकड़ लिया।

उस चाकू से उसने अपना एक कान काटा। उस कान में एक सुनहरी लेस लगी थी और वह लेस उसके सिर में से ऐसे निकल कर आ रही थी जैसे वह उसके दिमाग में से खुल खुल कर आ रही हो। वह उस लेस को खींचती रही खींचती रही जब तक कि वह लेस खत्म नहीं हो गयी।

फिर उसने अपना वह कटा हुआ कान अपने कान की जगह लगा लिया और उॅगलियों से उसे धीरे से दबा कर चिपका लिया। वह लेस उसने दूतों को दे दी और कहा कि वे यह भेंट उसकी तरफ से राजा के लिये ले जायें।

दूत उसको देख कर एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गये। जब उन्होंने उस लेस को राजा को दिया तो क्योंकि वह लेस बहुत सुन्दर थी कि वहॉ बैठा हर आदमी यह जानना चाहता था कि वह लेस कहॉ से आयी।

हालॉकि रानी मॉ ने उन दूतों को कुछ भी कहने से मना कर दिया था पर फिर भी उनको उसकी कहानी तो बतानी ही पड़ी।

सुनते ही नयी दुलहिन बोली — "इसमें क्या खास बात है। मैंने तो अपनी सारी पोशाकों पर इसी तरह से निकाली हुई लेस लगा रखी है।"

दुलहा बोला — "अच्छा? तो यह चाकू लो और फिर ज़रा हम भी तो देखें कि तुम यह कैसे करती हो?"

इस पर उस बेवकूफ लड़की ने अपना एक कान काट डाला पर उसमें से लेस निकलने की बजाय इतना सारा खून बहा कि वह वहीं मर गयी।

इस तरह राजा का बेटा अपनी पत्नियॉ खोता गया और उसका प्रेम उस सूरज की बेटी की तरफ बढ़ता गया। आखिर वह बीमार पड़ गया और कोई उसका इलाज नहीं कर सका क्योंकि अब न वह खाता था और न हॅसता था।

राजा ने अपने राज्य के कई बड़े बूढ़े जादूगरों को बुला भेजा तो उन्होंने राजा को सलाह दी कि उन्हें अपने बेटे को उस जौ का दलिया खिलाना चाहिये जो केवल एक घंटे के अन्दर बोया गया हो,

उगाया गया हो, तोड़ा गया हो और फिर दलिये में तैयार किया गया हो।

राजा तो यह सुन कर पागल सा हो गया क्योंकि ऐसा जौ तो किसी ने कभी सुना ही नहीं था जो केवल एक घंटे के अन्दर बोया गया हो, उगाया गया हो और तोड़ा गया हो। तो वह उसका दलिया कहॉ से बनायेगा।

आखिर राजा के दिमाग में उस लड़की का ख्याल आया जिसने पहले से ही इतने सारे आश्चर्य कर रखे थे। सो उसने उसको बुला भेजा।

सूरज की बेटी आयी और बोली — "हॉ मैं ऐसे जौ को जानती हूँ।" कह कर उसने बिजली की सी चमक के साथ एक घंटा बीतने से पहले ही जौ बोये, उगाये, काटे और उनका दलिया बना दिया।

उसने राजा से प्रार्थना की कि उस दलिये को वह खुद उसके बेटे के पास ले कर जाना चाहती है। राजा ने उसको इजाज़त दे दी। जब वह राजा के बेटे के कमरे में पहुँची तो वह अपने बिस्तर में ऑखें बन्द किये लेटा हुआ था।

यह दलिया बहुत ही बेस्वाद था सो जैसे ही उसने उसका एक चम्मच पिया उसने उसको तुरन्त ही थूक दिया। उस थूके हुए दलिये के कुछ कण उस लड़की की ऑख में जा पड़े।

वह तुरन्त ही बोली — "तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम दलिया सूरज की बेटी और एक राजा की धेवती[50] की ऑख में थूको?"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "क्या तुम सूरज की बेटी हो?"

"हॉ मैं सूरज की बेटी हूॅ।"

"और एक राजा की धेवती भी?"

"हॉ मैं एक राजा की धेवती भी हूॅ।"

"अरे, हम तो यहॉ यह सोचे बैठे थे कि तुम कोई पड़ी हुई लड़की हो। अगर ऐसा है कि तुम सूरज की बेटी हो और राजा की धेवती हो तो तुम हमारे बेटे से शादी कर सकती हो।"

"हॉ मैं बिल्कुल आपके बेटे से शादी कर सकती हूॅ।"

राजा का बेटा ठीक हो गया और उसकी शादी सूरज की बेटी से हो गयी। उस दिन के बाद से वह एक साधारण लड़की हो गयी और फिर उसके बाद से उसने कोई जादू नहीं किया।

[50] Daughter's daughter is called Dhevatee.

9 ग्वालिन रानी[51]

जो होना था हुआ की यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। एक बुढ़िया ने उनको बताया कि उनके या तो एक लड़का होगा जो घर छोड़ कर चला जायेगा और वे उसको कभी नहीं देख पायेंगे।

और या फिर वह एक बेटी ले लें जिसको वे 18 साल की उम्र तक रख पायेंगे – वह भी जब जबकि वे उस पर ठीक से नजर रख पाये तो वरना... ।

राजा और रानी ने कहा कि वे बेटी से ही सन्तुष्ट थे।

समय आने पर उनके घर एक बेटी हुई। राजा ने उसके लिये जमीन के नीचे एक बहुत ही सुन्दर महल बनवाया और वह उसी में रहने, पलने और बढ़ने लगी। उस लड़की को इस बात का ज़रा भी पता नहीं था कि जमीन के ऊपर भी कुछ है।

जब वह अठारह साल की होने को आयी तो उसने अपनी आया से प्रार्थना की कि वह उस महल का दरवाजा खोल दे। हालॉकि आया ने उसको दरवाजा खोलने के लिये काफी मना किया

[51] The Milkmaid Queen – a folktale from Legborn area, Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
Read most of its stories in Hindi by Sushma Gupta under the title "Italy Ki Lok Kathayen" in 7 parts.
Write to the author to obtain their e-version.

पर वह उससे जिद करती रही तो आखिर आया ने उसके लिये महल का दरवाजा खोल दिया।

लड़की दरवाजे से बाहर निकली तो अपने आपको एक बागीचे में पाया। सूरज देख कर उसको बहुत अच्छा लगा। उसने सूरज पहली बार देखा था। आसमान के बहुत सारे रंग पहली बार देखे थे। फूल और बड़े बड़े पंखों वाली चिड़ियें पहली बार देखी थीं कि वे कैसे नीचे उड़ उड़ कर आ रही थीं।

इतने में एक बड़े पंजे वाली चिड़िया आयी और उसको अपने पंजों में दबा कर उड़ा कर ले गयी। वह चिड़िया उड़ती गयी और उड़ती गयी और उड़ती गयी और जा कर खेत में बने एक मकान पर बैठ गयी।

उसने उस लड़की को उस घर की छत पर ले जा कर छोड़ दिया और उड़ गयी। उस समय दो किसान उस खेत में काम कर रहे थे – एक पिता और एक उसका बेटा। उन्होंने देखा कि उनके मकान के ऊपर कोई चमकीली सी चीज़ बैठी है।

सो उन्होंने एक सीढ़ी उठायी और छत पर चढ़ गये। वहॉ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वहॉ तो एक सुन्दर सी लड़की चमकीले हीरों का ताज पहने खड़ी है।

उस किसान का यही एक बेटा था जो उसके साथ काम कर रहा था और पॉच बेटियॉ थीं। उसकी पॉचों बेटियॉ ग्वालिनें थीं। उस

किसान ने उस लड़की को अपनी उन पॉचों बेटियों के साथ ही रख लिया और सब साथ साथ ही रहने लगे।

वह किसान हर महीने उस लड़की के ताज का एक हीरा बेच देता और उससे आये पैसों से परिवार का खर्च चलाता था।

जब लड़की के ताज के सब हीरे बिक गये तो लड़की किसान की पत्नी से बोली — "मैं आप लोगों से दूर नहीं रहना चाहती मॉ। आप इस देश के राजा के पास जायें और उनसे कहें कि वह आपको कढ़ाई करने के लिये कुछ दे दें।"

सो किसान की पत्नी उस देश के राजा के पास गयी और कढ़ाई के लिये कुछ मॉगा तो रानी बोली — "तुम अपनी ग्वालिन बेटियों से यह उम्मीद कैसे रखती हो कि वह कुछ कढ़ाई कर लेंगी?"

फिर भी रानी ने चतुराई से कढ़ाई करने के लिये उसको एक कैनवैस[52] दे दिया। किसान की पत्नी उस कैनवैस को ले कर घर आ गयी और उस कैनवैस को उसने उस लड़की को दे दिया।

लड़की ने उस कैनवैस पर इतनी सुन्दर कढ़ाई की कि उसको देख कर तो रानी की बोलती ही बन्द हो गयी।

[52] "Canvas" – canvas is a type of thick coarse cloth

रानी ने किसान की पत्नी को दो सोने के सिक्के और एक साफ करने वाला कपड़ा[53] दिया जो उस लड़की को काढ़ना था। कुछ दिन बाद किसान की पत्नी कढ़ाई किये गये सफाई करने वाले कपड़े को ले कर रानी के पास गयी तो रानी ने देखा कि वह कपड़ा तो बहुत ही सुन्दर कढ़ा हुआ था।

इस बार रानी ने उसको तीन सोने के सिक्के दिये और काढ़ने के लिये एक पुरानी फटी हुई स्कर्ट दे दी। जब वह स्कर्ट रानी को वापस दी गयी तो वह तो शाम को पहने जाने वाली पोशाक का ही एक हिस्सा लग रही थी।[54]

अबकी बार रानी से नहीं रहा गया। उसने उस किसान की पत्नी से पूछा — "तुम्हारी बेटी ने इतनी सुन्दर कढ़ाई करनी सीखी कहॉ से?"

किसान की पत्नी ने जवाब दिया — "एक नन[55] ने उसे यह सब सिखाया था।"

रानी बोली — "हो सकता है पर फिर भी यह किसी देहातिन का काम नहीं है। खैर कोई बात नहीं।

---

[53] Translated for the word "Dusting cloth"

[54] It was looking so nice that it looked like a part of the eveniong dress. Evening dress is supposed to be a good dress in western world.

[55] A nun is a member of a religious community of women, living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent. The term "nun" or "Sister" is applicable to both Eastern and Western Catholics, Orthodox Christians, Anglicans, Lutherans, Jains, Buddhists, Taoists, Hindus and some other religious traditions. See a picture of nun above.

मैं चाहूँगी कि वह मेरे बेटे की शादी की सारी पोशाकों पर कढ़ाई करे।"

यह सुन कर कि एक ग्वालिन उसकी शादी की पोशाकें काढ़ रही थी राजकुमार ने उस ग्वालिन से मिलने और उसको कढ़ाई करते देखने की इच्छा प्रगट की।

वह एक शरारती नौजवान था सो उसकी यह इच्छा ज़ोर पकड़ गयी। एक दिन वह अचानक उसके घर पहुँच गया और उसने पीछे से जा कर उसको चूम लिया।

इस पर उस लड़की की कढ़ाई करने वाली सुई उस राजकुमार की छाती में चुभ गयी और दिल तक जा पहुँची जिससे वह मर गया।

यह देख कर लड़की तो सन्न रह गयी पर इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसको पकड़ कर राजा की अदालत में ले जाया गया। उस अदालत में राजा की चार लड़कियाँ जज के रूप में थीं।

राजा की सबसे बड़ी लड़की ने इस लड़की के लिये मौत की सजा सुनायी। दूसरी लड़की ने उसको ज़िन्दगी भर के लिये जेल में डालने की सजा दी। तीसरी लड़की ने उसको बीस साल जेल में रहने की सजा सुनायी।

पर चौथी लड़की जो राजा की सबसे छोटी लड़की थी और जो सबसे ज़्यादा दयालु थी समझ गयी कि यह मौत तो उसका भाई

अपने लिये अपने आप ही ले कर आया था। उसको मारने में इस लड़की का कोई हाथ नहीं है।

उसने उस लड़की के लिये एक मीनार में आठ साल के लिये बन्द करने की सलाह दी। और साथ में उसने यह भी कहा कि राजकुमार का शरीर हमेशा उसके सामने रखा रहना चाहिये ताकि वह उसको देख देख कर पछताती रहे।

सबसे छोटी लड़की की बात मान ली गयी और उस ग्वालिन लड़की को एक मीनार में बन्द कर दिया गया। जब वह मीनार की तरफ ले जायी जा रही थी तो राजा की सबसे छोटी लड़की जिसने उसको यह सजा दी थी उसके कान में फुसफुसायी — "तुम डरना नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

राजा की बेटी अपनी बात की सच्ची थी। वह उस ग्वालिन कैदी को खाने के लिये रोज शाही रसोई के बढ़िया बढ़िया पकवान भेजती रही।

जब उस ग्वालिन को मीनार में कैद हुए तीन साल हो गये तो मीनार के पास एक दिन फिर से वही बड़े पंखों वाली चिड़िया प्रगट हुई जो उस लड़की को उसके जमीन के अन्दर वाले महल से उठा कर लायी थी। उसने मीनार की चोटी पर एक घोंसला बनाया और वहाँ दस अंडे दिये। उन दस अंडों में से दस बच्चे निकले।

वह कैदी ग्वालिन उस चिड़िया से रोज कहती — "चिड़िया ओ चिड़िया, जैसे तुम मुझे मेरे घर से बाहर निकाल कर लायी थीं उसी तरह तुम मुझे यहॉ से भी बाहर निकालो।"

मीनार के पास ही एक और महल था जिसमें राजा की तीनों बड़ी वाली लड़कियॉ रहती थीं। एक दिन जब वे खिड़की पर खड़ी थीं तो उन्होंने उस ग्वालिन के शब्द सुन लिये और राजा को जा कर उनको बता दिया।

राजा ने हुक्म दिया कि उस चिड़िया और उसके बच्चों को उस मीनार से नीचे फेंक दिया जाये ताकि वे सब जमीन पर गिरते ही मर जायें।

चौकीदारों ने उस चिड़िया का घोंसला उसके बच्चों के साथ साथ उस मीनार से नीचे फेंक दिया। नीचे गिरते ही उस चिड़िया के सारे बच्चे मर गये।

उसी शाम उस ग्वालिन ने उस बड़ी चिड़िया को अपने मरे हुए बच्चों के ऊपर उड़ते हुए देखा। उसकी चोंच मे एक खास किस्म की घास का गुच्छा था। उसने उस घास के गुच्छे को उन मरे हुए बच्चों के ऊपर फेरा और उसके सब बच्चे ज़िन्दा हो गये।

यह देख कर ग्वालिन को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उस चिड़िया से बोली — "मुझे भी थोड़ी सी यह जादू की घास ला दो न।"

यह सुन कर वह चिड़िया वहॉ से उड़ गयी और अपने पंखों में वैसी ही थोड़ी सी घास ले कर वापस आ गयी। उस लड़की ने वह घास उससे ले ली और राजकुमार के शरीर को उस घास से सहलाया। धीरे धीरे राजकुमार उठ बैठा और ज़िन्दा हो गया।

यह कहना मुश्किल है कि उन दोनों में से कौन ज़्यादा खुश था, ग्वालिन या राजकुमार। पर ग्वालिन ने उसको गले से लगा लिया और वे काफी देर तक एक दूसरे से हॅस हॅस कर बातें करते रहे।

हालॉकि उन्होंने यह खुशी की खबर किसी को नहीं बतायी पर फिर भी राजा की सबसे छोटी बेटी को यह पता चल गया कि उसका भाई ज़िन्दा हो गया है और उसने उस दिन वहॉ बहुत सारे स्वादिष्ट खाने भिजवाये और फिर वह वहॉ रोज रोज वैसे ही खाने भेजती रही।

उसके भाई ने अपनी बहिन को एक गिटार भी भिजवाने के लिये कहा तो उसने उसको एक गिटार भी भिजवा दिया।

अब क्या था ग्वालिन और राजकुमार उस मीनार के ऊपरी हिस्से में गा बजा कर अपने दिन गुजारने लगे। पास वाले महल में से जिसमें वे तीन लड़कियॉ रहती थीं उस मीनार से गाने और गिटार बजाने की आवाज सुनी तो उन्होंने सोचा कि वे वहॉ जा कर देखें कि वहॉ क्या हो रहा है।

पर जब वे तीनों लड़कियॉ वहा पहुँची तो देखा कि राजकुमार अपने ताबूत में पहले की तरह से लेटा हुआ था और वह लड़की भी दुखी सी बैठी थी सो वे तीनों बहिनें बेवकूफों की तरह से अपना सा मुँह ले कर वहॉ से वापस लौट आयीं। पर उस रात उन्होंने मीनार से आती गाने बजाने की आवाज फिर से सुनी।

वे अपने पिता राजा के पीछे पड़ी रहीं कि उस मीनार में कुछ गड़बड़ हो रही थी इसलिये उस लड़की को किसी दूसरी जगह भिजवा दिया जाये। और उस ग्वालिन को उन्होंने एक दूसरी जेल में भिजवा ही दिया।

जब चौकीदार उसको लेने के लिये वहॉ गये तो उन्होंने देखा कि वह लड़की तो राजकुमार की बॉहों में बॉहें डाल कर बैठी हुई है। यह बात चौकीदारों ने जा कर राजा से कही तो राजा, रानी और उनकी चारों बेटियॉ वहॉ राजकुमार को ज़िन्दा देखने के लिये आये।

उन्होंने देखा कि राजकुमार तो सचमुच ज़िन्दा था और तन्दुरुस्त था। यह देख कर तो सारे शाही परिवार की बोलती बन्द हो गयी। राजकुमार बोला — "पिता जी, मॉ, बहिनों, मैं आप सबको अपनी पत्नी से मिलाना चाहता हूँ।"

उसकी सबसे छोटी बहिन ने ताली बजायी पर उसकी दूसरी तीनों बहिनों को एक ग्वालिन को अपनी भाभी बनाने का विचार कुछ जमा नहीं।

जब वे उसको बिल्कुल ही नहीं सह सकीं तो उन्होंने उसकी हॅसी उड़ानी शुरू कर दी और उसका अपमान करना शुरू कर दिया।

राजा ने अपने बेटे की शादी उस ग्वालिन के साथ तय कर दी और शादी का दिन पास आने लगा। शादी से पहले दुलहिन ने राजकुमार की बहिनों से कहा — "अब मुझे घर जाना चाहिये और अपने माता पिता से मिलना चाहिये। मुझे बताओ कि मैं तुम लोगों के लिये वहॉ से क्या क्या भेंट ले कर आऊॅ।"

सबसे बड़ी लड़की ने कहा — "एक बोतल दूध।"

दूसरी लड़की बोली — "थोड़ी सी रिकोटा चीज़[56]।"

तीसरी लड़की बोली — "मुझे तो एक टोकरी लहसुन चाहिये।"

यह सुन कर वह ग्वालिन अपने घर चली गयी पर वह खेत पर नहीं गयी। अबकी बार वह अपने असली माता पिता के पास गयी जिन्होंने उसको ज़मीन के नीचे उसके लिये महल बनवा कर उसमें उसको **18** साल तक कैद रखा था।

एक हफ्ते बाद वह एक बहुत सुन्दर गाड़ी में जिसको सफेद घोड़े खींच रहे थे दुलहे के घर लौटी। उसको इतनी बढ़िया शाही गाड़ी में बैठा देख कर उसकी तीनों बड़ी ननदों

[56] It is kind of processed Paneer.

के मुँह से एक साथ ही निकला — "अरे यह ग्वालिन एक शाही गाड़ी में?"

वह ग्वालिन गाड़ी में से उनकी भेंटें ले कर बाहर निकली। उसने अपनी सबसे बड़ी ननद को एक बोतल दूध दिया। यह दूध एक चाँदी की बोतल में था और यह बोतल एक सुनहरे कपड़े में लिपटी हुई थी।

दूसरी ननद को उसने रिकोटा चीज़ दी। वह सोने के डिब्बे में रखी थी और तीसरी ननद को उसने एक टोकरी लहसुन दी। उस लहसुन की कलियाँ हीरे की और पत्ते पन्ने के थे।

उसकी सबसे छोटी ननद ने पूछा — "और तुम मेरे लिये क्या ले कर आयीं भाभी जिसने हमेशा तुम्हें इतना प्यार किया?"

ग्वालिन ने गाड़ी का दरवाजा खोला और उसमें से उसने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान को बाहर निकाला। उसको उसने अपनी सबसे छोटी ननद के हवाले करते हुए उससे कहा — "यह मेरा छोटा भाई है जो मेरे वहाँ से आने के बाद पैदा हुआ था। इसे मैं तुम्हें सौंपती हूँ।"

ग्वालिन की शादी उस राजकुमार से हो गयी और राजकुमार की बहिन की शादी उसके बाद ग्वालिन के भाई से हो गयी। सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

इस तरह राजा किसी तरह अपनी बेटी को भागने से नहीं बचा सका।

10 जादूगरनी का सिर[57]

जो होना था की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार इटली देश में एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। वह हमेशा भगवान से यही प्रार्थना करता रहता था कि वह उसको कोई बच्चा दे दे पर उसकी सारी प्रार्थनाऐं बेकार जा रही थीं।

एक दिन जब वह रोज की तरह से प्रार्थना करने गया तो उसने एक आवाज सुनी — "क्या तुमको एक लड़का चाहिये जो मर जाये या एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

यह सुन कर तो वह सोच ही नहीं सका कि वह इस बात का क्या जवाब दे सो वह चुप रह गया। वह घर गया और अपने सारे दरबारियों को बुलाया और उनसे पूछा कि उसको इस बात का क्या जवाब देना चाहिये। उसको क्या मॉगना चाहिये।

वे बोले — "अगर लड़के को मरना है तो यह तो वैसा ही है जैसे किसी बच्चे का न होना इसलिये आपको लड़की ही मॉगनी चाहिये।

---

[57] The Sorcerer's Head – a folktale from Italy from its Upper Val d'Arno area.
Adapted from the book : "Italian Folktales" by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Read most of its stories in Hindi by Sushma Gupta under the title "Italy Ki Lok Kathayen" in 7 parts. Write to the author to obtain their e-version.

क्योंकि अगर वह भाग भी गयी तो भी वह कम से कम ज़िन्दा तो रहेगी और आप उसे कभी कभी देख तो सकेंगे। और फिर उसको हम ताले में बन्द कर के भी रख सकते हैं ताकि वह कहीं भागे ही नहीं।"

सो राजा फिर से अपनी प्रार्थना की जगह वापस गया और प्रार्थना की। उसने फिर वही आवाज सुनी — "क्या तुमको एक लड़का चाहिये जो मर जाये या एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

इस बार उसने जवाब दिया — "मुझे एक लड़की चाहिये जो भाग जाये।"

समय आने पर उसकी पत्नी ने एक सुन्दर बेटी को जन्म दिया। शहर से कई मील दूर एक बागीचा था जिसके बीच एक महल था। उसके भाग जाने के डर से वह अपनी बेटी को वहॉ ले गया और एक आया के साथ उसको वहॉ रख दिया।

राजा और रानी अक्सर उसको मिलने के लिये वहॉ चले जाते थे ताकि वह लड़की शहर के बारे में सोच ही न सके और वहॉ से भाग भी न सके।

जब राजकुमारी सोलह साल की हो गयी तो राजा जिओना[58] का बेटा उधर की तरफ आ निकला। उसने राजकुमारी को देखा तो

[58] King Giona

उसको उससे प्यार हो गया। उसने उसकी आया को रिश्वत में बहुत सारे पैसे दिये और उससे उस महल में घुसने की इजाज़त ले ली।

दोनों को एक दूसरे से प्रेम हो गया था सो दोनों ने खुशी खुशी शादी कर ली। दोनों की यह शादी दोनों के माता पिता को बिना पता चले ही हो गयी।

नौ महीने बाद राजकुमारी ने एक सुन्दर से बेटे को जन्म दिया। सो अगली बार जब राजा अपनी बेटी से मिलने आया तो पहले वह उसकी आया से मिला। उसने उससे पूछा कि उसकी बेटी कैसी थी।

आया बोली — "बहुत अच्छी है। क्या आप विश्वास करेंगे कि उसके अभी अभी बेटा हुआ है।"

यह सुन कर तो राजा ने उससे कोई भी रिश्ता रखने से मना कर दिया। इस तरह वह राजकुमारी अपने पति और बेटे के साथ उसी महल में अकेली रहती रही।

पन्द्रह साल का हो जाने के बाद भी उसके बेटे ने अपने नाना को नहीं देखा था तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मैं अपने नाना से मिलना चाहता हूँ।"

उसकी मॉ ने कहा — "हॉ हॉ बेटा क्यों नहीं। जाओ तुम उनके महल में जाओ और उनसे मिल लो।"

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और एक घोड़े पर सवार हो कर और काफी सारा पैसा ले कर अपने नाना से मिलने चल दिया।

जब वह वहॉ पहुँचा तो उसके नाना ने उससे कोई प्यार दिखाना तो दूर बल्कि उसकी तरफ देखा भी नहीं और उससे बोला भी नहीं।

इतना खराब स्वागत देख कर वह लड़का तीन चार महीने बाद अपने नाना से बोला — "आप मुझसे इतने नाराज क्यों हैं नाना जी कि आप मुझसे बोलते भी नहीं हैं।"

राजा बोला — "जब तक तुम जंगल में रहने वाली जादूगरनी का सिर काट कर नहीं लाओगे मैं तुमसे नहीं बोलूँगा।"

राजकुमार बोला — "नाना जी, मैं केवल आपके लिये ही वहॉ जाऊँगा और उस जादूगरनी का सिर काट कर लाऊँगा।"

राजा बोला — "यही तो मैं भी चाहता हूँ कि तुम जाओ और उस जादूगरनी का सिर काट कर लाओ।"

"ठीक है।"

यह जादूगरनी एक ऐसी जादूगरनी थी कि जो कोई उसको देखता था वह पत्थर का हो जाता था और यह बात वह राजा जानता था कि उसके धेवते[59] के साथ भी यही होने वाला है यानी जैसे ही वह उसकी तरफ देखेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।

इसी लिये उसने उससे यह कहा भी था कि वह उस जादूगरनी का सिर काट कर लाये।

उस लड़के ने एक बहुत ही बढ़िया घोड़ा चुना, काफी सारा पैसा लिया और उस जादूगरनी का सिर लाने चल दिया।

[59] Translated for the word "Grandson" – daughter's son or "son's son". Here it means daughter's son.

रास्ते में उसको एक बूढ़ा मिला। उसने उस लड़के से पूछा — "मेरे बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जादूगरनी के पास, उसका सिर लाने।"

"ओह मेरे भगवान। उसके लिये तो तुमको एक ऐसा घोड़ा चाहिये जो उड़ सके। क्योंकि वहाँ पहुँचने के लिये तुमको एक पहाड़ के ऊपर से जाना पड़ेगा जिस पर बहुत सारे शेर चीते रहते हैं। अगर तुम वहाँ से इस घोड़े पर जाओगे तो वे तुमको और तुम्हारे घोड़े दोनों को खा जायेंगे।"

लड़का बोला — "पर ऐसा घोड़ा मुझे मिलेगा कहाँ से?"

बूढ़ा बोला — "रुको, मैं तुमको एक ऐसा घोड़ा ला कर देता हूँ जो उड़ सकता है।" इतना कह कर वह गायब हो गया और जब वह लौटा तो उसके साथ एक बहुत ही शानदार घोड़ा था।

वह बूढ़ा बोला — "अब तुम मेरी बात सुनो। तुम सीधे सीधे उस जादूगरनी को नहीं देख सकते क्योंकि अगर तुमने उसको सीधे देखा तो तुम पत्थर के हो जाओगे। तुमको उसे एक शीशे में देखना पड़ेगा। वह भी तुमको मैं बताता हूँ कि वह शीशा तुम्हें कैसे मिलेगा।

तुम यहाँ से इधर चले जाओ और थोड़ी दूर जाने के बाद तुमको एक संगमरमर का महल दिखायी देगा और एक बागीचा दिखायी देगा जिसमें खूबानी[60] के फूल वाले पेड़ लगे होंगे।

वहाँ तुमको दो अन्धी स्त्रियाँ मिलेंगी। उन दोनों स्त्रियों के पास केवल एक ही आँख है। वे दोनों ही उस एक आँख को आपस में बाँट कर इस्तेमाल करती हैं। उन्हीं स्त्रियों के पास वह शीशा है जो तुमको उस जादूगरनी को देखने के लिये चाहिये।

वह जादूगरनी अक्सर अपना समय एक घास के मैदान में गुजारती है जिसमें बहुत सारे फूल लगे हैं। उन फूलों की खुशबू ही तुम्हारे ऊपर जादू डालने के लिये काफी है सो उस खुशबू से ज़रा बच कर रहना और ध्यान रहे कि उस जादूगरनी को केवल शीशे में ही देखना नहीं तो तुम पत्थर के हो जाओगे।"

लड़के ने उस बूढ़े को धन्यवाद दिया और उसका उड़ने वाला घोड़ा ले कर चल दिया। वह उस पहाड़ के ऊपर से उड़ा जहाँ बहुत सारे शेर चीते और साँप रहते थे और जो उसको खाने के लिये तैयार थे।

वे उसको खाने के लिये दौड़े भी पर वह क्योंकि बहुत ऊँचा उड़ रहा था इसलिये वे उसका कुछ बिगाड़ नहीं सके। पहाड़ को पीछे छोड़ता हुआ वह उड़ा जा रहा था, उड़ा जा रहा था कि दूर

[60] Apricot flowers. See its picture above.

उसको एक संगमरमर का महल दिखायी दिया। उसने सोचा कि शायद यही उन अन्धी स्त्रियों का महल होगा।

इन दोनों अन्धी स्त्रियों के बीच में एक ही ऑख थी और इस ऑख को वे एक दूसरे को दे ले कर इस्तेमाल करती रहती थीं।

यह लड़का उस संगमरमर के महल के पास पहुँच तो गया पर महल का दरवाजा खटखटाने की हिम्मत नहीं कर सका सो वह बागीचे में ही टहलता रहा। वे स्त्रियॉ अपना शाम का खाना खा रही थीं। जब वे अपना खाना खा चुकीं तो वे भी बागीचे में टहलने के लिये आ गयीं।

उस समय वह एक पेड़ पर चढ़ गया ताकि वे स्त्रियॉ उसको देख न सकें। वे बातें करती हुई घूम रही थीं। जिस स्त्री के पास ऑख थी उसने ऊपर की तरफ मुँह उठा कर देखा और बोली — "तुमको यह महल देखना चाहिये जो राजा ने अभी नया नया बनवाया है।"

दूसरी बोली — "अच्छा? तो तुम मुझे ऑख दो तो मैं भी देखूँ।"

पहली वाली ने उसको ऑख दे दी। पर जैसे ही उसने हाथ बढ़ा कर ऑख देनी चाही तो लड़के ने पेड़ से नीचे झुक कर उसको बीच में ही ले लिया।

दूसरी बोली — "तो तुम मुझको ऑख नहीं देना चाहतीं। तुम सारा कुछ अपने आप ही देख लेना चाहती हो।"

"पर मैने तुमको ऑख दी तो।"

"नहीं, तुमने तो नहीं दी।"

"मैंने अभी तो तुम्हारे हाथ में रखी।"

वे इसी तरह आपस में बहस करती ही रहीं जब तक कि उनको यह पता नहीं चल गया कि उनमें से किसी की भी गलती नहीं थी और इस समय ऑख उन दोनों में से किसी के पास भी नहीं थी।

तब वे ज़ोर से बोलीं — "ऐसा लगता है कि हमारे बागीचे में कोई और है जिसने हमारी ऑख ले ली है। और अगर वह आदमी यहीं है तो मेहरबानी कर के वह हमारी ऑख हमें दे दे क्योंकि हम दोनों के पास केवल एक ही ऑख है।

और अगर उसे हमसे हमारी ऑख के बदले में कुछ चाहिये तो वह हमको यह भी बता दे कि उसको हमसे क्या चाहिये हम अपनी ऑख के बदले उसको वह दे देंगे।"

तब वह लड़का पेड़ पर से नीचे उतर आया और बोला — "मेरे पास है आपकी ऑख। आप मुझे उसके बदले में वह शीशा दे दीजिये जिसमें मैं जादूगरनी को देख सकूँ क्योंकि मुझे जादूगरनी को मारना है।"

उन अन्धी स्त्रियों ने कहा — "खुशी से। पर पहले तुम हमारी ऑख तो वापस करो तभी तो हम वह शीशा तुमको ढूँढ कर दे सकेंगे।"

उस लड़के ने उनकी ऑख वापस कर दी। उनमें से एक स्त्री ने अपने ऑख लगायी और दोनों महल में चली गयीं। कुछ देर में ही वे एक शीशा ले कर वापस लौटीं।

उन्होंने वह शीशा उस लड़के को दे दिया और वह लड़का शीशा ले कर अपनी आगे की यात्रा पर चल दिया।

वह फिर चलता रहा, चलता रहा जब तक हवा में फूलों की खुशबू नहीं भर गयी। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया फूलों की खुशबू और तेज़ और और तेज़ होती चली गयी।

वह अब घास के मैदान में बने एक महल के पास पहुॅच गया था। उस मैदान में फूल ही फूल लगे हुए थे वह जादूगरनी अपने घास के मैदान में घूम रही थी। उस लड़के ने अपना घोड़ा थोड़ा पीछे किया और उस जादूगरनी की तरफ पीठ कर के उसको शीशे में देखा।

जादूगरनी को अपनी ताकत पर बहुत विश्वास था कि उसको देखते ही लोग पत्थर बन जायेंगे और अपनी इसी ताकत के भरोसे पर वह किसी से बच कर कहीं भागने की कोशिश भी नहीं करती थी और इसी लिये अभी भी वह कहीं गयी भी नहीं। वहीं बागीचे में ही घूमती रही।

उसको वहीं घूमते देख कर उसको शीशे में देखते हुए वह लड़का उसके पास तक चला आया और अपनी तलवार घुमा कर चलाते हुए उसका सिर काट लिया।

उसके सिर से थोड़ा सा खून निकला जो जमीन पर गिरते ही सॉपों में बदल गया। उस लड़के ने शीशे में देखते हुए ही वह सिर एक थैले में रखा और उड़ते घोड़े को धन्यवाद दे कर वह उसके ऊपर सवार हो कर तुरन्त ही वहॉ से उड़ चला।

घर लौटने के लिये उसने दूसरा रास्ता लिया। वह एक बन्दरगाह से गुजरा। समुद्र के पास ही एक चैपल[61] था। वह लड़का उस चैपल में चला गया तो वहॉ उसको एक सुन्दर सी लड़की काले कपड़े पहने रोती हुई दिखायी दी।

जैसे ही उसने उस लड़के को देखा तो चिल्लायी — "चले जाओ यहॉ से चले जाओ। यहॉ अगर ड्रैगन[62] आ गया तो वह तुमको खा जायेगा।

वह रोज एक ज़िन्दा आदमी खाता है। आज क्योंकि मेरी बारी है इसलिये मैं यहॉ उसका इन्तजार कर रही हूॅ। पर तुम यहॉ से चले जाओ।"

लड़के ने उसको धीरज बॅधाया — "देखो तुम घबराओ नहीं और रोओ भी नहीं। मैं तुमको उस ड्रैगन से बचाऊॅगा।"

---

[61] Chapel – small church. A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.

[62] Dragon – is a mythical winged serpent and depicted in various designa in various cultures. Above is its picture as depicted typically in Europe.

लड़की रोते रोते बोली — "यह नामुमकिन है। उस जैसे ड्रैगन को मारना नामुमकिन है।"

लड़का फिर उसको तसल्ली देते हुए बोला — "तुम डरो नहीं और आओ मेरे घोड़े पर बैठ जाओ।" कह कर उस लड़के ने उस लड़की को अपने घोड़े पर बिठा लिया।

उसी समय पानी में छपाकों की आवाज सुनायी दी तो लड़के ने उस लड़की से अपनी ऑखें बन्द करने के लिये कहा और उसने खुद भी अपनी ऑखें बन्द कर के थैले से जादूगरनी का सिर निकाल लिया।

जैसे ही ड्रैगन ने पानी में से अपना सिर बाहर निकाला तो उसको जादूगरनी का सिर दिखायी दिया। वह उसको देख कर तुरन्त ही पत्थर का हो गया और समुद्र की तली में डूब गया।

यह लड़की तो एक राजा की बेटी थी। सो इस लड़की को ड्रैगन से बचा कर वह लड़का उसको उसके माता पिता के पास ले गया। राजा और रानी दोनों ही अपनी बेटी को ज़िन्दा और सही सलामत देख कर बहुत खुश हुए।

इसके बदले में राजा ने अपनी बेटी की शादी उस लड़के से करने का वायदा किया और अगर वह उसके पास रहा तो उसको अपना वारिस बनाने का भी वायदा किया।

उस लड़के ने राजकुमारी को तो ले लिया पर उसके राज्य के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वह तो खुद

ही अपने राज्य का राजा था और उसको वहॉ वापस लौटना था। राजकुमारी को ले कर वह अपने नाना के पास पहुँच गया।

राजा अपने धेवते को ज़िन्दा वापस आया देख कर आश्चर्य चकित भी हुआ और साथ ही कुछ दुखी भी हुआ।

लड़का बोला — "नाना जी, आप यही चाहते थे न कि मैं जाऊँ और जादूगरनी का सिर काट कर लाऊँ। सो देखिये मैं उसका सिर काट कर ले आया हूँ।"

इतना कह कर उसने अपनी ऑखें बन्द कर के उस जादूगरनी का सिर थैले से निकाला और राजा के सामने कर दिया। जैसे ही राजा ने उसका सिर देखा वह पत्थर का हो गया।

उसके बाद वह लड़का अपने माता पिता के पास चला गया। वहॉ से उन सबको ले कर वह अपने नाना के राज्य में लौट आये और अपने नाना के बाद वह लड़का वहॉ का राजा बन गया।

उस राजकुमारी से उसकी शादी हो गयी और वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

11 इस्मेलियन सौदागर[63]

जो होना था हो के रहा की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कथा में एक राजा अपनी हर कोशिश के बावजूद अपनी बेटी की शादी एक गरीब आदमी के बेटे से करने से नहीं रोक पाता।

एक बार एक राजा अपने आदमियों के साथ शिकार खेलने गया तो कुछ ही देर में आसमान में बादल घिर आये और भारी बारिश होने लगी। बारिश से बचने के लिये लोग चारों तरफ भागने लगे।

उस बारिश में राजा रास्ता भूल गया। उसको एक अकेला मकान दिखायी दे गया तो वह उस मकान में शरण लेने के लिये उधर की तरफ चल पड़ा।

उस मकान में एक बूढ़ा रहता था। राजा ने उस बूढ़े से पूछा — "क्या आप मुझे रात भर के लिये यहॉ शरण देंगे?"

बूढ़ा बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आइये मैजेस्टी, अन्दर आ जाइये और आग के पास बैठिये। थोड़ा गर्म होइये और अपने आपको सुखाइये।"

---

[63] Ismailian Merchant – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Read most of its stories in Hindi by Sushma Gupta under the title "Italy Ki Lok Kathayen" in 7 parts. Write to the author to obtain their e-version.

राजा ने अपने गीले कपड़े खूँटी पर टाँग दिये और वहाँ पड़े एक काउच पर लेट गया। कुछ ही देर में वह सो गया।

रात को किसी समय उसकी आँख खुल गयी तो उसने उस बूढ़े को किसी से बात करते हुए सुना। उसने उस बूढ़े को घर भर में ढूँढा पर जब वह उसको घर में कहीं नहीं मिला तो वह दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसने बाहर देखा तो आसमान तो साफ पड़ा था और आसमान में तारे चमक रहे थे। दरवाजे की सीढ़ियों पर वह बूढ़ा अकेला बैठा हुआ था।

राजा ने उससे पूछा — "ओ भले आदमी, तुम अभी अभी किससे बातें कर रहे थे?"

बूढ़ा बोला — "मैं ग्रहों[64] से बातें कर रहा था।"

राजा ने फिर पूछा — "ग्रहों से तुम क्या कह रहे थे?"

बूढ़ा बोला — "मैं उनको अपने लिये अच्छी किस्मत लाने के लिये धन्यवाद दे रहा था।"

"क्या अच्छी किस्मत?"

बूढ़ा बोला — "यही कि उन्होंने मेरे ऊपर कितनी मेहरबानी की है कि आज की रात उन्होंने मेरी पत्नी को एक बेटा दिया है। और आपके ऊपर भी कि उन्होंने आपकी पत्नी को एक बेटी दी है। जब मेरा बेटा बड़ा हो जायेगा तो वह आपकी बेटी से शादी कर लेगा।"

[64] Translated for the word "Planets". Planets are the Sun, the Moon, Jupiter, Mercury etc.

राजा को यह सुन कर गुस्सा आ गया क्योंकि यह तो वह सोच ही नहीं सकता था कि अगर आज की रात उसके कोई बेटी हुई भी है तो वह उसकी शादी इस गरीब बूढ़े के बेटे से कर देगा।

वह गुस्से में बोला — "ओ नीच जात। यह सब बेकार की बात मुझसे करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? तुमको इसकी सजा मिलेगी।"

उसने कपड़े पहने और सुबह होते ही अपने महल चला गया।

रास्ते में उसको अपने नाइट्स[65] और नौकर मिले जो उसको ढूँढने के लिये निकले हुए थे। वे बोले — "योर मैजेस्टी, आपके लिये एक बहुत ही अच्छी खबर है। कल रात रानी जी ने एक बेटी को जन्म दिया है।"

राजा तुरन्त ही अपने महल की तरफ चल दिया। जैसे ही वह अपने घोड़े से उतरा तो उसके दरबारियों ने उसे घेर लिया और उसको बताया कि उसके बेटी हुई है। जब वह अन्दर पहुँचा तो आयाओं ने उसको उसकी बेटी दिखायी।

बच्ची को देखते ही उसने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी कि कल रात जितने भी लड़के पैदा हुए हों उनको ढूँढ ढूँढ कर मार दिया जाये। उसके सिपाही तुरन्त ही शहर में गये और एक घंटे में ही सारे शहर को छान मारा।

---

[65] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

उनको केवल एक ही लड़का मिला जो कल रात पैदा हुआ था। उन्होंने उसको उसकी मॉ से छीना और राजा के हुक्म से उसको जंगल ले गये।

वे दो सिपाही थे और जैसे ही उन्होंने उस बच्चे को मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो उनके दिल में दया आ गयी। उन्होंने सोचा कि "क्या हमको सचमुच में इस भोले भाले बच्चे को मारना चाहिये जो बेचारा अभी केवल एक दिन का ही है।

यहॉ यह कुत्ता है। हम इस कुत्ते को मार देते हैं और इसका खून उस बच्चे के कपड़ों पर लगा कर राजा के पास ले चलते हैं। और इस बच्चे को भगवान की दया पर यहीं छोड़े जाते हैं।"

उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने कुत्ते को मार कर उसका खून बच्चे के कपड़ों पर लगाया और उसके कपड़े राजा के पास ले गये और बच्चे को वही जंगल में पड़ा छोड़ दिया। बच्चा जंगल में पड़ा चिल्लाता रहा।

एक इस्मेलियन सौदागर जियूमैन्टो[66] वहॉ से अपना सामान बेचने के लिये उधर से गुजर रहा था कि उसने किसी बच्चे की रोने की आवाज सुनी। वह उधर गया तो उसको झाड़ियों में पड़ा एक बच्चा मिला। उसने उसको उठा लिया, चुप किया और घर ले जा कर अपनी पत्नी को दे दिया।

[66] Giumento – the name of the Ismailian merchant

घर पहुँच कर वह अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, आज मैं तुम्हारे लिये पहली बार कुछ ऐसी चीज़ ले कर आया हूँ जो मैंने ख़रीदी नहीं है – एक छोटा सा बच्चा। यह मुझे जंगल में पड़ा मिला था। हमारे अपने तो बच्चे तो हैं नहीं पर भगवान ने हमें यह बच्चा दे दिया।"

उन्होंने उस बच्चे को बहुत प्यार से बीस साल तक पाला पोसा। वह बच्चा भी तब तक यही सोचता रहा कि वह उस सौदागर का ही बेटा था।

उस बच्चे की बीसवीं सालगिरह पर उस सौदागर ने उससे कहा — "मेरे बेटे, अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ और अब तुम भी आदमी बन गये हो सो अब तुम मेरे हिसाब किताब और सामान को देखो भालो और तुम विदेश का हिसाब किताब सँभालो।"

उस नौजवान ने अपने पिता की किताबें और बक्से आदि सँभाले और अपने माता पिता के आशीर्वाद और नौकरों के साथ घर छोड़ कर चल दिया।

चलते चलते वह स्पेन आया तो वहाँ एक बहुत अमीर सौदागर के आने की ख़बर राजमहल तक पहुँची। राजा ने उसको अपने महल में बुलवा भेजा और उसको अपने जवाहरात दिखाने के लिये कहा।

यह स्पेन का ही राजा था जिसने इस लड़के को मारने का हुक्म दिया था। इस नौजवान सौदागर के आने पर राजा ने अपनी बेटी

को भी अन्दर से बुला भेजा। राजकुमारी भी अब बीस साल की सुन्दर लड़की हो गयी थी। राजा ने अपनी बेटी से कहा कि वह भी आ कर उस सौदागर के लाये जवाहरात देख ले अगर उसको कुछ पसन्द हो तो।

राजकुमारी ने जैसे ही उस नौजवान सौदागर को देखा तो वह तो उसके प्यार में खो गयी। राजा ने अपनी बेटी की तरफ देखा तो उसको खोया हुआ पाया तो उससे पूछा — "क्या बात है बेटी?"

"कुछ नहीं पिता जी।"

"क्या तुमको इन जवाहरातों में से कुछ चाहिये? बोलो अगर कुछ चाहिये तो।"

"नहीं पिता जी मुझे न तो कोई जवाहरात चाहिये और न ही कोई कीमती पत्थर। पर मुझे यह नौजवान चाहिये। मुझे इससे शादी करनी है।"

राजा ने सौदागर की तरफ देखा और उससे पूछा — "तुम कौन हो नौजवान?"

नौजवान सौदागर बोला — "मैं इस्मेलियन सौदागर जियूमैन्टो का बेटा हूँ। मैं व्यापार के लिये देश विदेश घूम रहा हूँ ताकि अपने पिता के बाद मैं उनका व्यापार सँभाल सकूँ।"

उस सौदागर की इतनी सारी सम्पत्ति देखते हुए राजा ने अपनी बेटी की शादी उससे करने का फैसला कर लिया। नौजवान शादी के लिये अपने माता पिता को लाने के लिये अपने घर लौटा।

घर आ कर उसने अपने माता पिता को स्पेन के राजा से मुलाकात और उसकी बेटी से शादी के बारे में बताया तो उसकी मॉ तो यह सुन कर पीली पड़ गयी और उसने उसको डॉटना शुरू कर दिया।

वह बोली — "ओ मेरे उपकारों को भूल जाने वाले, तो क्या तुम मुझे छोड़ कर चले जाओगे? तुमको इस राजकुमारी के प्यार में पड़ कर घर छोड़ कर जाने की इतनी जल्दी है तो ठीक है जाओ और फिर इस घर में अपनी शक्ल मत दिखााना।"

लड़का बोला — "पर मॉ मैंने तुम्हारे साथ क्या बुरा किया है?"

"मुझे मॉ नहीं कहना। मैं तुम्हारी असली मॉ नहीं हूॅ।"

"अगर तुम मेरी असली मॉ नहीं हो तो फिर मेरी असली मॉ कौन है?"

"भगवान ही जानता है बेटा कि वह कौन है। हमने तो तुमको जंगल में पड़ा पाया था।" कह कर उसने उस लडके को सारी कहानी सुना दी जिसको सुन कर वह लड़का तो बस बेहोश होते होते ही बचा।

अपनी पत्नी के गुस्से को देख कर सौदागर अपने उस बेटे से कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा था। बहुत दुखी हो कर सौदागर ने उसे कुछ पैसे दिये और व्यापार करने के लिये कुछ सामान दिया और उसको जहॉ वह जाना चाहता था जाने दिया।

चलते चलते वह लड़का एक जंगल में आ निकला। वहाँ उसको रात हो गयी थी। वह जमीन पर गिर पड़ा और अपने हाथों से जमीन पीट पीट कर रोने लगा।

"माँ माँ. अब मेरे लिये इस दुनियाँ में क्या है। मैं बिल्कुल अकेला हूँ। ओ मेरी माँ की आत्मा, मेरी सहायता करो, मुझे रास्ता दिखाओ।"

तभी उसके पास फटे कपड़े पहने लम्बी दाढ़ी वाला एक बूढ़ा प्रगट हुआ। वह बोला — "क्या बात है मेरे बेटे, तुम क्यों रो रहे हो?"

लड़के ने उसे सब कुछ साफ साफ बता दिया और साथ में यह भी बताया कि वह अपनी होने वाली पत्नी के पास क्यों नहीं जा सकता था। क्योंकि अब उसको पता चल गया था कि वह इस्मेलियन सौदागर का असली बेटा नहीं था।

बूढ़े ने कहा — "तुम डरते क्यों हो बेटे? चलो स्पेन चलते हैं। मैं तुम्हारा पिता हूँ और मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

लड़के ने उस फटे कपड़े पहने बूढ़े की तरफ देखा और बोला — "तुम? क्या तुम मेरे पिता हो? तुम शायद सपना देख रहे हो।"

बूढ़ा बोला — "नहीं बेटे। मैं सपना बिल्कुल नहीं देख रहा। मैं तुमको सच बता रहा हूँ और मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं ही

तुम्हारा पिता हूँ। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुमको तुम्हारी अमीरी वापस दिला सकता हूँ नहीं तो तुम बर्बाद हो जाओगे।"

नौजवान ने उस बूढ़े की तरफ देखा और सोचा — "मुझे तो हर हाल में बर्बाद होना ही है तो क्यों न मैं इस बूढ़े के साथ जा कर ही बर्बाद होऊँ।"

सो उसने उस बूढ़े को अपने घोड़े पर बिठाया और उसको साथ ले कर स्पेन आया। वह स्पेन के राजा से मिलने गया तो राजा ने उससे पूछा — "तुम्हारे पिता कहाँ हैं?"

लड़के ने बूढ़े की तरफ इशारा करते हुए कहा — "ये हैं मेरे पिता।"

"यह आदमी तुम्हारा पिता? और तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मेरी बेटी का हाथ माँगने के लिये यहाँ मेरे पास आओ?"

बूढ़े ने बीच में राजा की बात काटी — "योर मैजेस्टी, मैं वही बूढ़ा हूँ जो जंगल में एक बारिश की रात जब आप मेरे घर में शरण लेने के लिये आये थे तो मैं ग्रहों से बात कर रहा था।

जिसने आपको अपने बेटे और आपकी बेटी के जन्म की खबर सुनायी थी और यह भी बताया था कि वे दोनों शादी कर लेंगे। यह लड़का और कोई नहीं मेरा ही बेटा है।"

यह सुन कर तो राजा और बहुत गुस्सा हो गया — "निकल जाओ यहाँ से, ओ बूढ़े। चौकीदार पकड़ लो इसको।"

यह सुन कर उसके चौकीदार उस बूढ़े को पकड़ने आये तो उसने अपने फटे कपड़े निकाल दिये। उसकी छाती पर बादशाह की सुनहरी पोशाक चमक उठी।

राजा और उसके चौकीदार दोनों घुटनों के बल बैठ कर चिल्लाये — "बादशाह आप? हमें माफ करें। मुझे मालूम नहीं था कि मैं किससे बात कर रहा था। यह मेरी बेटी है यह अब आपकी अमानत है।"

असल में बादशाह अपनी शाही ज़िन्दगी से थक चुका था इसलिये वह वेश बदल कर संसार भर में सितारों ओर ग्रहों से बात करता यात्रियों की तरह घूम रहा था।

सबने एक दूसरे को गले लगाया और चूमा और फिर शादी की तारीख तय की। इस्मेलियन सौदागर और उसकी पत्नी को भी स्पेन बुलवा लिया गया।

लड़के ने खुले दिल से उन दोनों का स्वागत किया — "मॉ और पिता जी, आप ही मेरे असली माता और पिता हैं क्योंकि आपके घर से निकाले जाने पर ही मेरी ज़िन्दगी बन सकी। हालॉकि मैं एक राजकुमारी से शादी कर रहा हूँ पर फिर भी आप दोनों हमेशा मेरे साथ ही रहेंगे।" उन दोनों बूढ़ों की ऑखों में खुशी के ऑसू आ गये।

बादशाह के बेटे और राजा की बेटी दोनों की शादी हो गयी और शादी के बाद दोनों खुशी खुशी रहे।

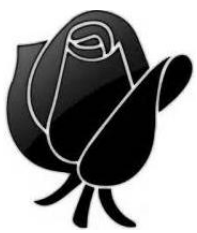

12 चिड़ियों की भाषा[67]

जो होना था हो के रहा की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली है। यह लोक कथा इस पुस्तक में दी हुई दूसरी लोक कथाओं जैसी तो नहीं है पर उनसे काफी मिलती जुलती है। तो लो पढ़ो रूस की यह लोक कथा अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि पवित्र रूस के किसी शहर में एक बहुत ही अमीर सौदागर अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके एक अकेला बेटा था जो बहुत ही प्यारा होनहार और बहादुर था। उसका नाम था इवान।

एक दिन इवान अपने माता पिता के साथ खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसी कमरे में खिड़की के पास एक पिंजरा टॅगा हुआ था जिसमें एक मैना और एक मीठा बोलने वाली भूरे रंग की चिड़िया बन्द थीं।

मैना ने अपनी ऊॅची आवाज में अपना मीठा गाना गाना शुरू किया। सौदागर ने उसका गाना सुना और सुना और सुन कर बोला — "काश मैं सब चिड़ियों के गानों के मतलब समझ सकता। तो मैं

[67] The Language of the Birds – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ftr/chap03.htm#page_66
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. 9 tales. Read all of its stories in Hindi by Sushma Gupta under the title "Roos Ki Lok Kathayen" (Classic Book Series 9). Write to the author to obtain its e-version.

उस आदमी को अपनी आधा पैसा दे देता अगर कहीं कोई ऐसा आदमी होता तो जो मुझे सारी चिड़ियो के सारे गानों के मतलब समझा देता।"

इवान ने अपने पिता के ये शब्द अपने दिमाग में रख लिये और इस बात से उसे कोई मतलब नहीं वह कहॉ गया, कोई मतलब नहीं वह कहॉ था, कोई मतलब नहीं उसने क्या किया वह हमेशा यही सोचता रहा कि वह किस तरह से चिड़ियों की भाषा सीख सकता था

कुछ समय बाद की बात है कि एक दिन इवान एक जंगल में शिकार खेलने के लिये गया कि तेज़ हवा बह निकली बादल आसमान पर छा गये बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे और बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी।

इस तूफान से बचने के लिये इवान एक बड़े पेड़ के नीचे आ गया। वहॉ उसने उस पेड़ की शाखाओं मे एक घोंसला देखा। उस घोंसले में चार छोटी छोटी चिड़ियें बैठी थीं। वे वहॉ अकेली ही थीं क्योंकि वहॉ उनके माता पिता कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे। वहॉ कोई उनको ठंड और पानी से बचाने वाला भी नहीं था।

भले इवान को उन पर दया आ गयी। वह पेड़ पर चढ़ गया और अपने काफ्तान से उन बच्चों को ढक दिया। काफ्तान रूसी किसानों और सौदागरों के पहनने का एक लम्बा सा कोट होता है।

कुछ देर बाद तूफान थम गया तो एक बड़ी चिड़िया वहॉ उड़ती हुई आयी और घोंसले के पास की एक शाख पर बैठ गयी।

वह बड़े प्यार से इवान से बोली — "इवान तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद कि तुमने ठंड और बारिश से मेरे छोटे छोटे बच्चों की रक्षा की। इसके बदले में मैं तुम्हारे लिये कुछ करना चाहती हूँ। कहो तुम्हारी क्या इच्छा है।"

इवान बोला — "मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। मेरी अपनी सुख सुविधा के लिये मेरे पास सब कुछ है पर तुम मुझे चिड़ियों की भाषा सिखा दो तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।"

वह चिड़िया बोली — "तुम मेरे साथ तीन दिन ठहरो तो तुम उसके बारे में सब जान जाओगे।"

इवान तीन दिन जंगल में रहा उसने उस बड़ी चिड़िया का सिखाया हुआ सब कुछ ठीक से सीख लिया। और इस तरह वह घर पहले से कहीं ज़्यादा होशियार हो कर लौटा।

एक दिन जब वह अपने माता पिता के साथ फिर से बैठा हुआ था तो मैना ने कुछ गाया। उसका गाना बहुत दुख का था इतने दुख का था कि उसका गाना सुन कर सौदागर और उसकी पत्नी भी दुखी हो गये।

और उनका बेटे भले इवान पर जो उसका गाना बड़े ध्यान से सुन रहा था उस पर तो उसका और भी ज़्यादा असर पड़ा। उसके तो ऑसू ही बहने लगे।

इवान के माता पिता ने इवान से पूछा — "प्यारे बेटे तुम क्यों रो रहे हो क्या बात है?"

रोते रोते इवान बोला — "ऐसा इसलिये है कि मैं इस मैना के गीत का मतलब समझता हूँ। इस गीत का मतलब हम सबके लिये दुख का है।"

उसके माता पिता ने कहा — "क्या मतलब है इसके गीत का बेटा? तुम हमको सब कुछ सच सच बताओ। कोई बात हमसे छिपाना नहीं।"

इवान बोला — "कितने दुख की बात है। कितना अच्छा होता कि मैं कभी पैदा ही न हुआ होता।"

माता पिता ने कहा — "बेटा अब तुम हमें और ज़्यादा मत डराओ। अगर तुम सचमुच में ही इस गीत का मतलब समझते हो तो हमको तुरन्त ही बतलाओ कि यह मैना क्या गा रही है।"

इवान बोला — "क्या आपको खुद पता नहीं चल रहा है कि यह मैना यह कह रही है कि वह समय आने वाला है जब सौदागर का बेटा इवान एक राजा का बेटा इवान बन जायेगा और उसका पिता उसके यहाँ एक सादा से नौकर की हैसियत से काम करेगा।"

सौदागर और उसकी पत्नी दोनों ही यह सुन कर परेशान हो गये पर उन्होंने अपने भले बेटे इवान का विश्वास नहीं किया। पर फिर भी उनके मन में कहीं कुछ खटका लगा रहा।

सो एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सुलाने वाला एक पेय पिला दिया और जब वह गहरी नींद सो गया तो वे उसको नाव में रख

कर समुद्र में ले गये। वहाँ ले जा कर उन्होंने नाव की पाल खोल दीं और उसको समुद्र में धकेल दिया।

काफी समय तक नाव समुद्र में बहती रही। आखीर में वह एक सौदागर के जहाज़ के पास आ गयी और उससे टकरा गयी। वह इतनी ज़ोर से टकरायी कि इवान की आँख खुल गयी।

उधर उस बड़े जहाज़ पर काम करने वालों ने भी इवान को देखा तो उन्हें उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसको अपने साथ ले जाने का निश्चय किया सो उन्होंने उसको अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

फिर उन्होंने आसमान में बहुत ऊँचे उड़ते हुए सारस देखे तो इवान उन लोगों से बोला — "सावधान रहना। ये सारस तूफान आने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। हमको किसी बन्दरगाह पर चले जाना चाहिये वरना हम खतरे में पड़ जायेंगे और हमारे जहाज़ को बहुत नुकसान पहुँचेगा। हमारे पाल फट जायेंगे और मस्तूल टूट जायेंगे।"

पर इवान के कहने पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया ओर वे चलते रहे। कुछ ही देर में तूफान आ गया। हवा ने जहाज़ तोड़ दिया और उनको अपना जहाज़ मरम्मत करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

जब उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया तब उन्होंने बहुत सारे जंगली हंस अपने ऊपर उड़ते हुए देखे और आपस में बात करते

हुए सुने। इस बार जहाज़ के लोगों ने खुद ही बड़ी रुचि से इवान से पूछा कि वे जंगली हंस क्या कह रहे थे।

इवान ने कहा — "वे कह रहे हैं कि सावधान रहना। वे क्या कह रहे है यह मैं साफ तरीके से सुन सकता हूँ कि समुद्री डाकू पास ही हैं और अगर हम पास के किसी बन्दरगाह में जा कर शरण नहीं ले लेते तो वे हमें बन्दी बना लेंगे और फिर मार देंगे।"

इस बार जहाज़ के लोगों ने बिल्कुल भी देर नहीं की वे तुरन्त ही बन्दरगाह की तरफ मुड़ गये। जैसे ही वे बन्दरगाह में पहुँचे कि समुद्री डाकुओं की नावें उनके सामने से गुजर गयीं। उन्होंने उन डाकुओं को कई और नावों को पकड़ते हुए और लूटते हुए देखा।

जब समुद्री डाकुओं का खतरा टल गया तो जहाज़ के लोग इवान के साथ और आगे तक चलते चले गये। अन्त में उनके जहाज़ ने एक शहर में अपना लंगर डाला। यह शहर बड़ा था और सौदागरों के लिये अनजाना था।

इस शहर के राजा को तीन काले कौओं ने तंग कर रखा था। वह उनसे बहुत परेशान था। ये तीन कौए हमेशा ही राजा के महल की खिड़की पर बैठे रहते थे और कुछ कुछ बोलते रहते थे।

किसी को नहीं पता था कि उनको वहाँ से कैसे भगाया जाये और कोई उनको मार भी नहीं सकता था।

राजा ने अपने शहर हर चौराहे पर और हर मुख्य इमारत पर यह नोटिस लगवा दिया था कि जो भी कोई इन शोर मचाने वाली

चिड़ियों को राजा के महल से हटाने में कामयाब होगा उसकी शादी राजा की सबसे छोटी कोरोलेवना[68] यानी बेटी से कर दी जायेगी।

और जो कोई इस काम को करने का साहस करेगा और महल से उनको हटाने में नाकामयाब रहेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

इवान ने यह नोटिस बड़े ध्यान से पढ़ा एक बार, दो बार, तीन बार... । आखीर में उसने क्रास का निशान बनाया और महल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने नौकरों से कहा "खिड़की खोलो मैं ज़रा सुनना चाहता हूँ कि वे क्या बात करते हैं।"

नौकरों ने वैसा ही किया जैसा इवान ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने खिड़की खोल दी। बे कौए तभी भी वहीं बैठे हुए थे और शोर मचा रहे थे। इवान ने कुछ देर तक उनको सुना और फिर नौकरों से कहा कि वे उसको राजा के पास ले चलें।

नौकर उसको राजा के पास ले गये। जब वह राजा के कमरे में पहुँचा तो राजा अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। इवान ने उसको सिर झुकाया और कहा — "योर मैजेस्टी यहॉ तीन कौए बैठे हैं। एक पिता कौआ है एक माता कौवी है और एक बेटा कौआ है।

अब मुश्किल यह है कि वे इस बारे में आपका शाही हुक्म लेना चाहते हैं कि बेटे कौए को अपने पिता कौए की बात माननी चाहिये या माता कौवी की।"

[68] Korolevna – Princess, the daughter of a King

राजा ने जवाब दिया कि बेटे कौए को तो अपने पिता कौए की ही बात माननी चाहिये।

जैसे ही राजा ने अपना यह शाही हुक्म सुनाया पिता कौआ और बेटा कौआ दोनों एक तरफ को उड़ गये। और माँ कौवी दूसरी तरफ को गायब हो गयी। उसके बाद से उन कौओं को फिर कभी किसी ने वहाँ नहीं देखा।

राजा ने इवान को अपना आधा राज्य दे दिया और सबसे छोटी कोरोलेवना ब्याह दी।

इधर इवान की माँ चल वसी और उसका पिता भी गरीब हो गया। अब उसके पिता की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं रह गया था। अब वह बूढ़ा बेचारा सब जगह भीख माँग माँग कर गुजारा करता था। वह एक घर से दूसरे घर जाता एक गाँव से दूसरे गाँव जाता और एक शहर से दूसरे शहर जाता।

एक दिन वह उस शहर में आ निकला जिसमें इवान रहता था। वह महल के पास से भीख माँगता गुजर रहा था कि इवान ने उसे देख लिया। उसने उसको पहचान लिया और अन्दर आने का हुक्म दिया। उसने उसको बहुत अच्छा खाना खिलाया और उसको पहनने के लिये अच्छे कपड़े दिये।

फिर उसने उससे पूछा — "मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ।"

गरीब पिता ने अपने बेटे को पहचाना नहीं और कहा — "अगर तुम इतने ही अच्छे हो तो तुम मुझे यहाँ रहने की जगह दे दो और अपने वफादार नौकरों के साथ मुझे भी अपना नौकर रख लो।"

तब इवान बोला — "मेरे प्यारे पिता जी, वह मैना उस समय जो गाना गा रही थी तो उस समय तो आपने उस पर शक किया और आज आप वही होता देख रहे हैं।"

यह सुन कर वह बूढ़ा डर गया और अपने बेटे के पैरों में पड़ गया। पर उसका बेटा इवान अभी भी पहले जैसा ही अच्छा बेटा रहा। उसने अपने पिता को अपनी बाँहों में ले कर अपने गले लगा लिया। दोनों अपने अपने दुखों पर कुछ देर तक रोते रहे।

पिता को वहाँ रहते रहते कई दिन हो गये तो एक दिन उसने हिम्मत कर के अपने बेटे कोरोलेविच[69] से पूछा — "बेटा ज़रा बताओ तो कि ऐसा कैसे हुआ कि तुम उस नाव में मरे नहीं।"

इवान कोरोलेविच बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "मुझे लगता है पिता जी कि वह मेरी किस्मत में था ही नहीं कि मैं उस नाव में मर जाऊँ।

मेरी किस्मत में तो यह था कि मैं अपनी सुन्दर पत्नी कोरोलेवना से शादी करूँ और अपने पिता का बुढ़ापा सुखी करूँ।

[69] Korolevich – Prince

13 झरने की कहानी[70]

यह लोक कथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के पैरैगुए देश में कही सुनी जाती है।

बूढ़ा सरदार अगुआरा[71] जानता था कि वह एक खुशकिस्मत आदमी था। और दूसरे पिताओं की तरह वह यह भी जानता था कि उसकी बेटी दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की थी।

बहुत सारी जातियों के नौजवान उसकी बेटी येती[72] का हाथ मॉगने के लिये आये। पड़ोस के सरदारों ने उससे शादी करने के लिये बहुत सारी जायदाद और पैसा देने के लिये भी कहा पर उन सबको वापस भेज दिया गया।

---

[70] The Legend of Waterfall - a folktale from Paraguay, South America. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/paraguay/santa_maria_folktale.htm
Collected and retold by Phillip Martin
[Note from Phillip Martin – The Guaraní, the indigenous people of Paraguay, didn't tell those kinds of stories in which people lived happily thereafter. In their stories I found, nobody lived happily ever after and this is no exception. Nobody everlived happily thereafter in any of their stories I located. Never. Not even once. That included Romeo and Juliet, or in this case, Cavureí and Yeteí. Even though this tale is written with all the respect found in "The Princess Bride", you have been warned.]
[Another Note from Philip Martin - iif you didn't like how Romeo and Juliet ended, well . . . don't be surprised if you don't like what happens in this tale. The Guaraní of old, the indigenous people of Paraguay, must have had a very difficult life. That included Romeo and Juliet, or in this case, Cavureí and Yeteí. Even though this tale is written with all the respect found in "The Princess Bride" (film), you have been warned.]
[My Note – it seems like an Indian film story.]

[71] Aguara – name of the tribal Chief of the people of Paraguay

[72] Yetei – name of the girl

जब येती पैदा हुई थी तो उस जाति के जादू टोना करने वाले एक जादूगर[73] ने उसके बारे में यह कहा था कि उसका प्यार उसको नीचे गिरा देगा और उसकी मौत की वजह बनेगा।

इसलिये आये हुए उम्मीदवारों में से किसी को भी येती से बात करने तक का भी मौका नहीं दिया गया। पर वह बूढ़ा सरदार बेचारा और करता भी। इस सबको करने के लिये उसकी अपनी वजह थी।

बस सरदार को तो उन सबसे इतना ही कहने की जरूरत थी कि उसकी बेटी ने अपनी ज़िन्दगी टूपा[74] के नाम लिख दी है और सारे लड़के उसकी ज़िन्दगी से बिल्कुल दूर कर दिये गये। कहानी खत्म? सरदार अगुआरा ने तो यह कहानी ऐसे ही लिखने की सोचा था।

वह अपनी बेटी पर निगाह रखने की कितनी भी कोशिश करता पर वह हर पल और हर दिन तो उस पर इस तरह निगाह नहीं रख सकता था।

एक बदकिस्मत शाम को जब येती जंगल में घूम रही थी तो एक चीता[75] अचानक उसके रास्ते में आ गया। दूसरे लोग और नौजवान तो उससे केवल

[73] Translated for the word “Sorcerer”
[74] Tupa – the God of Creation
[75] Translated for the word “Jaguar”. See its picture above.

शादी ही करना चाहते थे पर इस चीते ने तो उसको खुद को ही खाने की सोचा।

उसको देखते ही येती बहुत ज़ोर से चीख पड़ी और उसकी चीख सारे जंगल में गूँज गयी पर वह अपने घर से बहुत दूर थी इसलिये उसका पिता उसकी वह चीख नहीं सुन सका।

वह चीता धीरे धीरे उसके पास तक आ गया और फिर तो सब कुछ बहुत जल्दी हो गया। चीता उस लड़की के ऊपर कूदा कि तभी रास्ते के किनारे किनारे जो झाड़ियॉ लगी हुई थीं उनके बीच से रास्ता बनाता हुआ एक भाला आया और उसने उस बड़े से चीते को मार दिया।

येती ने उन झाड़ियों के पीछे दो बहुत ही सुन्दर काली ऑखें देखीं। ऐसी आखें उसने पहले कभी नहीं देखी थीं। वे कैवूरी[76] की ऑखें थीं। कैवूरी किसी दूसरे कबीले का बहुत ही निडर बहादुर और ताकतवर शिकारी था।

उसने लड़की की तरफ देखा और जो कुछ भी उसके दिमाग में सबसे पहले आया वह वही बोला — "देखो डरो नहीं, मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

यह सोचते हुए कि उसने उस चीते से उसकी अभी अभी जान बचायी है ये उसके लिये कोई सबसे अच्छे शब्द नहीं थे पर कैवूरी

[76] Cavurei – the name of the hunter

को जवान लड़कियों के साथ बात करने की आदत नहीं थी न इसी लिये उसके मुँह से यही शब्द निकल पाये। ऐसा क्यों?

येती की ही तरह से जब कैवूरी पैदा हुआ था तो उस कबीले के एक जादू टोना जानने वाले ने भी उसके पिता सरदार जुरूमी[77] से कैवूरी के बारे में यही कहा था कि उसका प्यार ही उसको नीचे गिरायेगा और उसके लिये उसकी मौत बन कर आयेगा।

इसलिये हालाँकि कैवूरी बहुत ही निडर बहादुर ताकतवर और एक शानदार लड़ने वाला था फिर भी उसके पिता ने उसको उन बहुत सारी लड़कियों से दूर रखा हुआ था जो उससे शादी करना चाहती थीं।

पर किस्मत की बात, दोनों ही सरदार वहाँ नहीं थे जहाँ उनके बच्चे मिले। जैसे ही उन दोनों ने एक दूसरे को देखा तो दोनों ने ही अपने अपने दिलों में एक दूसरे के लिये कुछ खास महसूस किया।

यह पहली नजर का प्यार था। उस लड़के ने भी इतने सुन्दर बाल और किसी की पलकों के इतने सुन्दर बाल कभी नहीं देखे थे। और उस लड़की ने कभी किसी नौजवान का इतना सुन्दर मजबूत शरीर और इतनी काली आँखें नहीं देखी थीं।

येती जब उसकी तरफ देखते हुए होश में आयी तो बोली — "मेरे पिता तुमको मेरी जान बचाने के लिये बहुत बड़ा इनाम देंगे।"

कैवूरी बोला — "अच्छा? कौन हैं तुम्हारे पिता जी?"

[77] Chief Jurumi – name of the Chief of another Clan

येती मुस्कुरा कर बोली — "मेरे पिता सरदार अगुआरा हैं और वह तुमको बहुत प्यार करेंगे।"

इस बार उसके दिल ने कोई अजीब सी बात महसूस नहीं की बल्कि एक ठंडी लहर उसकी रीढ़ की हड्डी से हो कर गुजर गयी। क्योंकि उसके सामने तो उसके कबीले के दुश्मन कबीले के सरदार की बेटी खड़ी थी।

कैवूरी बोला — "मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के सामने नहीं ले जा सकता। वह मुझे देखते ही मार देंगे क्योंकि मैं सरदार जुरूमी का बेटा हूँ – उनके सबसे बड़े दुश्मन का बेटा।

इसके अलावा मुझे कोई इनाम भी नहीं चाहिये। मेरे लिये तुमसे मिलना ही काफी है। पर मुझे लगता है कि तुमने मेरा दिल चुरा लिया है।"

येती बोली — "अगर तुम मुझे मेरे गॉव तक नहीं ले जाओगे तो क्या मेहरबानी कर के तुम मुझे जंगल की हद तक छोड़ दोगे? मेरे पैर में चोट लग गयी है और मैं बहुत तेज़ नहीं चल सकती।"

"हॉ वहॉ तक तो मैं तुमको ले जा ही सकता हूँ। चलो, मैं तुमको वहॉ तक ले चलता हूँ।" और कैवूरी येती को उठा कर जंगल की हद तक ले चला। हर कदम पर उसका प्यार येती के लिये बढ़ता ही जा रहा था।

जब वे दोनों जंगल की हद के पास पहुँचे तो कैवूरी ने येती को अपना प्यार जता ही दिया। वह बोला —"मैं अपने पिता से कहूँगा

कि वह गुस्से को एक तरफ उठा कर रख दें ताकि हम लोग एक साथ रह सकें।

अब समय आ गया है कि हमारे कबीलों की यह दुश्मनी खत्म हो जानी चाहिये और हम लोगों को मिलजुल कर रहना चाहिये। हम लोगों के मिलने से दोनों कबीलों के एक होने का समय शुरू होगा।"

येती ने हॉ में हॉ मिलायी — "हॉ यह तो ठीक है।"

और इस समझौते पर दोनों के चुम्बन की मुहर लग गयी।

इस जवान जोड़े के लिये तो उनके इस चुम्बन ने उनकी दुनियॉ ही हिला दी थी। इससे केवल उनकी अपनी दुनियॉ ही नहीं बल्कि यह धरती भी हिल गयी थी।

दोनों के लिये उनकी ज़िन्दगी बहुत ही खुशी से गुजर सकती थी पर टूपा इस सबसे बिल्कुल भी खुश नहीं था। उसको उन जादू टोना करने वालों की कही हुई बात का पता था। उसको तो यह भी पता था कि आगे क्या होने वाला है।

मौत, उदासी और बर्बादी कभी किसी को अच्छे नहीं लगते पर उस समय उन दोनों नौजवानों ने इस सबके बारे में सोचा ही नहीं।

कैवूरी बोला — "कल सुबह ही मैं अपने पिता से कहूँगा कि वह तुम्हारे पिता के पास अपना एक दूत भेजें। वह हमारे लोगों में शान्ति और एक साथ मिल कर रहने का ऐलान करेगा।"

पर दूत होने के बारे में तो तुम जानते ही हो न। पुराने समय में दूत का काम हमेशा ही सबसे सुरक्षित काम नहीं था, हालॉकि ऐसा

होना चाहिये था पर ऐसा था नहीं। लोग हर समय ही यह नहीं कहते थे कि "यह दूत है इसे मत मारो।" सो कई बार दूत मारे भी जाते थे।

हालॉकि हमें मालूम है कि वे बेचारे तो अपना काम कर रहे हैं पर फिर भी ऐसा होता था, और फिर ऐसा ही हुआ। सरदार अगुआरा ने सरदार जुरूमी के दूत को मार दिया।

अब कोई शान्ति नहीं थी, अब कोई एक साथ मिल कर रहने की बात नहीं थी और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अब कोई शादी नहीं थी।

एक मरे हुए दूत ने सरदार अगुआरा के विचारों को बिना किसी शक के बता दिया था कि वह अपनी बेटी की शादी कैवूरी से नहीं करना चाहता था। बस सब कुछ खत्म।

गुआरानी देश[78] में कुछ भी अच्छा नहीं था। कोई भी देख सकता था कि विरोधी घटनाएँ किस तरह एक के ऊपर एक जमा होती जा रही थीं।

दो सरदार थे जो अपने घमंड में चूर थे। दो जादू टोना करने वाले थे जिन्होंने उदासी, मौत और बर्बादी का ऐलान कर रखा था। दो प्यार करने वाले थे जिनके सितारे खराब थे। और इन सबके ऊपर था वह मरा हुआ दूत।

[78] Guarani Land where Guarani people lived.

सो सब कुछ बहुत ही खराब था। और यह तो तुम्हें याद ही होगा कि उन जादू टोना करने वालों ने उदासी, मौत और बर्बादी बता रखी थी।

दूत को मारने के बाद सरदार अगुआरा ने अपनी बेटी को एक पहरे वाले घर में रख दिया। उसका तो अपनी बेटी से कोई बात करने का भी मूड नहीं था। और कुछ ऐसा भी नहीं लगता था कि किसी और को भी उससे बात करने का कोई मौका मिल सकता था।

येती बहुत रोयी, बहुत चिल्लायी, दरवाजे में बहुत घूँसे मारे पर किसी से कोई काम नहीं चला। अगर पहरेदारों ने कुछ सुना भी तो वे कुछ नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके किसी भी काम से उनका सरदार नाराज हो सकता था और वे उसको नाराज नहीं कर सकते थे।

येती जमीन पर गिर पड़ी और टूपा को याद करने लगी कि वही उसको कोई रास्ता दिखाये। टूपा ने तो कुछ भी नहीं कहा पर येती को अपने नीचे जमीन कुछ कॉपती सी लगी।

इस बीच वहॉ से कुछ दूर एक गॉव में सरदार जुरूमी कुछ और ही सोच रहा था। जिन दूतों के शरीर के हिस्से काट दिये गये थे उनको देख कर वह खुश नहीं था क्योंकि इससे लड़ाई होने की उम्मीद ज़्यादा थी और लड़ाई के लिये तो बहुत तैयारी करनी पड़ती है।

खुशकिस्मती से अगर कोई सरदार हो तो उसको काम तो बहुत ही कम करना पड़ता है क्योंकि काम करने के लिये और बहुत सारे लोग होते हैं पर फिर भी देखना तो पड़ता ही है।

स्त्रियॉ रात को आग जलाती हैं। छोटी लड़कियॉ तीरों को जहर में बुझाती हैं। आदमी लोग अपने चाकुओं, कुल्हाड़ियों और भालों पर धार रख कर उनको तेज़ करते हैं।

छोटे लड़के अपने चेहरे लड़ाई के रंग से रॅगते हैं और हमेशा ऐसे दिखायी देते हैं जैसे बहुत काम कर रहे हों ताकि वे कहीं लड़ाई वाली किसी मुश्किल में न पड़ जायें।

दोनों तरफ लड़ाई की तैयारियॉ होने लगीं तो आसमान भी काला पड़ने लगा। उन दोनों जादू टोना करने वालों में से एक जादू टोना करने वाले ने धीरे से कहा — "टूपा को अपने आदमियों की लड़ाई अच्छी नहीं लगती।" पर यह बात उसने ज़ोर से नहीं कही।

वह यह बात ज़ोर से कह ही नहीं सकता था क्योंकि जब तुमने एक बार उदासी, मौत और बर्बादी का ऐलान कर दिया तो सचमुच की उदासी, मौत और बर्बादी आने पर तुम अपनी वह बात नहीं बदल सकते। उसके लिये बहत देर हो चुकी होती है।

अब तो आग जलाने का, तीरों को जहरीला बनाने का, हथियारों को तेज़ करने का समय था। बस सब जगह मारो मारो मारो की ही आवाज सुनायी पड़ेगी।

जब दोनों तरफ के लोग लड़ाई के लिये इकट्ठा हो गये तब सब को यही लग रहा था कि बस अब दिन अच्छे नहीं हैं। शायद उनको इस बारे में दोबारा सोचना चाहिये। पर नहीं, उन्होंने भी यह नहीं सोचा।

जब तुम्हारे पैरों के नीचे से जमीन खिसकने लगे तो अक्लमन्दी इसी में है कि अपनी हिफाजत के लिये भाग लो। पर यहॉ यह भी नहीं हुआ।

आसमान जो थोड़ा गहरे रंग का हो गया था अब काला होने लगा मानो गुस्से से भरी भीड़ से भी आगे निकल जाना चाहता हो। बादल गरजने लगे, बिजली कड़कने लगी पर किसी ने उसकी तरफ भी कोई ध्यान नहीं दिया।

उन लोगों का दिमाग बदलने के लिये टूपा के हाथ में जो कुछ भी था उसने करने की कोशिश की पर वह उनका दिमाग नहीं बदल सका।

सब दिशाओं में तीर चलने लगे। जहरीले तीरों का जो काम था वह उन्होंने बहुत अच्छी तरह से किया। लोग उनसे मरने लगे। भाले इधर उधर चलने लगे और कुल्हाड़ियॉ लोगों को काटने लगीं।

कैवूरी अपने लोगों को सॅभाले हुए था। वह इधर उधर लोगों को मार रहा था। उसके केवल तीन काम थे – अपने पिता के दूत की मौत का बदला लेना, अपने प्यार को पाना और ससुर जी के आगे आने वाली समस्याओं को रोकना।

इधर येती अपने उस पहरे वाले घर में बिल्कुल भी खुश नहीं थी। सो जैसे बहुत समय से कहानियों में और लड़कियॉ करती रही हैं वह अपनी पिछली खिड़की से अपना प्यार ढूँढने निकल पड़ी।

पर उसकी बदकिस्मती से उसका प्यार तो लड़ाई के मैदान में था जिसके चारों तरफ खून ही खून था, मौत ही मौत थी, बर्बादी ही बर्बादी थी। फिर भी येती अपने प्यार में अन्धी हो कर लड़ाई के मैदान की तरफ चल दी।

अब तुम सोच सकते हो कि उसका पिता उसकी इस बात से कितना खुश हुआ होगा।

येती लड़ाई के मैदान में जा कर एक बड़े से पत्थर पर बैठ गयी। वहॉ से उसको लड़ाई के मैदान का सब कुछ साफ साफ दिखायी दे रहा था पर कोई भी सुन्दर लड़की उस सबको नहीं देख सकती थी – चारों तरफ तीर, भाले, कुल्हाड़ी, कटे सिर, खून आदि फैले पड़े थे।

जहर अपना काम बड़े अच्छे से कर रहा था। जहर भरे तीरों से चारों तरफ लोग मर मर कर गिर रहे थे। उस सबको देख कर येती की ऑखों में ऑसू आ गये। ऐसा लगता है कि ऑसू बहा कर शायद उसने कुछ अच्छा ही किया।

जब येती के ऑसू नीचे गिर रहे थे तो टूपा ने उसके उन ऑसुओं का एक नाला बना दिया। वह जितना ज़्यादा रो रही थी वह नाला उतना ही बड़ा होता जा रहा था।

येती के पास तो रोने के लिये बहुत चीज़ें थीं, जैसे उसके दाहिने हाथ को बहादुर और साहसी कैवूरी था। तभी उसने देखा कि कैवूरी के हाथ में कुल्हाड़ी थी और वह उसके पिता की तरफ बढ़ा चला जा रहा था। कैवूरी कुल्हाड़ी चलाने में बहुत अच्छा था।

अपने ससुर के मामले को निबटा कर वह अपने प्यार की तरफ बढ़ा।

अब यह तो मुझे पता नहीं कि क्या कैवूरी को यह उम्मीद थी कि जिसने अभी अभी उसके पिता का खून किया है उसको देख कर उसका प्यार अभी भी अपने होश में होगा या नहीं पर उसके पास यह सब देखने का मौका ही नहीं था। वह तो अपने प्यार के पीछे पागल था।

सरदार तो शायद मर गया था पर फिर भी अभी और बहुत सारे तीर चलाने वाले मौजूद थे। उन्होंने बहुत सारे तीर चला दिये और वे सब निशाने पर लगे।

येती और ज़ोर से रो पड़ी।

इस तरह हमको पता है कि कम से कम एक जादू टोना करने वाला तो सही था। हर जगह उदासी, मौत और बर्बादी ही दिखायी दे रही थी।

दुखी दिल से सरदार जुरूमी ने अपने बेटे के टूटे हुए शरीर को उठाया और उसको येती के पैरों के पास रख दिया। येती उससे

लिपटती हुई उसके ऊपर गिर पड़ी और और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

अब तुम सोच सकते हो कि इससे ज़्यादा बुरा और क्या होगा। पर तुमको दूसरे जादू टोना करने वाले की बात भी याद है न?

येती मर गयी। क्या? तुमको और ज़्यादा विस्तार से जानना है? तो सुनो। सरदार जुरूमी कभी भी एक अच्छा ससुर नहीं बना।

जब येती अपने कैवूरी के शरीर के ऊपर बेहोश हो गयी तो उस कमीने सरदार जुरूमी ने एक चाकू निकाला और... ।

बस इतना ही कहना काफी है।

धरती कॉप उठी और सबको बहरा करने वाली बिजली की कड़क पूरे जंगल में गूँज गयी। पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े टूट गये। बड़े बड़े पेड़ उखड़ कर गिर पड़े। कोई चीज़ ज़ोर से जमीन से टकरायी और धरती हिल गयी।

इस सबसे यह साफ जाहिर होता था कि टूपा के लिये यह सब काफी था। तभी धरती फटी और उसमें एक बहुत बड़ी दरार पैदा हुई और वहॉ जो कुछ भी था वह दरार उस सबको निगल गयी। इनमें वे दोनों जादू टोना जानने वाले भी थे जिन्होंने यह सब बताया था।

येती के बारे में तो तुमको मालूम ही है कि उसका क्या हुआ। उसके ऑसुओं से बना वह नाला उस दरार के ऊपर से बह कर नीचे गिर गया जिससे वहॉ एक बहुत सुन्दर झरना बन गया।

टूपा ने उस झरने को एक बहुत ही ताकतवर प्यार के टोटके का आशीर्वाद दिया। उस दिन से बहुत सारी स्त्रियॉ उस झरने का पानी पीने वहॉ जाती हैं और जो स्त्रियॉ उस पानी को पीती हैं उनका विश्वास है कि उस पानी को पीने से उनको उनका प्यार मिल जाता है और फिर वह उनके पास ही रहता है।

तुम सोच सकते हो कि बस अब तो कहानी खत्म हो गयी पर इस कहानी के साथ ऐसा नहीं है यह तो अभी और भी है। क्योंकि टूपा ने ऐसा नहीं किया कि "इसके बाद वे खुशी खुशी रहे।"

नहीं, यह कहानी ऐसे खत्म नहीं होती। क्या तुम्हें मालूम है कि उन आदमियों का क्या हुआ जो जब धरती फट गयी तो उससे बनी उस गहरी खाई में गिर पड़े थे? वे मरे नहीं थे।

उनको उस खाई में बहुत बहुत बहुत समय तक वहीं घूमते रहने की बद्दुआ मिली थी – लड़ते हुए, घाव खाते हुए, इधर से उधर घूमते हुए और दुख सहते हुए। मुझे लगता है कि उन दोनों जादू टोना जानने वालों की भी शायद यही हालत हुई होगी।

14 एक देश जहॉ कोई कभी नहीं मरता[79]

जो होना था वह हो के रहा जैसी लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन एक नौजवान बोला — "ऐसी कहानी जिसमें हर कोई मर जाता है मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं किसी ऐसे देश में जाना चाहता हूँ जहॉ कोई कभी नहीं मरता।"

उसने अपने माता पिता, चाचा ताऊ और सब भाइयों को विदा कहा और फिर घर छोड़ कर ऐसे देश की तलाश में चल दिया जहॉ कोई कभी नहीं मरता। वह कई दिनों और कई महीनों तक चलता रहा।

उसे रास्ते में जो कोई भी मिलता वह उन सबसे पूछता कि क्या वे उसको कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहॉ कोई कभी न मरता हो पर किसी को भी ऐसी किसी जगह का पता नहीं था जहॉ कोई कभी न मरता हो।

एक दिन उसको एक बूढ़ा मिला जिसकी सफेद दाढ़ी उसकी छाती तक आ रही थी। वह पत्थरों से भरी एक गाड़ी खींच रहा

[79] The Land Where One Never Dies – a folktale from Italy from its Verona area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.
Read most of its stories in Hindi by Sushma Gupta under the title "Italy Ki Lok Kathayen" in 7 parts.
Write to the author to obtain their e-version.

था। उस नौजवान ने उससे भी पूछा — "क्या आप मुझे कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहॉ कोई कभी न मरता हो?"

वह बूढ़ा बोला — "अगर तुम मरना नहीं चाहते तो मेरे साथ रहो। जब तक मैं यह पूरा का पूरा पहाड़ एक एक पत्थर कर के यहॉ से हटा नहीं लूँगा तब तक तुम नहीं मरोगे।"

"ऐसा करने में तुमको कितना समय लगेगा?"

"कम से कम सौ साल तो लग ही जायेंगे।"

"पर उसके बाद तो मुझको मरना ही पड़ेगा न?"

"यकीनन तुमको मरना पड़ेगा। सभी को मरना पड़ता है। क्या सौ साल तुम्हारे लिये काफी नहीं हैं?"

"नहीं, यह जगह मेरे लिये नहीं है। मैं तो कोई ऐसी जगह ढूँढ रहा हूँ जहॉ कोई कभी न मरता हो।"

सो उसने बूढ़े को विदा कहा और आगे चल दिया। कुछ महीने चलने के बाद वह एक जंगल में आ निकला। वहॉ उसको एक और बूढ़ा मिला जिसकी सफेद दाढ़ी पेट तक आ रही थी।

वह एक कुल्हाड़ी से उस बड़े जंगल के पेड़ों की बेकार वाली शाखें काट रहा था। उसको उस जंगल के सारे पेड़ों की इसी प्रकार शाखें काटनी थीं।

उसने उससे भी पूछा — "क्या आप मुझे कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहॉ कोई कभी न मरता हो?"

वह बोला — "क्या तुम मरना नहीं चाहते? अगर ऐसा है तो तुम मेरे साथ रह जाओ। जब तक मैं इस जंगल के ये पेड़ ठीक करता रहूँगा तब तक तुम्हारी जान को कोई खतरा नहीं है।"

"यह काम कितने दिनों में हो जायेगा?"

"लग जायेंगे करीब दो सौ साल।"

"पर इतना समय तो मेरे लिये काफी नहीं है। मुझे तो आप कोई ऐसी जगह बताइये जहाँ कोई कभी न मरता हो।"

"क्या इतना समय तुम्हारे लिये काफी नहीं है? कितना जीना चाहते हो? थक जाओगे जी जी कर।"

"नहीं नहीं, मुझे तो ऐसी ही जगह चाहिये जहाँ कोई कभी न मरता हो।" इतना कह कर वह फिर आगे चल दिया।

कुछ महीने चलने के बाद वह एक समुद्र के किनारे पहुँच गया। वहाँ उसको एक और बूढ़ा मिला जिसकी दाढ़ी घुटनों तक लम्बी थी।

उसने उससे भी पूछा — "क्या आप मुझे कोई ऐसी जगह बता सकते हैं जहाँ कोई कभी न मरता हो?"

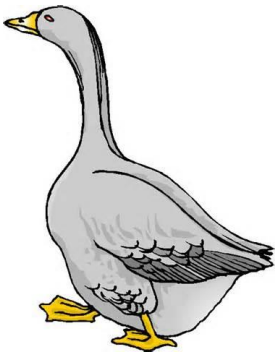

वह बूढ़ा बोला — "अगर तुम मरने से डरते हो तो मेरे साथ रहो। देखो उस बतख को देखो। जब तक वह सारे समुद्र का पानी न पी ले तब तक तुम्हारी ज़िन्दगी को कोई खतरा नहीं।"

"सारे समुद्र का पानी पीने में इसको कितना समय लगेगा?"

"करीब करीब तीन सौ साल।"

"पर उसके बाद तो मुझे मरना ही पड़ेगा न?"

"और इससे ज़्यादा तुम क्या उम्मीद रखते हो? तुम और कितना ज़्यादा जीना चाहते हो? जी नहीं पाओगे।"

"नहीं नहीं, यह जगह मेरे लिये नहीं है। मुझे तो वहॉ जाना है जहॉ कोई कभी न मरता हो।"

सो वह फिर अपने सफर पर चल दिया। एक शाम वह एक बहुत ही शानदार महल के पास आया। वहॉ उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया तो एक बूढ़े ने दरवाजा खोला जिसकी दाढ़ी उसके पैरों तक आ रही थी।

उसने उस नौजवान से पूछा — "ओ नौजवान, तुम क्या खोज रहे हो? मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"मैं एक ऐसी जगह ढूँढ रहा हूँ जहॉ कोई कभी न मरता हो।"

"तो तुम समझ लो कि तुमको वह जगह मिल गयी है। यही वह जगह है जहॉ कोई कभी नहीं मरता।"

यह सुन कर वह आदमी बहुत खुश हुआ कि आखिर उसकी मेहनत सफल हो गयी और उसको ऐसी जगह मिल गयी जहॉ कोई कभी न मरता हो।

वह उस आदमी से बोला — "आखिर इतना चलने के बाद मुझे वह जगह मिल ही गयी जिसकी मुझे तलाश थी। पर क्या आपको यकीन है कि मैं अपने आपको आपके ऊपर थोप नहीं रहा हूँ?"

"ओह नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझे तुमको अपने साथ रख कर बड़ी खुशी होगी।" कह कर वह बूढ़ा उसको अपने महल के अन्दर ले गया और उसको आराम से ठहराने का इन्तजाम किया।

सो वह नौजवान उस बूढ़े के साथ उस महल में रहने लगा। वह वहाँ पर एक बहुत ही अमीर आदमी की तरह रहता था। साल पर साल बीतते गये। इतनी जल्दी और इतने आराम से उसका समय बीतता चला गया कि उसको समय का पता ही नहीं चला कि कब सदियाँ गुजर गयीं।

एक दिन उसने उस बूढ़े से कहा — "इस धरती पर इससे अच्छी कोई जगह नहीं पर फिर भी मैं अपने परिवार के पास कुछ समय के लिये उनसे मिलने के लिये बस यह देखने के लिये जाना चाहूँगा कि वे लोग कैसे रह रहे हैं। सब लोग ठीक हैं या नहीं।"

बूढ़ा बोला — "तुम किस परिवार की बात कर रहे हो? तुम्हारे आखिरी रिश्तेदार को मरे हुए तो कई सदियाँ गुजर गयीं।"

"पर मैं फिर भी वहाँ जाना चाहूँगा। अपने जन्म की जगह देखने के लिये। हो सकता है कि मुझे वहाँ पर मेरे उस आखिरी रिश्तेदार के कोई बेटे या पोते मिल जायें।"

बूढ़ा बोला — "अगर तुम वहाँ जाने की जिद कर ही रहे हो तो जाओ। तुम मेरी घुड़साल में जाओ और वहाँ से मेरा सफेद वाला घोड़ा उठाओ। यह घोड़ा हवा की चाल से भागता है। वह तुमको तुम्हारी जगह जल्दी ही पहुँचा देगा।

पर मेरी एक बात ध्यान से सुनो। अगर एक बार तुम उस पर सवार हो जाओ तो किसी भी, किसी भी हालत में उस पर से उतरना नहीं वरना तुम वहीं उसी जगह और उसी समय मर जाओगे।"

"ठीक है।" कह कर वह उस बूढ़े की घुड़साल में गया और उसका वह सफेद घोड़ा उठाया जिसकी वह बूढ़ा बात कर रहा था। उसके ऊपर उसने जीन कसी[80] और उस पर बैठ गया। उसके बैठते ही वह घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

वह उस जगह से गुजरा जहाँ उसको वह बतख वाला बूढ़ा मिला था। वहाँ जहाँ पहले समुद्र था अब वहाँ एक बहुत बड़ा घास का मैदान था। उसके किनारे पर हड्डियों का एक छोटा सा ढेर पड़ा था – यह उसी बूढ़े की हड्डियों का ढेर था।

वह नौजवान उस ढेर को देख कर बोला — "देखो तो ज़रा, इस बेचारे बूढ़े की क्या हालत हुई। मैंने अक्लमन्दी का काम किया न, जो मैं यहाँ नहीं रुका। नहीं तो अब तक तो मैं भी कब का मर चुका होता। चलो आगे चलता हूँ।"

[80] Translated for the word "Saddle". See its picture above.

वह आगे चलता रहा और फिर वह वहॉ आया जहॉ कभी एक बड़ा सा जंगल हुआ करता था। जहॉ उस बूढ़े को अपनी कुल्हाड़ी से हर एक पेड़ की बेकार वाली डंडियॉ काटनी थीं।

वहॉ अब कोई भी पेड़ नहीं रह गया था और वहॉ की जमीन इतनी सूखी और नंगी पड़ी थी जैसे रेगिस्तान।

यह देख कर उस नौजवान के मुॅह से निकला — "अरे यह सब यहॉ क्या हो गया। मैं कितना ठीक था कि मैं यहॉ नहीं रुका नहीं तो मैं भी बहुत पहले ही मर गया होता जैसे कि इस जंगल का यह बूढ़ा।"

वह वहॉ से भी गुजरा जहॉ पहले एक बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा था जिसमें से एक बूढ़ा एक एक पत्थर उठा कर ले जा रहा था। वहॉ तो अब सारी जमीन ही चौरस हो गयी थी।

उसको देख कर उसके मुॅह से निकला — "अच्छा हुआ जो मैं यहॉ भी नहीं रुका। यहॉ भी रुक कर मैंने कुछ अच्छा नहीं किया होता।"

वह नौजवान आगे और आगे चलता गया। आखिर वह अपने शहर पहुॅच गया जहॉ उसका जन्म हुआ था और उसके सगे सम्बन्धी रहते थे। पर यह क्या? वह जगह तो इतनी बदल गयी थी कि वह उसको पहचान ही नहीं सका।

न केवल उसका घर ही चला गया था बल्कि वह सड़क भी नहीं थी जिस पर उसका घर था। वहॉ उसने अपने रिश्तेदारों के बारे में

पूछा पर उस नाम के परिवार का तो कभी किसी ने नाम भी नहीं सुना था।

और बस। यहीं उसकी यात्रा का अन्त था। उसने निश्चय किया कि उसको अब तुरन्त ही वापस अपने महल चले जाना चाहिये। सो उसने अपना घोड़ा घुमाया और महल की तरफ चलना शुरू किया।

वह अभी आधे रास्ते ही गया होगा कि उसको एक गाड़ी वाला मिला जिसकी गाड़ी पुराने जूतों से भरी हुई थी और उस गाड़ी को एक बैल खींच रहा था।

गाड़ी वाला उस आदमी को देख कर बोला — "जनाब मेरी यह गाड़ी ज़रा कीचड़ में फॅस गयी है। क्या आप एक मिनट के लिये घोड़े से उतर कर मेरी इस गाड़ी को यहॉ से निकालने में मेरी सहायता करेंगे?

मैं बहुत देर से किसी को अपनी सहायता के लिये देख रहा हूॅ पर इधर से मुझे कोई जाता आता ही दिखायी नहीं दिया। बड़ी देर के बाद अब आप मिले हैं इसी लिये मुझे यह प्रार्थना आपसे करनी पड़ी। अगर आप मेरी सहायता करा देंगे तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

नौजवान कुछ सोचता रहा तभी वह गाड़ी वाला फिर बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता कीजिये। जैसा कि आप देख रहे हैं मैं यहॉ पर अकेला हूॅ और अब रात भी होने वाली है। अगर अभी

आपने मेरी सहायता नहीं की तो में यहॉ रात भर के लिये अकेला पड़ा रह जाऊॅगा।"

उस नौजवान को उस गाड़ी वाले पर दया आ गयी और वह घोड़े पर से उतर गया। उसने अभी अपना केवल एक ही पैर जमीन पर रखा था और दूसरा अभी भी घोड़े पर ही था कि उस गाड़ी वाले ने उसको उसकी बॉह पकड़ कर नीचे खींच लिया।

और बोला — "आखिर मैंने तुमको तुम्हारे घोड़े पर से उतार ही लिया न। क्या तुमको मालूम है कि मैं कौन हूॅ? मैं मौत हूॅ। इस गाड़ी में तुम इन पुराने जूतों को देख रहे हो न?

ये वही जूते हैं जिनको पहन कर मैं तुमको पकड़ने के लिये तुम्हारे पीछे भागता रहा हूॅ। आज तुम मेरे हाथ लगे हो जिसके हाथों से अब तक कोई नहीं बच सका।"

जैसे ही उस गाड़ी वाले ने उसको घोड़े से खींचा उसका दूसरा पैर भी जमीन पर आ गया और वह तुरन्त ही मर गया।

सो उस नौजवान को भी मरना ही पड़ा जो बेचारा अपना कितना समय और मेहनत लगा कर एक ऐसी जगह की तलाश कर सका जहॉ कोई कभी नहीं मरता। फिर भी उसको मरना पड़ा जैसे और सब लोग मरते हैं।

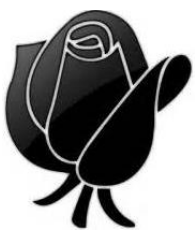

15 बदकिस्मत वासिली[81]

यह बहुत पुरानी बात है कि रूस के एक प्रदेश में एक सौदागर रहता था जो किसी से भी ज़ार से सात सौ गुना अमीर था। इसका मतलब यह हुआ कि ज़ार के राज्य में किसी के पास भी इतनी सम्पत्ति नहीं थी जिसके साथ उसकी सम्पत्ति का मुकाबला किया जा सके।

वह जो भी कोई काम अपने हाथ में ले लेता वही काम उसका खूब चलता और उसे पैसा देता। ऐसा लगता जैसे वह सब सोने में बदल जाता। लोग उसको "अमीर मार्को"[82] कहते थे।

भगवान ने उसको कोई बेटा तो नहीं दिया था हॉ एक बेटी दी थी जो बहुत सुन्दर थी। उसने उसका नाम अनास्तासिया[83] रखा हुआ था। वह पॉच साल की थी।

हालॉकि उसके पास इतना पैसा था पर वह एक बहुत ही कंजूस और नीच किस्म का आदमी था। उसका दिल पत्थर का था। वह चर्च और गरीबों को बड़ी मुश्किल से कुछ दिया करता था। अगर कोई भिखारी उसकी खिड़की पर आ जाये तो वह उसको देख भी नहीं सकता था।

---

[81] Wassily the Unlucky. Taken from the book "Russian Wonder Tales" by George Post Wheeler. 1912. From the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Wonder_Tales
This story is given in the book "Russian Folktales" as "Mark the Rich" by Alexander Afanasiev translated in Hindi by Sushma Gupta in her book "Roos Ki Lok Kathayen-Lok Kathaon Ki Classic Pustaken-5" as "Amir Mark"

[82] Marko the Rich

[83] Anasthasia – name of the daughter of the merchant

वह अपने नौकरों से कह कर उन पर शिकारी कुत्ते छुड़वा देता था। इस वजह से शहर के सारे लोग उससे डरते थे और उससे नफरत करते थे।

एक शाम की बात है कि तीन छोटे बूढ़े जिन्होंने फटे कपड़े पहने हुए थे जिनके सफेद लम्बे बाल थे और जिनकी सफेद लम्बी दाढ़ी थी रोटी और सोने की जगह मॉगने के लिये उसकी खिड़की पर आये।

वह उनको देख रहा था तो जैसा कि वह करता था उनके ऊपर अपने कुत्ते छुड़वाने वाला ही था कि तभी उसकी बेटी अनास्तासिया वहॉ आ गयी और उनके अन्दर बुलाने की इजाज़त मॉगी। उसने कहा कि वे कम से कम घुड़साल में ही सो जायेंगे। उसके पिता ने बुड़बुड़ाते हुए उनको अन्दर बुला लिया।

वह उनके आगे आगे उनको रास्ता दिखाने के लिये भाग गयी। घुड़साल में पहुॅच कर उसने उनके सोने के लिये साफ भूसे की जगह दिखायी और गुड नाइट कह कर वहॉ से आ गयी।

बच्ची सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले ही जाग गयी। वह बिस्तर से कूदी कपड़े पहने अपनी प्रार्थना कही और घुड़साल की तरफ भाग गयी। वह वहॉ जा कर ऊपर चढ़ कर नीचे देखने लगी।

उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे तीनों जो फटे कपड़े पहने गरीब भिखारी लगते थे गरीब भिखारी नहीं थे बल्कि वे

तो सिल्क ब्रोकेड[84] के कपड़े पहने हुए थे जैसे बिशप[85] लोग पहनते हैं और उनके सिरों पर ताज रखा हुआ था। उनके हाथों में अजीब सी किताबें थीं।

जब वह उनकी तरफ देख रही थी तो उनमें से एक आदमी ने कहा — "इस समय जो कुछ हो रहा है तुम इसके बारे क्या कहना चाहते हो।"

दूसरा बोला — "भाई। इस गॉव से दूसरे बराबर वाले गॉव में एक किसान रहता है जिसका नाम इवान है। उसके घर में बेटा पैदा हुआ है।"

पहला आदमी बोला — "हम उसको वासिली[86] नाम देंगे और लोग उसको बदकिस्मत पुकारेंगे। पर हम उसको विरासत में क्या देंगे?"

तो तीसरा बोला — "उसको हम अमीर मार्को की सारी सम्पत्ति देंगे जिसकी घुड़साल में आज हम लोग सोये हैं।"

यह कह कर उन्होंने कुछ पवित्र मूर्तियों के सामने प्रार्थना की और वहॉ से चले गये।

बच्ची तुरन्त ही घर भागी गयी अपने पिता को जगाया और उनको वह सब बताया जो वह अभी सुन कर और देख कर आ रही थी। सौदागर यह सुन कर बहुत परेशान हुआ।

---

[84] A very expensive cloth woven with gold and silver threads

[85] A very high rank Church Official

[86] Wassily – name of the son of Ivan – a farmer in the adjacent village

उसने अपने दूतों को उन तीनों बूढ़ों को लाने के लिये उनके पीछे भेजा पर उनका कहीं पता नहीं चला।

यह जानने की उत्सुकता में कि उनके कहे में कितनी सच्चाई थी उसने अपनी शानदार स्ले में शानदार घोड़े जुतवाये और तुरन्त ही पड़ोस के गॉव की तरफ चल दिया।

वहॉ पहुँच कर वह वहॉ के पादरी से मिला और पूछा कि क्या उस दिन गॉव में किसी के कोई बच्चा हुआ है।

पादरी बोला — "जी हॉ। एक लड़का एक बहुत ही गरीब आदमी के घर पैदा तो हुआ है। मैंने खुद ने उसका नाम वासिली रखा है पर अभी उसका बैप्टाइज़ेशन[87] नहीं हुआ है। क्योंकि उसके पिता के बहुत गरीब होने की वजह से किसी ने उसके गौडफादर[88] होने की जिम्मेदारी नहीं ली है।"

अमीर मार्को बोला — "मैं लेता हूँ यह जिम्मेदारी।"

यह कह कर मार्को उस गरीब के घर गया खूब खाने पीने का आर्डर दिया और उनको बच्चे को लाने का हुक्म दिया। सो इवान और उसकी पत्नी बच्चे वासिली को ले कर आये। उसका बैप्टाइज़ेशन हुआ और फिर बहुत बड़ी दावत हुई। सबने खूब खुशियॉ मनायीं।

---

[87] Baptization is a ceremony by which a person is initiated into Chritian religion. It is like Upnayan (Janeoo) ceremony in Hindus.

[88] Godfather and Godmaother work as the child's parents in case they are not there.

अगले दिन मार्को फिर उस किसान के घर आया उससे बहुत नर्मी से बात की और उसको खुश करते हुए बोला — "ओ किसान। तुम तो बहुत ही गरीब हो। तुम्हारे पास तो परिवार को सँभालने के लिये कोई पत्थर या डंडी भी नहीं है। तुम अपने बच्चे की देखभाल कैसे करोगे। तुम इसे मुझे क्यों नहीं दे देते। मैं इसको ठीक से पालूँगा पोसूँगा और तुम्हारे रहने खाने के लिये एक हजार रूबल दूँगा।"

गरीब किसान ने बहुत सोचा फिर मार्को की बात मान ली। मार्को ने उसे एक हजार रूबल दिये बच्चे को उससे ले कर अपने लोमड़ी की खाल वाले कोट में छिपाया अपनी स्ले में बैठा और वहाँ से चला गया।

उन दिनों जाड़ा था। बहुत ज़्यादा ठंड पड़ रही थी। जमीन पर ऊँची ऊँची बर्फ पड़ी हुई थी। जब वे वहाँ से कई वर्स्त[89] की दूरी पर पहुँच गये तो अमीर मार्को ने स्ले रुकवायी बच्चे को अपने भरोसे के ड्राइवर को दिया और उससे उसे पास की गहरी घाटी में फेंकने के लिये कहा जहाँ से वे गुजर रहे थे।

ड्राइवर ने वैसा ही किया। सौदागर ने उस लाचार बच्चे को गहरी घाटी में फेंके जाते देखा और उससे हँसते हुए कहा — "ओ गरीब भिखारी के बच्चे अब तू यहाँ जा। अब तू मेरी सम्पत्ति लेने

[89] A Verst is an obsolete Russian measure of length, about 0.66 mile (1.1 km) about 500 Sazehn.

के लिये और उसे अपनी मर्जी के मुताबिक खर्च करने के लिये कैसे आता है मैं देखता हूँ।

इत्तफाक से तीसरे दिन सौदागरों का एक झुंड उसी रास्ते से गुजर रहा था। उनके ऊपर मार्को का कुछ पैसा उधार था सो वे उसी को देने के लिये मार्को के घर जा रहे थे।

जब वे उस जगह आये जहाँ से सौदागर ने बच्चे को फेंका था वहाँ आ कर उनको लगा कि उन्होंने किसी के रोने की आवाज सुनी है। यह सुन कर उन्होंने अपनी स्ले रोक ली और रुक कर यह निश्चय करने लगे कि वाकई उन्होंने ठीक सुना था या नहीं।

पक्का कर लेने के बाद उनमें से एक आदमी ने ड्राइवर को नीचे देखने के लिये भेजा। वह आदमी बेचारा ढालू पहाड़ी पर से होता हुआ नीचे गया तो उसने लोमड़े की खाल में लिपटा हुआ एक बच्चा मिला जिसे वह ऊपर ले आया। वह ज़िन्दा था और ठीक था।

वे सौदागर उसको शहर ले आये और मार्को के घर ले आये।

बच्चे को देख कर अमीर मार्को ने सौदागरों से कुछ सवाल पुछने शुरू कर दिये। सौदागरों ने जब उसे बताया कि वह उनको एक घाटी में पड़ा मिला था तो मार्को तुरन्त ही जान गया कि वह बच्चा वही छोटा वासिली था – उसका गौडसन जिसे उसने घाटी में फेंक दिया था।।

उसने उस बच्चे को अपनी गोद में लिया और कुछ देर खिलाने के बाद अपनी बेटी को यह कहते हुए दे दिया — "यह ले अनास्तीसिया यह तेरे साथ खेलने के लिये है।"

फिर वह अपने मेहमानों के साथ आनन्द मनाने लग गया। जब वे सब खा पी चुके और वह बहुत ज़्यादा हॅसी खुशी की हालत में पहुॅच गये तो मार्को बोला — "तुम लोग बहुत अच्छे सौदागर हो। और इसमें भी कोई शक नहीं है कि तुम लोगों को बच्चों को भी कोई कमी नहीं है। तुम लोगों के तो अपने बच्चे ही काफी हैं।

तुम लोग इस बच्चे को मुझे दे दो यह मेरी बच्ची के साथ ही बढ़ कर बड़ा हो जायेगा। मैं इसको ठीक से पाल पोस दूॅगा।"

वह सौदागर जिसके पास यह बच्चा था पहले तो राजी नहीं हुआ पर जब मार्को ने उससे यह कहा कि अगर वह ऐसा करेगा तो वह उसका सारा कर्जा माफ कर देगा और दूसरों ने भी उससे कहा कि यह तो बहुत अच्छा सौदा है तो वह राजी हो गया।

इस तरह बच्चा फिर से मार्को के पास आ गया, अनास्तीसिया की खुशी के लिये। अनास्तासिया ने तुरन्त ही उसके लिये एक पालना मॅगवा लिया। उसमें नये कढ़ाई किये गये परदे लटकवा दिये और बच्चे की खुद देखभाल करने लगी। वह दिन हो या रात कभी उसको अपने से अलग नहीं करती थी।

एक दिन गुजरा दो दिन गुजरे तीन दिन गुजरे। तीसरी रात को एक तूफान आया। सौदागर मार्को तब तक इन्तजार करता रहा जब

तक उसकी बेटी सोती नहीं। जैसे ही वह ठीक से सो गयी उसने बच्चे को उठाया उसे एक खुली हुई नाव में रखा और उसे समुद्र में बहा दिया।

खैर तूफान चला गया। उसने नाव नहीं तोड़ी और नाव सही सलामत एक चट्टानी टापू के किनारे जा कर लग गयी।

उस टापू पर एक मोनैस्टरी थी। उस दिन उसी समय मौनेस्टरी का एक साधु समुद्र से खारा पानी लेने के लिये एक बालटी लिये आ रहा था। समुद्र में उसने एक नाव लगी देखी तो उसमें से बच्चे को निकाल कर वह अपने गुरू के पास ले गया। उसके गुरू ने उस बच्चे का नाम वासिली रख दिया।

उसके बाद उसने कहा — "क्योंकि हमने इसको इतनी खराब हालतों में पाया है तो हम इसको "बदकिस्मत" पुकारेंगे।"

सो उस दिन से बच्चा "बदकिस्मत वासिली" के नाम से जाना जाने लगा। जब तक वह अठारह साल का हुआ वह वहीं मौनैस्टरी में रह कर पलता बढ़ता रहा। उसने वहॉ रह कर लिखना पढ़ना और अक्लमन्दी सीखी।

सारे साधु उसको बहुत प्यार करते थे खास कर के मौनेस्टरी का गुरू। बाद में गुरू उसके ऊपर इतना विश्वास करने लगा कि उसने उसको मौनेस्टरी का सारा पैसा सौंप दिया। वह उस पर पूरी तरह से विश्वास करता था।

मार्को अपना कर्जा वसूल करने के लिये हर साल दूसरे राज्यों में जाया करता था। एक बार उसके जहाज़ ने इस मौनेस्टरी वाले टापू पर अपना लंगर डाल दिया। सौदागर मार्को ने अपनी रात यहीं गुजारी।

वहॉ लोगों ने उसके साथ वैसे ही बरता जैसा वह था यानी एक अमीर आदमी की तरह।

वहॉ के चर्च में बहुत सारी मोमबत्तियॉ जलायी गयीं। गुरू ने सब साधुओं को बुला कर उनसे पूजा करवायी। वहॉ उसको एक ऐसा नौजवान दिखायी दिया जो दूसरों से ज़्यादा आकर्षक और ज़्यादा जवान था।

उसने वहॉ के गुरू से उसका नाम पूछा तो उसने जवाब दिया "हम सब उसे बदकिस्मत वासिली कह कर पुकारते हैं।"

सौदागर बोला — "बड़ा अजीब सा नाम है। उसको ऐसा क्यों कहते हैं।"

इस पर गुरू ने उसको पाने की सारी कथा उसको सुना दी कि उसने सालों पहले एक खुली नाव में पाया था। सुनते ही मार्को समझ गया कि यह उसका अपना गौडसन है जिसको मारने की उसने दो बार कोशिश की पर वह दोनों बार बच गया।

उसने कुछ देर अपने नीच मन में सोचा जब तक पूजा खत्म नहीं हुई। पूजा खत्म होने के बाद उसने गुरू से कहा — "मेरी कितनी इच्छा है कि काश मेरे पास भी ऐसा एक सुन्दर होशियार असिस्टैन्ट

होता जैसा आपके पास है। मैं उसको तुरन्त ही अपना चीफ़ क्लर्क बना लेता और उसको अपना सारा काम सौंप कर उसे एक अमीर आदमी बना देता। क्या आप उसे मुझे नहीं दे सकते?"

गुरू बात को इधर उधर कर के बहुत देर तक सोचता रहा पर मार्को ने जिद कर के उससे जवाब मॉग ही लिया। आखीर में मार्को के पच्चीस हजार रूबल और मौनेस्टरी को दोबारा बनवा देने पर वह राजी हो गया।

मार्को बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। इस तरह से आपके इस बच्चे को मुझे दान में देने से इस मौनेस्टरी को यह मेरा एक तरह का दान हो जायेगा। मैं यह वायदा करता हूँ कि इसे भी एक अच्छा घर मिल जायेगा।"

गुरू ने सारे साधुओं से सलाह ली और यह तय पाया कि बच्चे को इसके साथ जाने देना चाहिये। उसने लड़के को बुलाया और उसको अपना फैसला बताया कि वह उसे इस सौदागर को देना चाहता था। सौदागर ने उससे कहा कि वह उसकी पत्नी के लिये एक खास चिट्ठी ले जाये क्योंकि उसको अभी और जगह भी जाना है।

मार्को ने जो चिट्ठी लिखी थी वह कुछ ऐसे थी — "मार्को की तरफ से उसकी पत्नी के लिये। जैसे ही यह चिट्ठी लाने वाला तुम्हारे पास पहुँचे तुम रसोईघर के पास एक बहुत बड़े बर्तन में पानी में कौस्टिक सोडा मिला कर उबालना और फिर उसे अपने पास

बुलाना। जब वह बर्तन के पास से गुजरे तब उसको उस पानी में धक्का दे देना ताकि यह मर जाये।

यह काम बिना किसी गलती के करना क्योंकि यह नौजवान मेरे लिये कुछ बुरा सोच रहा है। अगर तुमने यह नहीं किया तो तुम इसकी सजा से नहीं बचोगी।"

बदकिस्मत वासिली यह चिट्ठी ले कर मार्को के घर चला। उसने मौनेस्टरी के गुरू और साधुओं को ऑखों में ऑसू भर कर विदा कहा और अपने नये मालिक के काम पर चल पड़ा।

उसको समय ज़्यादा लगा या कम लगा। उसके लिये रास्ता लम्बा था या छोटा सड़क चिकनी थी या फिर बहुत खराब वह चलता रहा तो एक रात एक ऐसे जंगल में आ पहुँचा जहॉ कोई आदमी नहीं रहता था। कोई बिल्डिंग भी नहीं थी सिवाय गाय रखने के लिये बनाये गये एक शैड के।

वह इस शैड में सोने के लिये घुस गया तो वहॉ उसको तीन भिखारी दिखायी दिये जिनके लम्बे सफेद बाल थे और लम्बी सफेद दाढ़ी थी।

उसने अपने खाने में से उनको भी कुछ खाने को दिया। बाद में वे सब बात करते रहे फिर सो गये।

सोते में वासिली ने एक सपना देखा कि वे तीन भिखारी भिखारी नहीं थे बल्कि बहुत ही शानदार ब्रोकेड के कपड़े पहने हुए थे। उनके सिरों पर ताज रखे हुए थे और उनके हाथों में एक अजीब सी किताब थी।

उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसको लगा कि उनमें से एक आदमी दूसरे से कह रहा है "भाई। यह नौजवान कहाँ जा रहा है।"

दूसरा बोला — "यह तो भाई अमीर मार्को के घर जाता है। यह तो सौदागर की एक चिट्ठी ले कर उसकी पत्नी को देने जा रहा है।"

पहले ने फिर पूछा — "उस चिट्ठी में क्या लिखा है।"

दूसरे आदमी ने कहा — "इस चिट्ठी में लिखा है कि इसको देख कर तुरन्त ही रसोई में एक बड़ा बर्तन भर कर सोडा डाल कर पानी उबालना और इसको उसमें डुबो देना ताकि यह मर जाये। इस कुकर्म को किस तरह से रोका जाये।"

तीसरा बोला — "मैं इसका सन्देश बदले देता हूँ।"
कह कर उसने नौजवान की जेब से चिट्ठी निकाली और उस पर एक फूँक मारी और बोला — "अब इसे निडर हो कर यह ले जाने दो क्योंकि भगवान इसको ऐसे ही नहीं छोड़ देगा। वह इसकी रक्षा अवश्य ही करेगा।"

बदकिस्मत वासिली ने सपने में यह सब सुना तो उसकी ऑखों में ऑसू आ गये उसने कहा "मैंने इस सौदागर का क्या बिगाड़ा है जो यह मेरी मौत चाहता है।"

पर जब वह जागा तो वह खुश था कि वह सब तो एक सपना ही था। तीनों बूढ़े वहॉ से पहले ही जा चुके थे। उसने अपनी जेब छू कर देखा तो चिट्ठी तो वहॉ रखी ही थी बस वह अमीर मार्को के घर चल दिया। वह मार्को के घर पहुॅचा और वह चिट्ठी ले जा कर मार्को की पत्नी को दी।

मार्को की पत्नी ने उसको खोला और पढ़ा अपनी बच्ची को भी सुनाया। उसकी बेटी तो वासिली को देखते ही प्यार करने लगी। मार्को की पत्नी ने बढ़िया खानों का शराब और बीयर का हुक्म दिया। घर की सफाई की उसे सजाया। अनास्तासिया को सुन्दर कपड़े और कीमती गहने पहनाये।

यह सब कर के उसने पड़ोसियों और पादरी को बुलाया। उसी दिन बदकिस्मत वासिली और अनास्तासिया दोनों की शादी हो गयी और उनको सुनहरा ताज पहना दिया गया।[90] वे मार्को के घर ही रहे। कुछ महीने बीत गये।

एक दिन खबर आयी कि सौदागर मार्को जहाज़ से घर वापस लौट रहा है। यह सुन कर मार्को की पत्नी बेटी और दामाद तीनों जल्दी से उससे बन्दरगाह पर मिलने के लिये पहुॅचे।

[90] A golden crown is used in the Greek marriage ceremony.

जब अमीर मार्को ने उनको देखा और उसे यह पता चला कि उसकी बेटी की शादी बदकिस्मत वासिलीसा से हो गयी है तो वह तो बहुत ज़ोर से गुस्सा हो गया।

उसने अपनी पत्नी को एक तरफ बुलाया और उससे पूछा कि उसने उसका हुक्म न मानने की हिम्मत कैसे की। उसने कहा कि उसने कुछ नहीं किया उसने तो बस वही किया जो उसने चिट्ठी में उसे लिखा था है।

यह कह कर उसने उसकी भेजी चिट्ठी उसको दिखा दी। उसको वह चिट्ठी देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। क्योंकि यह चिट्ठी तो वह चिट्ठी ही नहीं थी जो उसने लिखी थी और उससे भी ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह चिट्ठी उसी के हाथ की लिखी हुई थी।

उसको अपना गुस्सा पीना पड़ा। अब उसने यह प्लान करना शुरू कर दिया कि वह अपने दामाद को किसी तरह से मार दे।

वे एक साथ एक महीना रहे दो महीना रहे तीन महीना रहे। तब एक दिन अमीर मार्को ने बदकिस्मत वासिली को बुलाया और उससे तीसवीं जमीन जो सत्ताईसवीं जमीन[91] के उस पार थी जाने के लिये तुरन्त तैयारी करने के लिये कहा।

उसने कहा कि इस राज्य में एक ज़ार रहता है जिसका नाम ज़िमी[92] है। तुम उसके पास चले जाओ और उससे कहना कि वह

[91] Across three times nine countries to the 30th Realm

[92] Zmey named Tsar

मेरा बारह साल का किराया जो उसके ऊपर चढ़ा हुआ है वह दे दे। उसने उस जमीन के ऊपर महल भी बनवा लिया है जो मेरी है।

जब यह काम पूरा हो जाये तो मेरे बारह जहाज़ों के बारे में पता लगा कर लाना जो करीब तीन साल पहले खो गये थे और जिनकी अब तक कोई खबर नहीं मिली है। और हॉ देखो कल सुबह ही निकल जाना।"

जब अनास्तासिया ने यह सुना तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसने अपने पिता से वासिली को वहॉ न भेजने की भी कोशिश की पर सब बेकार।

सो अगली सुबह वासिली ने अपनी प्रार्थना की अपनी पत्नी को विदा कहा अपने थैले में बहुत सारे बिस्किट भरे अपने बढ़िया वाले घोड़े पर चढ़ कर अपनी यात्रा पर चल दिया।

रास्ता लम्बा था या छोटा, ज़ार ज़िमी का राज्य पास था या दूर था आखिरकार वह उसकी सीमा पर आ पहुँचा। यहॉ एक बहुत चौड़ी नदी थी जिसमें बूढ़े नाविक लोग नाव चलाया करते थे। वह उनमें से एक नाव पर चढ़ गया और उससे उसे दूसरी ओर ले जाने के लिये कहा।

नाविक ने पूछा — "मेरे दोस्त तुम उधर कहॉ जा रहे हो।"

वासिली बोला — "मैं ज़ार ज़िमी से मिलने जा रहा हूँ। मैं उससे वह पैसा मॉगने जा रहा हूँ जो उसने मेरे छोटे ससुर से उधार

ले रखा है। उसने मेरे ससुर की जमीन पर अपना महल भी बनवा रखा है तो उसका किराया भी।"

नाविक बोला — "ऐसे काम के लिये तो कोई तेज़ तर्राट आदमी चाहिये। खैर क्या तुम ज़ार ज़िमी से मेरा एक काम कराओगे।"

वासिली बोला "खुशी से।"

नाविक बोला — "जब तुम ज़ार ज़िमी के सामने पहुँचो और तुम्हें मौका मिले तो ज़रा उसको याद दिलाना कि तीस साल से उसने मुझे यह सजा दे रखी है कि मैं लोगों को नाव में बिठा कर यह नदी पार कराऊँ। मेहरबानी कर के उससे यह पूछना कि क्या मुझे इसी तरीके से तीस साल और काम करना पड़ेगा।

और अगर नहीं तो उससे पूछना कि इस काम से फिर मुझे कब छुट्टी मिलेगी। क्या तुम उससे मेरे बारे में यह बात मेरे लिये पूछोगे?"

वासिली ने उससे वायदा किया कि वह उसका यह काम जरूर करेगा। कुछ ही देर में वह समुद्र की एक धारा के पास आ गया जिसके दूसरे किनारे पर एक बहुत बड़ी व्हेल मछली अटकी पड़ी थी।

उसकी पूँछ पर बहुत बड़ा जंगल था और उसकी पीठ पर एक गॉव बसा हुआ था जिसके लोग खेती करने के लिये मछली के इधर

उधर जाया करते थे। वे लोहे का हल इस्तेमाल करते थे और उससे मछली की खाल निकाल लिया करते थे।

उसकी ऑखों के बीच में बच्चों ने अपना खेल का मैदान बना रखा था और उसकी मूँछों से बच्चियॉ मुशरूम चुना करती थीं।

वासिली उस व्हेल मछली पर चढ़ कर उस जगह को पार कर गया। उसके घोड़े के खुर मछली की हड्डियों पर तड़ातड़ बज रहे थे। जब वह इतनी बड़ी व्हेल को पार कर के दूसरी तरफ पहुँचा तब उसने अपना बड़ा सा मुँह खोल कर एक सॉस ली।

वह बोली — "भगवान करे तुम्हारी यात्रा कामयाब हो। तुम कहॉ जा रहे हो।"

वासिली बोला — "मैं ज़ार ज़िमी से वह पैसा वसूलने के लिये मिलने जा रहा हूँ जो उसे मेरे ससुर को देना है।"

व्हेल मछली बोली — "अगर तुम उससे पैसा वसूलने में कामयाब हो जाते हो तो तुम सचमुच में बहुत होशियार लड़के हो। क्या तुम ज़ार से मिलने पर मेरा एक काम करोगे।"

वासिली बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। बोलो।"

व्हेल मछली बोली — "जब तुम उससे मिलो और तुम्हें मौका मिले तो उससे कहना कि मैं यहॉ इस हालत में तीन साल से पड़ी हुई हूँ जहॉ रास्ते पर चलने वाले घुड़सवार हो या पैदल चलने वाला सभी मेरे ऊपर चल चल कर मेरी हड्डियॉ तोड़ देते हैं।

मौका मिले तो उससे पूछना कि मेरी यह बेइज़्ज़ती वाली ज़िन्दगी तीन साल की ही है या अभी और भी है और अगर नहीं है तो मैं अपनी जगह पर तैरने कब जाऊँगी। क्या तुम मेरी यह बात उससे कहोगे?"

बदकिस्मत वासिली ने व्हेल मछली से उसकी बात कहने का वायदा किया और वहाँ से चल कर एक हरे घास के मैदान में आ गया। वहाँ एक सफेद पत्थर का घर खड़ा था।

उसके फाटक पर सुरक्षा के लिये कोई सन्तरी नहीं खड़ा हुआ था। उसके दरवाजे पर भी कोई चौकीदार नहीं था सो उसने बाहर घास के मैदान में घास चरने के लिये अपना घोड़ा छोड़ा और उस महल में अन्दर चला गया।

महल के अन्दर सब कुछ शान्त पड़ा था। वहाँ इसको कोई दिखायी नहीं दिया। वह एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता रहा। महल का हर दूसरा कमरा उसके पहले कमरे से ज़्यादा सुन्दर था।

आखिर में वह सबसे अन्दर के कमरे में आ गया। उसने देखा कि वहाँ एक सुन्दर लड़की एक काउच पर बैठी आँसू बहा रही है।

वासिली बोला — "ओ सुन्दर लड़की। भगवान तुम्हें तन्दुरुस्ती दे।"

लड़की बोली — "तुम्हें भी। पर तुम किस तरह के आदमी हो? तुम इस भयानक जगह पर कैसे आये? क्या तुम्हें पता नहीं कि यह

ज़ार ज़िमी का राज्य है? सॉपों के राजा का राज्य जो अपने हर खाने में एक आदमी खाता है।"

वासिली ने तब उसे बताया कि वह वहॉ क्यों आया है। सुन कर लड़की बोली — "अब क्योंकि तुमने मुझे पहले ही देख लिया है इसलिये मैं तुम्हें यह बता दूँ तुमको यहॉ पैसा लाने के लिये नहीं भेजा गया है बल्कि इसलिये भेजा गया है ताकि वह तुम्हें खा सके।

कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी ज़िन्दगी बचाऊँगी। पहले तुम मुझे यह बताओ कि तुम किस सड़क से यहॉ तक आये हो और तुमने अपने रास्ते में क्या देखा।"

वासिली ने उसे सब कुछ साफ साफ बता दिया कि पहले उसे कैसे एक नाविक मिला फिर कैसे व्हेल मछली मिली और कैसे उन दोनों ने उससे अपने को आजाद करने की बात की।

जब वे अभी बात कर ही रहे थे कि जमीन बड़ी ज़ोर से हिली। लड़की बोली "सॉपों का ज़ार ज़िमी आ रहा है। तुम तुरन्त ही छिप जाओ।"

कह कर उसने अपने पलंग के नीचे रखा हुआ एक बक्सा दिखाया। उसने उसको उसमें बन्द कर के उसका ढक्कन लगा दिया। फिर बोली "तुम वह सब सुनना जो कुछ भी वह मुझसे कहेगा।"

उसी समय ज़ार ज़िमी एक बहुत बड़े सॉप की शक्ल में उस कमरे में आ गया। वह आते ही बोला — "मुझे यहॉ एक रूसी आदमी की बू आ रही है। यहॉ कौन आया था।"

लड़की हॅसी और बोली — "क्या कोई रूसी महल के इस अन्दरूनी कमरे में आने की हिम्मत करेगा? लगता है कि तुम सारे दिन रूस की जमीन के ऊपर उड़ते रहे हो इसलिये तुम्हारी नाक में रूसी आदमी की बू बस गयी है। तुम खुद उसकी बू यहॉ ले कर आये हो।"

सॉपों का ज़ार यह सुन कर सन्तुष्ट हो गया। वह उसे चूमने लगा और उसके साथ खेलने लगा। फिर वह पलंग पर कुंडली मार कर बैठ गया और लड़की से बोला — "प्रिये मैं बहुत थक गया हूॅ। मेरे सिर की थोड़ी सी मालिश कर दो ताकि मैं सो जाऊॅ।"

सो वह उसके सिर की मालिश करने लगी। मालिश करते करते वह बोली — "मेरे प्यारे ज़ार। जब तुम यहॉ नहीं थे तो मैंने एक सपना देखा। सुनोगे।"

"हॉ हॉ।"

उसने उससे कहा — "मैंने एक सपना देखा कि मैं एक बहुत ही चौड़ी सड़क पर चल रही हूॅ। वह समुद्र से निकली एक धारा के ऊपर बनी हुई है। वहीं पर एक बहुत बड़ी व्हेल मछली पड़ी हुई है। इससे लोगों को वे चाहे पैदल हों या घोड़ों पर उन्हें उसके ऊपर से जाना ही पड़ता है।

उसने मुझसे पूछा कि वह यह सब दुख कब तक झेलती रहेगी। वह इससे कब आजाद होगी।"

ज़ार ज़िमी ने सोते हुए जवाब दिया — "वह वहाँ तब तक इसी हालत में रहेगी जब तक कि वह सारे और पूरे बारह जहाज़ नहीं उलट देगी जो उसने तीन साल पहले समुद्र के बीच में रहते हुए मेरी इजाज़त के बिना ही निगल लिये थे।"

लड़की आगे बोली — "इसके बाद मैंने अपने सपने में देखा कि मैं अब एक बहुत चौड़ी नदी के पास आ गयी हूँ। वहाँ एक नाविक अपनी नाव में लोगों को बिठा कर नदी पार कराता है। जब उसने मुझे उस नदी को पार कराया तो मुझसे उसने पूछा कि उसे यह काम करते करते बारह साल बीत गये हैं वह यह काम कब तक करता रहेगा।"

ज़ार बोला — "उसको चाहिये कि वह जो भी उसकी नाव में पहला आदमी आये उसको ले ले और फिर खुद उस नाव से बाहर निकल कर उस नाव को नदी में धक्का दे कर बहा दे। इससे वह नया आने वाला आदमी उसकी जगह हमेशा के लिये वह नाव खेता रहेगा।"

और यह कहते कहते ज़ार गहरी नींद सो गया। कुछ ही देर में वह इतनी ज़ोर ज़ोर से खर्राटे मारने लगा कि महल की दीवारें काँपने लगीं।

लड़की ने उठ कर बक्सा खोला और बदकिस्मत वासिली ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया और महल से चला गया। उसने घास के मैदान से अपना घोड़ा लिया उस पर सवार हुआ और उसी रास्ते वापस चल दिया जिस रास्ते वह आया था।

जब वह समुद्र की धारा के पास आया और व्हेल मछली के ऊपर से जाने लगा तो उसने अपनी ऑखें खोलीं और वासिली से पूछा — "मेरे दोस्त क्या तुमने मेरे बारे में ज़ार से बात की?"

वासिली बोला "हॉ की।"

"तो फिर क्या कहा उसने?"

"पहले मुझे तुम्हें पार कर लेने दो उसके बाद ही मैं तुम्हें वह बात बताऊॅगा।"

जैसे ही वह दूसरी तरफ आया वह व्हेल की पूॅछ पर चढ़ गया और बहुत तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ गॉव वालों और रास्ता चलने वालो। तुम लोग अचानक ही चौंक न जाओ इसलिये मैं तुम्हें अभी बता रहा हूॅ तुम लोग इस व्हेल के ऊपर से तुरन्त ही उतर जाओ क्योंकि समुद इसे अब पूरा ढकने वाला है।"

यह सुन कर खेती करने वालों ने अपनी खेती छोड़ दी और चलने वाले जल्दी जल्दी चलने लगे। बच्चे और मुशरूम इकट्ठा करने वाले लोग अपने अपने घरों को चले गये।

वहॉ पहुॅच कर उन्होंने गाड़ी में अपना अपना सामान लादा और वहॉ से दूर चले गये। वह व्हेल मछली फिर वहॉ ऐसे पड़ी रही जैसे वहॉ अभी टार्टर्स आने वाले हों।

उसके बाद वासिली बहुत ज़ोर से बोला — "ओ व्हेल मछली। तू यह सब इसी लिये सह रही है क्योंकि तूने जब तू समुद्र में थी तब बारह पानी के जहाज़ बिना ज़ार की इजाज़त के साबुत के साबुत निगल लिये थे। अब तू इससे तभी आज़ाद होगी जब तू उन सभी जहाज़ों को साबुत और पूरे के पूरे बाहर निकाल देगी।"

ऐसा कह कर उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगायी और व्हेल की पूॅछ से किनारे से उस पार कूद गया। उसको जल्दी से वहॉ से भागना था क्योंकि उसने देखा कि व्हेल जहाज़ों को अपने पेट से बाहर निकालना चाह रही थी।

उन जहाज़ों के खेवट इस खुशी में कि वे फिर से दुनियॉ देख सकेंगे खूब बाजे बजा रहे थे बिगुल बजा रहे थे। उन्होंने अपने मस्तूल आदि सब ठीक कर लिये थे। उन्होंने हर मस्तूल पर एक झंडा लगा लिया था।

हर जहाज़ पर एक पादरी भगवान की प्रार्थना कर रहा था। हर जहाज़ पर खुशी का इतना शोर था कि सारा समुद्र जाग उठा था।

जैसे जैसे जहाज़ों ने व्हेल मछली के मुॅह से निकलना शुरू हुआ व्हेल मछली पानी में छपाके मारने के लिये आजाद होती गयी।

फिर वह पानी के नीचे से चिल्लायी — "ओ वासिली तुम्हें इसका बहुत बहुत धन्यवाद। बताओ मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ। मैं इसका बदला तुम्हें कैसे दूँ? क्या तुम कीमती मोती लोगे या फिर चमकीले रत्न लोगे जो जहाज़ पर जाने वाले लोग ले जाया करते हैं?"

वासिली बोला — "अगर तू मुझे कुछ देना ही चाहती है तो मुझे चमकीले रत्न दे दे।"

व्हेल समुद्र की तली में ऐसे चली गयी हो जैसे कोई चाभी चली जाती है और अपने मुँह में दबा कर एक छोटी से सन्दूकची ले आयी। उस सन्दूकची में ऐसे बहुत सारे रत्न थे जिनकी चमक और कीमत ऑकी नहीं जा सकती। वे दुनियॉ भर के सारे ज़ारों के खजानों से भी अच्छे थे।

तब बदकिस्मत वासिली ने एक जहाज़ के कप्तान से पूछा कि वह जहाज़ किसके हैं और किधर जा रहे हैं। कप्तान ने बताया कि वे जहाज़ अमीर मार्को के हैं। जब हम अपना सामान ले कर जा रहे थे तब इस व्हेल ने हमें निगल लिया था।

वासिली बोला — "तो लो यह सब रत्न भी तुम उन्हीं के पास ले जाओ। मैं उनका दामाद हूँ।"

वे तो उसको जहाज़ पर बिठा कर भी ले जाते पर उसने कहा कि वह उसका ज़ार ज़िमी के राज्य की सीमा पर इन्तजार करें। वह

वहॉ पहुँच कर उनके जहाज़ में बैठेगा। फिर वह उस नाव वाले के पास चल दिया जिस नाव से वह नदी पार कर के आया था।

वहॉ पहुँचा तो नाव के नाविक ने उससे पूछा — "ओ दोस्त क्या तुम मेरा कुछ काम कर के आये?"

वासिली बोला "हॉ।"

नाविक ने पूछा — "फिर क्या कहा उसने?"

वासिली बोला — "जब तुम मुझे इस नदी के पार छोड़ दोगे तब मैं तुम्हें बता दूँगा।"

सो उन्होंने नदी पार की और जब वासिली दूसरे किनारे पर आ गया तो वह उसके कोने पर चढ़ कर बोला — "ओ नाविक। जब कोई दूसरा यात्री इस नाव पर चढ़े तो तुम खुद उसमें से बाहर कूद जाना और उस यात्री को नाव सहित पानी में धक्का दे देना तब वह नया आदमी इस नाव को ज़िन्दगी भर चलाता रहेगा।"

और ऐसा कह कर वह उस नाव पर से कूद गया। अपने घोड़े पर सवार हो कर नदी के मुँहाने पर पहुँचा जहॉ अमीर मार्को के जहाज़ उसका इन्तजार कर रहे थे। वह अमीर मार्को के शहर पहुँचने के लिये एक जहाज़ पर चढ़ गया।

जब वे मार्को के शहर में जा कर रुके तो दूत मार्को से यह कहने के लिये दौड़े कि वासिली तो सही सलामत खोये हुए बारह जहाज़ों के साथ वापस आ गया है। वह उनमें इतने सारे रत्न भर

कर लाया है जिनकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। यह सुन कर तो वह तो गुस्से से पागल हो उठा।

उसने अपने दामाद का ऊपर ऊपर से तो खुशी से स्वागत किया पर मन ही मन सोचा कि वह उसको फिर से ज़ार ज़िमी के पास भेजेगा। इस बार वह वहॉ से ज़िन्दा बच कर नहीं आ पायेगा। क्योंकि अबकी बार वह इससे पहले ही वहॉ जा कर सब मामला ठीक कर के आयेगा।

सो जैसे ही खुशियॉ खत्म हुई तो सौदागर ने अपने बाहर जाने के प्रोग्राम का ऐलान किया। उसने कुछ घोड़े और सवार बुलवाये और वहॉ से चल दिया।

वह लम्बे रास्ते चला वह छोटे रास्ते चला और आखीर में चौड़ी नदी के किनारे आ पहुॅचा और नाविक को नाव उस पार ले जाने के लिये कहा। जैसे ही वह नाव पर चढ़ा नाविक नाव में से कूद गया और नाव को नदी में धक्का दे दिया।

और चिल्ला कर बोला — "तुम जो कोई भी हो अब इस नाव को हमेशा के लिये खेने का जिम्मा तुम लो। अब तुम हमेशा के लिये यात्री लोगों को यह नदी पार कराते रहना।" यह कह कर वह खुशी खुशी वहॉ से चला गया।

अमीर मार्को को इस शाप के बारे में कुछ पता नहीं था। इस तरह से अमीर मार्को ज़ार ज़िमी के चंगुल में फॅस गया। वह हमेशा के लिये नाव से लोगों को नदी पार कराता रहा।

इधर इस तरह वासिली को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा। वह अपनी पत्नी अनास्तासिया के साथ बहुत दिनों तक हँसी खुशी रहा। वह हमेशा ही उसे बहुत प्यार करती रही। इस तरह से बदकिस्मत वासिली को अमीर मार्को की सारी सम्पत्ति मिल गयी।

16 किस्मत[93]

जो होना था हो के रहा की एक और लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ली गयी।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही ताकतवर राजा था जिसके केवल एक ही बेटा था। जब यह लड़का बड़ा हो गया तो सारी लड़कियॉ इससे प्यार करने लगीं।

राजा की यह बड़ी इच्छा थी कि उसका बेटा जल्दी ही अपनी ज़िन्दगी में जम जाये। सो उसने उसके लिये एक राजकुमारी ढूँढ ली और उससे कहा कि वह उससे शादी कर ले।

पर बेटा नहीं माना और बोला — "यह मेरी किस्मत में नहीं है कि मैं इस लड़की से शादी करूँ। मैं इससे शादी नहीं करूँगा।"

कुछ समय बाद वह नौजवान अपने पिता के पास गया और बोला — "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे बाहर जाने दें और मुझे अपनी किस्मत आजमाने दें। इसके लिये आप मुझे तीन थैले भर कर पैसे दे दें।"

राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे बाहर जाने की इजाज़त दे दी। राजकुमार ने भी अपना सामान तैयार किया और अपने सफर पर जाने के लिये तैयार हो गया।

---

[93] Fate – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

वह चलता रहा कि चलते चलते वह एक अजनबी से मिला। यह अजनबी एक देवदूत[94] था जो एक आदमी के रूप में था।

उसने राजकुमार से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो तुम्हें किसकी तलाश है।"

राजकुमार ने उसे सब बताया और कहा कि वह वह सब जानना चाहता था जो उसकी किस्मत की किताब में उसके लिये लिखा था।

इस पर उस अजनबी ने उसको एक बहुत सुन्दर महल दिखाया और कहा तुम वहॉ चले जाओ वहॉ जा कर तुम अपनी किस्मत के बारे में जान पाओगे। राजकुमार ने उसको धन्यवाद दिया और उस महल की तरफ चल पड़ा।

जब वह उस महल के कम्पाउन्ड में घुसा तो उसने चारों तरफ देखा। उसने देखा कि वहॉ तो चारों तरफ कागज के टुकड़े ही टुकड़े बिखरे पड़े हैं।

उसने उनको देखना शुरू किया कि शायद कहीं उसको अपनी किस्मत का कोई कागज मिल जाये पर वह बहुत देर तक वहॉ बेकार ही उसे इधर उधर ढूँढता रहा। उसको वहॉ अपनी किस्मत का कोई कागज मिला ही नहीं।

तभी महल में से एक दूसरा आदमी बाहर निकल कर आया और राजकुमार से पूछा — "भाई तुम क्या चाहते हो। तुम क्या ढूँढ रहे हो।"

---

[94] Translated for the word "Angel"

राजकुमार बोला — "मैं इन कागजों में एक कागज ढूँढ रहा हूँ जिसमें मेरी किस्मत लिखी हुई हो।"

वह अजनबी बोला — "तुम उसे वहाँ क्यों ढूँढ रहे हो। वहाँ तो गरीब लोगों की किस्मत के कागज पड़े हुए हैं। राजाओं की किस्मत के कागज तो अन्दर हैं। आओ तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हें तुम्हारी किस्मत दिखाता हूँ।"

कह कर वह आदमी राजकुमार को महल के अन्दर ले गया। राजकुमार महल के अन्दर घुसा और उस आदमी ने राजकुमार की किस्मत का कागज ढूँढ कर उसको बुलाया।

उसमें लिखा था "फलाँ फलाँ राजकुमार एक जुलाहे की बेटी से शादी करेगा जो नौ साल से बीमार पड़ी है।"

जब उसने यह राजकुमार के सामने यह ज़ोर से पढ़ा तो राजकुमार तो यह सुन कर डर के मारे काँप गया। उसकी तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। अब वह क्या करे।

राजकुमार ने मन ही मन सोचा कि वह ऐसा नहीं होने देगा। वह अपनी किस्मत को बदल कर छोड़ेगा। वह एक ऐसी लड़की से शादी कैसे कर सकता है जो एक जुलाहे की लड़की हो और नौ साल से बीमार पड़ी हो।

उसने अपनी किस्मत का वह कागज लिया और वहाँ से जुलाहे की बेटी को ढूँढने चल दिया।

वह चलता गया चलता गया और एक घने जंगल में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते पहुँचते उसे शाम हो गयी। वह वहाँ रात को सोने की इच्छा से इधर उधर घूम कर कोई घर तलाश करता रहा।

आखिर उसे एक चमकती हुई रोशनी दिखायी दे ही गयी। वह उधर ही की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसे एक मकान दिखायी दिया। उसने मकान मालिक से रात को ठहरने की जगह माँगी।

मकान मालिक ने कहा — "आप तो कोई बड़े आदमी लगते हैं। हमारे पास आपके लायक तो कुछ भी नहीं है पर हम आपको हमारे पास जो कुछ सबसे अच्छा है वह दे सकते हैं क्योंकि मेहमान तो भगवान की दी हुई भेंट होता है।"

सो राजकुमार वहाँ रात को ठहर गया। उसके मेजबान को किसी तरह की शिकायत नहीं थी।

जब उन्होंने रात का खाना खा लिया तो राजकुमार को लगा कि कोई दूसरा आदमी एक दूसरे कमरे में खाना खा रहा था। उसने अपने मेजबान से कहा — "मुझे उम्मीद है कि आप बुरा नहीं मानेंगे अगर मैं आपसे उत्सुकतावश यह पूछूँ कि दूसरे कमरे में कौन है और इसका क्या मतलब है।"

तब उसके मेजबान ने उसको यह कहानी सुनायी —

"मैं एक जुलाहा हूँ और मेरी रोज की रोटी बड़ी मुश्किल से चलती है। भगवान ने मुझे कोई ऐसा आदमी भी नहीं दिया जो मेरे काम में मेरी सहायता कर सके।

मेरे केवल एक बेटी है जो नौ साल से बिस्तर से नहीं उठी है। मैं आपसे यह यकीन के साथ कह सकता हूँ कि वह मेरी कोई सहायता नहीं करती है।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने दुख से दाँतों तले अपनी जीभ काट ली और बहुत उदास हो गया। वह उस रात सो नहीं पाया। वह सारी रात बस यही सोचता रहा कि वह अपनी किस्मत से कैसे बच सकता है।

बीच रात में जब हर एक खर्राटे मार कर गहरी नींद सो रहा था तो राजकुमार चुपके से उठा अपने सोने के कमरे से बाहर निकला और चुपचाप जुलाहे की बेटी के सोने के कमरे में चला गया।

जब उसने उसको देखा तो वह अन्दर से बहुत ही परेशान हो गया। पर फिर भी उसने अपना खंजर निकाला और उसके शरीर में घुसेड़ दिया। उसके बाद बिना कोई आवाज किये वह वहाँ से बाहर निकल आया। उसने अपना पैसा वहीं छोड़ दिया और रात में ही वहाँ से भाग लिया।

वहाँ से वह अपने घर अपने पिता के पास आया और उनसे अपनी बुरी किस्मत की शिकायत की। उसका पिता इस बात पर

बहुत दुखी हुआ पर उसने अपना दुख उससे छिपा लिया और अपने बेटे को तसल्ली दी।

कुछ समय बीत गया। एक दिन राजकुमार शिकार के लिये जंगल गया तो उसने वहॉ एक अकेली जगह में एक बहुत सुन्दर महल देखा और उस महल में सूरज जैसी चमकीली एक लड़की देखी।

राजकुमार तो उस लड़की की सुन्दरता को देखता का देखता ही रहा गया। वह तो उसको हमेशा के लिये देखता रह सकता था। वह उसकी तरफ बहुत देर तक देखता रहा पर वह उसको दूर से देखते सन्तुष्ट नहीं हो रहा था।

सो उसने अपना घोड़ा उधर की तरफ दौड़ा दिया। जब वह उस महल के पास आया तो वह उसकी सुन्दरता से और ज़्यादा प्रभावित हो गया। वह अपने घोड़े से उतरा और उससे पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी।

जब उसने खुशी से यह कह दिया कि हॉ वह उससे शादी करने के लिये तैयार है तो वह बहुत खुश हुआ और घर चला गया।

रास्ते में वह यह सोचता हुआ बहुत खुशी खुशी जा रहा था कि उसने अपनी किस्मत बदल ली थी। बजाय इसके कि वह जुलाहे की एक नौ साल से बीमार लड़की से शादी करता उसको तो अब कितनी सुन्दर पत्नी मिल रही थी।

घर जा कर उसने अपने पिता को बताया कि उस दिन जंगल में क्या हुआ था और शादी की तैयारियॉ करने के लिये कहा। राजा को भी अपने बेटे को खुश देख कर बहुत खुशी हुई और उसने एक शानदार शादी के लिये तैयारियॉ शुरू कर दीं।

बड़ी धूमधाम से दोनों की शादी हो गयी। शादी के कुछ दिन बाद राजकुमार ने अपनी पत्नी के दिल पर हाथ रखा तो वहॉ उसको कुछ सख्त सख्त सा लगा।

उसने पूछा — "यह क्या है।"

उसकी पत्नी ने जवाब दिया — "मैं एक गरीब जुलाहे की बेटी हूॅ। नौ साल तक मैं बिस्तर में पड़ी रही – लाचार और अपंग, खीरे की तरह से पीली।

एक बार एक नौजवान मेरे पिता के पास रात को शरण मॉगने आया। उसने खंजर मेरे शरीर में भौंक दिया और जल्दी से भाग गया और अपने रास्ते चला गया।

मैं बहुत बीमार थी पर मेरी मॉ ने मेरी बगल में प्लास्टर लगाया और मैं बिल्कुल ठीक हो गयी। हमारा मेहमान तीन थैले पैसे छोड़ गया था। उससे हमने एक महल खरीद लिया।

उसके बाद मेरे पिता ने जुलाहे का काम छोड़ दिया। और हम लोग बिना किसी चिन्ता के रहने लगे।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला — "हे भगवान तेरे हुक्म बेकार नहीं हो सकते।"

तब उसने अपनी प्रिय पत्नी को वह सब कुछ बता दिया जो उसके साथ घटा था। पत्नी यह सुन कर खूब हॅसी।

17 ज़िन्दगी का भेद[95]

जो होना था हो के रहा की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये भारत के बंगाल प्रान्त में कही जाने वाली लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके दो रानियॉ थीं – दुओ और सुओ।[96] दोनों के कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन एक फकीर[97] उनके महल के दरवाजे पर भीख मागने आया तो सुओ रानी उसको एक मुट्ठी चावल देने गयी। फकीर ने उससे पूछा क्या तुम्हारे बच्चे हैं? सुओ बोली "नहीं।"

यह सुन कर कि उसके बच्चे नहीं हैं फकीर ने उससे भीख लेने से मना कर दिया। क्योंकि जिस स्त्री के बच्चे नहीं है उसके हाथ अपवित्र होते हैं। फिर उसने उसको बच्चा होने के लिये एक दवा देने के लिये पूछा।

रानी ने जब अपनी इच्छा जाहिर की कि हॉ वह दवा लेने को तैयार है तो उसने उसको वह दवा यह कह कर दी — "लो यह दवा

---

[95] Life's Secret (Tale No 1) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/Life%27s_Secret
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. Its Hindi translation under the title "Bengal Ki Lok Kathayen" has been published by NBT, Delhi, 2020.

[96] Duo and Suo – Kings, in Bengali folk-tales, have invariably two queens—the elder is called duo, that is, not loved; and the younger is called suo, that is, loved.

[97] Translated for the word "Mendicant"

लो। इसे अनार के फूल के रस के साथ निगल जाना। अगर तुम ऐसा करोगी तो समय आने पर तुम्हारे बेटा होगा।

तुम्हारा वह बेटा बहुत ज़्यादा सुन्दर होगा। उसका रंग अनार के फूल के रंग जैसा होगा। तुम उसका नाम दालिम कुमार[98] रखना।

क्योंकि दुश्मन लोग तुम्हारे बेटे को मारना चाहेंगे तो मैं तुम्हारी जानकारी के लिये तुमको बता दूँ कि तुम्हारे बेटे की ज़िन्दगी एक बोल मछली[99] में बन्द रहेगी जो तुम्हारे महल के सामने वाले तालाब में है।

उस मछली के दिल में एक छोटा सा लकड़ी का बक्सा है। उस बक्से में सोने का एक हार है। वह हार ही तुम्हारे बेटे की ज़िन्दगी है।

वह हार जब तक उस मछली के पेट में रहेगा या फिर तुम्हारे बेटे के गले में रहेगा तब तक तुम्हारा बेटा ज़िन्दा रहेगा पर अगर कोई दूसरा उसको पहन लेगा तो तुम्हारा बेटा मर जायेगा। अच्छा विदा।" और यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

एक महीने में सारे महल में फुसफुसाहट गूँज गयी कि सुओ रानी को बच्चे की आशा हो गयी है। राजा के लिये तो यह बहुत ही खुशी की बात थी।

---

[98] Dalim Kumar – name of the son to be born to Suo. Dalim or Dadimb means pomegranate. In Hindi a pomegranate is called Daadim. Maybe that this word is used for Dadim in Bangla language.
[99] Boal fish

राजगद्दी का मालिक आ रहा है। उसकी यह परम्परा कि उसका वंश ही राज करे का दृश्य उसकी ऑखों के सामने तैर गया। वह तो खुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था। वह इससे ज़्यादा खुश पहले कभी नहीं था।

जिस जिस मौके पर उस बच्चे के लिये जो जो रस्म होनी चाहिये थी उसकी वे सब रस्में बड़ी धूमधाम से पूरी की गयीं। जनता ने भी राजकुमार के जन्म के इस शुभ मौके पर खूब खुशियॉ मनायीं।

समय आने पर सुओ रानी ने एक बहुत सुन्दर राजकुमार को जन्म दिया। जब राजा ने राजकुमार का चेहरा पहली बार देखा उसका दिल खुशी से उछलने लगा। बच्चे के पहली बार चावल खाने की रस्म बहुत धूमधाम से मनायी गयी। सारा राज्य खुशियों से भर गया।

समय गुजरता गया। अब दालिम कुमार बड़ा लड़का हो गया था। सारे खेलों में वह सबसे ज़्यादा कबूतरों से खेलना पसन्द करता था।

इस खेल की वजह से वह अपनी सौतेली मॉ दुओ रानी के साथ ज़्यादा रहने लगा क्योंकि उसके कबूतर जादू के ज़ोर से उसकी सौतेली मॉ के महल में उड़ कर चले जाते थे।

जब पहली बार उसके कबूतर उसकी सौतेली मॉ के कमरे में गये तो उसने उनको दालिम को तुरन्त ही दे दिया। पर जब वे

दोबारा उसके कमरे में गये तो उसने उनको वापस करने में कुछ नाराजी दिखायी।

इसकी असली वजह यह थी कि उसने यह देख लिया था कि दालिम के कबूतर उसके कमरे में खुशी से आते थे सो उसने अपने मतलब के लिये उनके वहॉ आने का फायदा उठाना चाहा।

वह स्वाभाविक रूप से उस बच्चे से नफरत करती थी। क्योंकि जबसे वह पैदा हुआ था राजा दालिम की मॉ को ज़्यादा प्यार करने लगा था और उसको जानबूझ कर अनदेखा करता रहता था।

यह तो पता नहीं कि यह कैसे हुआ पर उसने कहीं सुन लिया था कि एक फ़कीर सुओ रानी को बच्चे होने की एक गोली दे गया था और उसको बच्चे की ज़िन्दगी का एक भेद बता गया था।

उसने यह भी सुना था कि बच्चे की ज़िन्दगी किसी चीज़ से बॅधी थी हालॉकि वह यह नहीं जानती थी कि उसकी ज़िन्दगी किस चीज़ से बॅधी थी। सो वह वह भेद उस लड़के से जानना चाहती थी कि उसकी ज़िन्दगी किस चीज़ से बॅधी थी।

अगली बार जब दालिम के कबूतर उड़ कर उसके कमरे में आये तो उसने उनको उस बच्चे को देने से मना कर दिया। बल्कि उसने बच्चे से कहा — "मैं तुझे ये कबूतर तब तक नहीं दूॅगी जब तक तू मुझे एक बात नहीं बतायेगा।"

"लेकिन कौन सी बात मॉ?"

"कोई ख़ास बात नहीं। मैं बस यही जानना चाहती हूँ कि तेरी ज़िन्दगी कहाँ है?"

"यह क्या होता है माँ? मेरी ज़िन्दगी भला और कहाँ हो सकती है सिवाय मेरे अन्दर।"

"नहीं मेरे बच्चे। मेरा यह मतलब नहीं था। एक फ़कीर ने तेरी माँ से कहा था कि तेरी ज़िन्दगी किसी चीज़ से बँधी है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि वह क्या चीज़ है जिससे तेरी ज़िन्दगी बँधी है।"

दालिम बोला — "मैंने तो ऐसी कोई चीज़ कभी सुनी नहीं।"

दुओ रानी बोली — "अगर तू अपनी माँ से इस बारे में पूछने का वायदा करे कि तेरी ज़िन्दगी किस चीज़ में है तभी मैं तेरे कबूतर दूँगी नहीं तो नहीं।"

दालिम बोला — "ठीक है मैं वायदा करता हूँ।"

दुओ रानी ने उसके कबूतर दे दिये। दालिम अपने कबूतर पा कर इतना खुश हो गया कि वह अपनी सौतेली माँ से हुई बात बिल्कुल ही भूल गया।

अगले दिन उसके कबूतर फिर से दुओ रानी के कमरे में जा पहुँचे सो दालिम फिर से अपनी सौतेली माँ के कमरे में अपने कबूतर लेने पहुँचा। सौतेली माँ ने उससे पूछा कि क्या वह वह बात अपनी माँ से पूछ कर आया जो उसने उससे पूछने के लिये कही थी।

लड़का बोला "मैं भूल गया मॉ।" पर लड़के ने उससे फिर से वायदा किया कि वह आज उससे वह बात जरूर पूछेगा और उसको उसके कबूतर देने की बहुत मिन्नतें कीं। आखिर उसने बच्चे के कबूतर दे दिये।

खेलने के बाद दालिम अपनी मॉ के पास गया और उससे पूछा — "मॉ मुझे यह बताओ कि मेरी ज़िन्दगी कहॉ रखी है।"

मॉ उसका यह अजीब सा सवाल सुन कर बोली — "तुम्हारा क्या मतलब है बेटा?"

दालिम बोला — "हॉ मॉ। मैंने सुना है कि एक फ़कीर ने तुमसे कहा था कि मेरी ज़िन्दगी किसी चीज़ में रखी है। मुझे बताओ न मॉ कि वह किस चीज़ में रखी है।"

मॉ बोली — ओ मेरे पालतू, ओ मेरे प्यारे, ओ मेरे खजाने, ओ मेरे सुनहरे चॉद, ऐसी बुरी बुरी बातें नहीं पूछते। मेरे दुश्मनों के मुँह में खाक पड़े और मेरा दालिम हमेशा ज़िन्दा रहे।"

पर बच्चा यह भेद जानने के लिये जिद करता रहा। उसने कहा कि जब तक कि वह उसको वह भेद नहीं बतायेगी वह कुछ भी नहीं खायेगा पियेगा।

अपने बच्चे की ऐसी जिद सुन कर सुओ रानी ने उस बुरी घड़ी में उसको उसकी ज़िन्दगी का भेद बता दिया।

अगले दिन जब दालिम के कबूतर फिर से उसकी सौतेली मॉ के कमरे में उड़ कर गये तो वह फिर से उनको लेने के लिये वहॉ पहुँच

गया। उसकी सौतेली मॉ ने उससे मीठी मीठी बातें करके उससे उसकी ज़िन्दगी का भेद जान लिया।

जब दुओ रानी ने दालिम की ज़िन्दगी का भेद जान लिया तो उसने तुरन्त ही अपना काम करने का फैसला कर लिया।

उसने अपनी दासियों से कहा कि वे उसके लिये कपास के पेड़ों के कुछ सूखे और सख्त डंठल ले कर आयें जिनको जब दबाया जाये तो उनमें से आवाज निकले जैसे आदमी की हड्डियों के टूटने से निकलती है।

उसकी दासियों ने उसको वैसे डंठल ला कर दे दिये। वे उसने अपने बिस्तर के नीचे रख लिये और यह कह दिया कि वह बहुत ज़्यादा बीमार है।

राजा जो हालॉकि उसको उतना प्यार नहीं करता था जितना कि वह अपनी छोटी रानी को करता था फिर भी वह अपना फर्ज निभाने के लिये उसको देखने गया।

रानी ने अपने बिस्तर पर इधर से उधर करवट बदली तो उसके नीचे पड़े कपास के पेड़ों के सूखे डंठलों ने आवाज की तो उसने बहाना बनाया कि उसके शरीर की सारी हड्डियॉ चरचरा रही थीं। इससे राजा को विश्वास हो गया कि रानी सचमुच बहुत बीमार थी।

उसने अपने सबसे अच्छे डाक्टर को उसको देखने के लिये बुलाया। दुओ रानी ने उस डाक्टर से साठ गॉठ की और डाक्टर ने राजा से कहा कि रानी की बीमारी का केवल एक ही इलाज है और

वह है एक चीज़ का बाहरी इस्तेमाल और वह चीज़ महल के सामने वाले तालाब में बड़ी बोल मछली के अन्दर मिलेगी।

राजा ने अपने मछियारों को बुलाया और उनको उस बोल मछली को पकड़ने का हुक्म दिया। जैसे ही उन्होंने अपना मछली पकड़ने वाला जाल पहली बार ही उस तालाब में फेंका वह मछली उनके जाल में आ गयी।

अब हुआ ऐसा कि इत्तफाक से उस समय दालिम अपने साथियों के साथ उस तालब के पास ही खेल रहा था। जैसे ही वह मछली उनके जाल में फॅसी तो दालिम को लगा कि वह कुछ बीमार सा हो गया।

और जब वह मछली जमीन पर लायी गयी तो वह जमीन पर गिर पड़ा। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी आखिरी सॉसें ले रहा हो। सो लोग उसको उसकी मॉ के कमरे में ले गये। राजा को अपने बेटे और राज्य के वारिस की अचानक बीमारी के बारे में सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

मछली को डाक्टर की सलाह के अनुसार दुओ रानी के कमरे में ले जाया गया। वहॉ वह फर्श पर पड़ी पड़ी अपने पंख जमीन पर मार मार कर तड़प रही थी।

दालिम अपनी मॉ के कमरे में पड़ा था और उसकी ज़िन्दगी की आशा टूटती जा रही थी। मछली को काटा गया तो उसके अन्दर

एक छोटा सा लकड़ी का बक्सा मिला। और लकड़ी का बक्सा खोला गया तो उसमें सोने का एक हार मिला।

जैसे ही वह सोने का हार दुओ रानी ने अपने गले में पहना दालिम अपनी मॉ के कमरे में मर गया।

जब राजा के बेटे और राज्य के वारिस की मौत की खबर राजा तक पहुॅची तो वह तो दुख के समुद्र में डूब गया जो इस बात से भी कम नहीं हुआ कि उसकी दुओ रानी ठीक हो गयी थी।

वह दालिम के मरे हुए शरीर पर रोता ही रहा और रोता ही रहा। वह इतनी ज़ोर से रो रहा था कि उसके दरबारियों को लगा कि कहीं वह इस दुख से पागल ही न हो जाये।

राजा अपने बेटे के मरे हुए शरीर को न तो दफनाने दे रहा था और न जलाने दे रहा था। उसको तो यह लग ही नहीं रहा था कि उसका बेटा मर गया है। क्योंकि एक तो वह बिना किसी वजह के मरा था और दूसरे वह इतने अचानक से मरा था इसलिये उसको विश्वास ही नहीं हो रहा था।

सो उसने उसके मरे हुए शरीर को अपने एक बागीचे वाले घर में ले जाने का हुक्म दिया जो शहर के बाहर था और उसको वहॉ लिटा देने के लिये कहा।

उसने यह भी हुक्म दिया कि उसके बेटे के लिये उसकी जरूरत की सारी चीज़ें वहॉ रखवा दी जायें और उस घर को दिन रात ताला लगा दिया जाये।

उसमें केवल उसका एक जिगरी दोस्त ही जा सकेगा और वह था राजा के मन्त्री का बेटा। उसी को उस घर की चाभी भी दे दी गयी। वह वहॉ चौबीस घंटे में कभी भी जा सकता था।

सुओ रानी के लिये तो यह बहुत बड़ा दुख था सो वह बिल्कुल अलग थलग रहने लगी। राजा अब दुओ रानी के पास ज़्यादा जाने लगा और उसकी रातें वहीं बीतने लगीं।

कहीं किसी को कोई शक न हो जाये दुओ रानी वह सोने का हार जो उसने बोर मछली में से निकाला था रात को उतार देती थी और सुबह को फिर पहन लेती थी।

अब जैसा कि दालिम की किस्मत में लिखा था जब रानी रात को हार उतार देती तो उस हार के उतारे जाने की वजह से वह रात में ज़िन्दा हो जाता था और दिन में जब रानी उस हार को पहन लेती तो वह मरे जैसा हो जाता था। और फिर ऐसा हर रात और हर दिन होता रहा।

रात को जब दालिम ज़िन्दा होता तो जो खाना उसे अच्छा लगता वह वह खाना खाता क्योंकि वहॉ तो राजा ने उसकी पसन्द की सारी चीज़ें रखवा रखी थीं। सारे घर में घूमता और अपने अकेलेपन के बारे में सोचता रहता।

दालिम का दोस्त केवल दिन में ही आता था इसलिये अपने दोस्त को तो वह केवल एक मरे हुए शरीर में ही देखता था। उसको उसमें कोई बदलाव ही नजर नहीं आता। पर कुछ दिन बाद उसको

लगा कि उसका शरीर तो हमेशा वैसी ही हालत में था जैसी हालत में वह वहॉ पहले दिन रखा गया था।

उसमें खराब होने के भी उसे कोई लक्षण ही नजर नहीं आते थे सिवाय इसके कि वह मरा हुआ था और पीला था। देखने में वह ऐसा लगता था जैसे अभी अभी मरा हो।

काफी सोचने पर भी जब उसकी यह बात समझ में नहीं आयी तो उसने उसके शरीर पर और ज़्यादा अच्छी तरह से पहरा देने का निश्चय किया। उसने सोचा कि वह केवल दिन में ही नहीं बल्कि अब रात में भी वहॉ आयेगा।

पर पहली रात जब वह वहॉ उसको देखने के लिये आया तो वह तो यह देख कर आश्चर्य से दंग रह गया कि उसका दोस्त तो बागीचे में टहल रहा था।

पहले तो उसको लगा कि वह घूमती हुई शक्ल उसके दोस्त का भूत है पर जब उसने उसके शरीर को महसूस किया और उसको ठीक से जॉचा तो उसको पता चला कि वह तो उसका भूत नहीं था। वह तो वह खुद ही था।

ऐसा इसलिये था क्योंकि राजा उस समय दुओ रानी के पास था और दुओ रानी ने उस समय वह सोने का हार अपने गले से उतार कर रख दिया था।

दालिम ने अपने दोस्त को अपनी मौत की वजह बतायी तो दोनों दोस्तों को यह लगा कि शायद दालिम इसी लिये रात को ज़िन्दा हो जाता हो क्योंकि रानी रात को वह हार उतार देती थी।

और क्योंकि दालिम की ज़िन्दगी उस सोने के हार पर निर्भर करती थी तो अगर किसी तरह से वे रात को उस हार को उससे ले सकें तो दालिम फिर हमेशा के लिये ज़िन्दा हो जायेगा।

कई रातों तक वे आपस में प्लान बनाते रहे कि दुओ रानी से वह हार कैसे लिया जाये पर उनका कोई प्लान काम नहीं कर रहा था। आखिरकार देवताओं ने ही दालिम को ज़िन्दा रखने का एक प्लान सुझाया।

इस समय जब यह सब हो रहा था यह उससे कुछ समय पहले की बात है कि भगवान की बहिन ने एक बेटी को जन्म दिया। उत्सुक माँ ने अपने भाई से पूछा कि उसने उसकी बच्ची की किस्मत में क्या लिखा है।

भगवान बोले — "मैंने इसकी किस्मत में यह लिखा है कि इसकी शादी एक मरे हुए आदमी से होगी।"

अपनी बच्ची की यह बदकिस्मती सुन कर तो भगवान की बहिन दुख से बिल्कुल पागल सी हो गयी पर उसने सोचा कि इस बारे में भाई से बात करना तो अब बिल्कुल ही बेकार है क्योंकि उसने जो एक बार लिख दिया वह अब उसे बदलने से तो रहा।

समय गुजरता रहा। बच्ची जैसे जैसे बड़ी होती गयी वह और सुन्दर होती गयी।

पर उसकी मॉ को उसे देख कर बिल्कुल खुशी नहीं होती थी वह हमेशा ही यह सोचती रहती थी कि उसके दैवीय भाई ने उसकी किस्मत में क्या लिख दिया है।

जब उस बच्ची की उम्र शादी लायक हो गयी तो उसकी मॉ ने उस देश से किसी दूसरे देश में जाने की सोची ताकि वह अपनी बेटी की बदकिस्मती बदल सके। पर आज तक किस्मत किसकी बदली जा सकी है।

इधर उधर घूमते घूमते मॉ और बेटी बागीचे के उसी घर के दरवाजे पर आ गयीं जिसमें दालिम लेटा रहता था। उस समय शाम हो रही थी। बेटी ने अपनी मॉ से कहा कि उसे प्यास लगी है।

मॉ ने उससे उस घर के दरवाजे के पास बैठने के लिये कहा और वह खुद पानी की तलाश में पड़ोस की एक झोंपड़ी की तरफ चली गयी।

इस बीच लड़की ने उत्सुकता से उस घर के दरवाजे को हाथ से धक्का दिया तो वह दरवाजा अपने आप ही खुल गया। वह लड़की उसके अन्दर चली गयी। वह तो एक बहुत ही अच्छा महल था।

यह देख कर वह उसमें से बाहर निकलने लगी तो वह दरवाजा अपने आप ही बन्द हो गया। अब तो वह उसमें से बाहर ही नहीं

निकल सकी। धीरे धीरे रात हो गयी और राजकुमार के जागने का समय हो गया।

रात को जब रानी ने अपना हार निकाल दिया तो राजकुमार ज़िन्दा हो गया और उस घर में घूमने लगा। घूमते हुए उसने देखा कि घर के दरवाजे के पास एक लड़की खड़ी है। वह उसके पास गया तो उसने देखा कि वह लड़की तो बहुत सुन्दर है।

उसने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो उसने दालिम को अपनी कहानी बतायी कि किस तरह उसके भगवान मामा ने उसकी किस्मत में एक मरे हुए आदमी शादी करनी लिख दी थी। कि कैसे उसकी मॉ उसकी इस बात को ले कर बहुत परेशान थी।

कि कैसे जब वह बड़ी हो गयी तो कैसे वह उसकी बदकिस्मती को दूर करने के लिये अपना घर छोड़ कर इधर उधर घूमती फिर रही है। फिर कैसे वे इस बागीचे वाले घर में आयीं और अब कैसे उसकी मॉ उसके लिये पानी ढूँढने के लिये गयी हुई है।

दालिम ने उसकी यह सादा सी दुखी कहानी सुन कर उससे कहा — "तुम चिन्ता न करो। मैं मरा हुआ आदमी ही हूँ तुम मुझसे शादी कर लो। आओ घर में आ जाओ।"

लड़की यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी। वह बोली — "तुम अपने आपको मरा हुआ कैसे कह सकते हो जबकि तुम यहॉ खड़े हुए हो और मुझसे बात कर रहे हो।"

राजकुमार बोला — "यह सब तुम्हारी समझ में बाद में आयेगा। अभी तुम मेरे साथ आओ।"

यह सुन कर वह लड़की राजकुमार के साथ उस घर के अन्दर चली गयी। उसने सुबह से कुछ खाया नहीं था सो राजकुमार की मेहमानदारी से वह कुछ ताजा हो गयी।

जहॉ तक भगवान की बहिन यानी उस लड़की की मॉ का सवाल था जब वह उस घर के दरवाजे पर आयी तब तक रात हो चुकी थी।

वहॉ उसको अपनी बेटी दिखायी नहीं दी तो उसने उसको पुकारा पर जब किसी ने उसकी पुकार का कोई जवाब नहीं दिया तो वह उसकी खोज में पड़ोस की झोंपड़ियों की तरफ चल दी। ऐसा कहा जाता है कि इसके बाद वह फिर कभी दिखायी नहीं दी।

जब भगवान की भानजी दालिम की मेहमानदारी में थी तो रोज की तरह दालिम का दोस्त वहॉ आया तो उसको तो उस अजनबी लड़की को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

और उसका आश्चर्य तो और बढ़ गया जब उसने उस नौजवान लड़की की कहानी उसी के मुँह से सुनी। तो यह सोचा गया कि उन दोनों की शादी उसी रात को हो जानी चाहिये। पुजारी का तो वहॉ सवाल ही नहीं उठता सो उन्होंने गान्धर्व तरीके[100] से शादी कर ली।

[100] In Indian system there are eight types of marriages. Among them one type of marriage is Gandharv type. In this kind of marriage the girl and the boy marry with each other's consent without any dowry, or parents or priest. Dalim and the girl got married by the same type of marriage.

शादी के बाद दालिम का दोस्त उनको छोड़ कर अपने घर चला गया। इधर दालिम और उसकी पत्नी दोनों रात भर जाग कर बातें करते रहे।

सूरज निकलने के काफी बाद ही वे लोग उठे। यानी यह कहना चाहिये कि सूरज निकलने के बाद केवल उसकी पत्नी उठी क्योंकि दालिम तो सुबह होते ही मर गया था और उसका शरीर बिल्कुल ठंडा पड़ा था। उसकी तो जान ही निकल गयी थी।

उसकी पत्नी के बारे में तो केवल सोचा ही जा सकता है कि उसकी क्या हालत हुई होगी। उसने अपने पति को काफी हिलाया उसको चूमा पर सब बेकार। वह तो संगमरमर की तरह से ठंडा पड़ा था।

वह बहुत डर गयी। उसने तो अपनी छाती पीटनी शुरू कर दी। सिर पर हाथ मारने लगी। बाल नोचने लगी। फिर वह उस घर में और बागीचे में पागल सी घूमती रही।

दालिम का दोस्त उसको मिलने के लिये दिन में नहीं आया क्योंकि उसको दिन में आना ठीक नहीं लगा जबकि उसका पति मरा पड़ा था। सारा दिन उसका बहुत बुरा और लम्बा बीता जैसे कि एक साल हो।

फिर भी कुछ भी कितना ही लम्बा क्यों न हो उसका अन्त तो होता ही है सो वह दिन भी खत्म हुआ और जब शाम होने को आयी तब उसका मरा हुआ पति ज़िन्दा हो गया।

वह अपने बिस्तर से उठा और उसने अपनी परेशान पत्नी को गले लगाया। फिर उसने खाना खाया पिया और खुशी खुशी अपनी पत्नी से बातें कीं।

रोज की तरह उसका दोस्त रात को आया तो फिर सारी रात खुशी में बीती। इस तरह राजकुमार के ज़िन्दा होने और मरने के बीच राजकुमार और उसकी पत्नी ने सात आठ साल बिता दिये। इस बीच उनके दो बेटे हो गये। वे दोनों बेटे बिल्कुल अपने पिता जैसे ही लगते थे।

यह तो कहना बेकार की बात है कि राजा, उसकी दोनों रानियों और महल में दूसरे रहने वालों को यह पता ही नहीं चला कि दालिम रात को ज़िन्दा हो जाता था और दिन में मरा पड़ा रहता था। उन्होंने सोचा कि अब तक तो वह मर ही गया होगा और उसकी लाश को जला दिया गया होगा।

हालॉकि दालिम की पत्नी ने अपनी सास को कभी देखा नहीं था पर फिर भी उसका दिल अपनी सास के लिये बहुत रोता था।

सो उसने न केवल अपनी सास को देखने की बल्कि अपने पति की सौतेली मॉ से वह सोने का हार लेने की भी एक तरकीब निकाली जिस पर उसके पति की ज़िन्दगी निर्भर थी।

अपने पति और उसके दोस्त की मरजी से उसने एक नाइन[101] का रूप बनाया और जैसे कि हर नाइन के पास कुछ चीज़ें होती हैं जैसे नाखून काटने वाली मशीन, पैरों के तलवों और एड़ियों को घिसने वाला झामा[102], आलता[103] आदि वे उसने ले लीं।

इन सब चीज़ों की उसने एक पोटली बनायी और उसको और अपने दोनों बेटों को ले कर वह महल के दरवाजे पर खड़ी हो गयी। वहॉ जा कर उसने दरबान को बताया कि वह एक नाइन थी और सुओ रानी को देखना चाहती थी।

सुओ रानी ने उसको तुरन्त ही अन्दर बुलवा लिया। जैसे ही रानी ने उन दोनों छोटे बच्चों को देखा तो उसका मुँह तो खुला का खुला ही रह गया। उसने उसको बताया कि यकीनन उन दोनों बच्चों की शक्ल उसके मरे हुए बेटे दालिम की शक्ल से कितनी मिलती थी।

उनको देख कर उसको अपने मरे हुए बेटे की याद आ गयी और उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। पर वह यह बिल्कुल भी नहीं सोच सकी कि वे दोनों बच्चे उसके अपने बच्चे के बच्चे हैं।

उसने उससे कहा कि उसे अफसोस है कि अब उसको उसकी सेवाओं की जरूरत नहीं है क्योंकि जबसे उसका बेटे की मौत हुई है

[101] Translated for the female barber. These women are domestic women who help women of a household to get ready in traditional way.
[102] Burnt black stone from which the dead skin ir rubbed out from the heels etc.
[103] A kind of paint by which Bengali women paint their feet.

तबसे उसने यह श्रंगार छोड़ दिया है। पर फिर उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह उसके पास कभी कभी मिलने आ जायेगी तो वह उससे और उसके दोनों बेटों से मिल कर बहुत खुश होगी।

उसके बाद वह नाइन दुओ रानी के घर गयी और उससे कहा कि वह उसको तैयार कर देगी। रानी ने कहा कि वह उसके नाखून काट दे उसके पैरों को साफ कर दे और उन पर आलता लगा दे।

सो उसने रानी के वे सारे काम कर दिये जो उसने उससे करने के लिये कहे थे। रानी उसके मीठे व्यवहार और काम से इतनी खुश हुई कि उसने उसको अक्सर आने के लिये कहा। नाइन ने उसके गले में पड़ा वह सोने का हार भी देखा।

जब दालिम की पत्नी का महल जाने का दोबारा मौका आया तो उसने अपने बड़े बेटे से कहा कि वह महल जा कर रानी के हार के लिये बहुत ज़ोर से रोना शुरू कर दे और तब तक चुप न हो जब तक कि रानी का हार उसके हाथ में न आ जाये।

नाइन अपने नियत दिन दुओ रानी के पास आयी। जब वह रानी के पैर रंग रही थी तो उसके बड़े बेटे ने ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। बच्चे से जब उसके रोने की वजह पूछी गयी तो उसने कहा कि उसको रानी के गले का हार चाहिये था।

रानी ने कहा कि वह अपने गले के उस हार को उसे नहीं दे सकती क्योंकि वह उसके गहनों में सबसे अच्छा और कीमती गहना

था। पर बच्चा तो बच्चा था वह बिना हार लिये चुप होने पर ही नहीं आ रहा था।

बच्चे को शान्त करने के लिये दुओ रानी ने अपने गले से वह हार उतारा और बच्चे के हाथ पर रख दिया। बच्चा तुरन्त ही चुप हो गया और उसने उस हार को अपने हाथ में कस कर पकड़ लिया।

जब नाइन ने अपना काम खत्म कर लिया और वह घर वापस जाने लगी तो रानी ने अपना हार उस बच्चे से वापस चाहा पर बच्चे ने उसे वापस ही नहीं दिया।

जब उसकी मॉ ने उससे वह हार वापस चाहा तो उसने फिर से ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह उस हार के बिना रह ही नहीं पायेगा और उसका दिल टूट जायेगा।

इस पर नाइन बोली — "क्या योर मैजेस्टी इतनी मेहरबानी करेंगी कि यह बच्चा इस हार को घर ले जाये? जब यह दूध पी कर सो जायेगा तो मैं इसके हाथ से यह हार निकाल कर इसे आपको दे जाऊॅगी। यह एकाध घंटे में ही सो जायेगा।"

रानी ने देखा कि बच्चा वाकई वह हार देने के बिल्कुल मूड में नहीं था सो नाइन का कहा मानने के अलावा उसके पास और कोई चारा नहीं था।

वह खुद भी यही सोच चुकी थी कि दालिम तो अब तक कभी का मर गया होगा इसलिये अब उसे उस हार की उतनी चिन्ता नहीं थी जितनी पहले थी।

इस तरह वह नाइन अपने पति की ज़िन्दगी को ले कर जल्दी जल्दी हॉफती हुई अपने घर आयी और वह हार ला कर दालिम को दे दिया। दालिम अब ज़िन्दा हो चुका था। सब बहुत खुश थे।

दालिम के दोस्त की सलाह के अनुसार अब वे अगले दिन राजा और सुओ रानी के सामने महल जाने वाले थे। इसके लिये ठीक से तैयारियॉ की गयीं।

बहुत बढ़िया तरीके से सजा हुआ एक हाथी राजकुमार की सवारी के लिये लाया गया। दोनों बच्चों के लिये बहुत सुन्दर दो घोड़े लाये गये।

राजा और सुओ रानी को खबर भिजवायी गयी कि राजकुमार दालिम कुमार केवल ज़िन्दा ही नहीं है बल्कि वह अपने माता पिता से मिलने के लिये अपनी पत्नी और बेटों के साथ महल आ रहा है।

राजा और सुओ रानी इस खबर को सुन कर अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सके पर वह इसे सच जान कर खुशी से पागल हो उठे। जबकि दुओ रानी अपनी बुरी चाल खुल जाने को सोच कर ही दुख से पागल सी हो गयी।

राजकुमार दालिम के आने का जुलूस गवैयों के साथ राजमहल की तरफ बढ़ रहा था। राजा और सुओ रानी अपने खोये हुए बेटे

की अगवानी के लिये महल के दरवाजे पर गये। यह कहने की जरूरत नहीं कि वे अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश थे। दोनों एक दूसरे के गले लग कर रो पड़े।

तब दालिम ने राजा को अपनी मौत के हालात बताये तो राजा ने गुस्से में भर कर दुओ रानी को अपने सामने बुलाया।

उसके लिये एक आदमी की ऊँचाई के बराबर पहले एक गड्ढा खोदा गया। उसमें उसको खड़ा कर दिया गया। फिर उसके चारों तरफ उसके सिर तक बहुत सारे कॉटे भर दिये गये ओर उसमें आग लगा दी गयी। इस तरह उसको उस गड्ढे में रख कर ज़िन्दा जला दिया गया।

18 तीन कुत्ते[104]

एक बार की बात है कि एक राजा दुनियॉ में बाहर घूमने गया तो वहॉ से एक बहुत सुन्दर राजकुमारी ले कर लौटा। उसने उससे शादी कर ली। शादी के कुछ समय बाद ही भगवान ने उनको एक प्यारी सी बच्ची दी।

राजकुमारी के जन्म की सारे शहर में ही नहीं बल्कि सारे देश में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं क्योंकि राजा की जनता राजा का सब तरह से अच्छा ही चाहती थी क्योंकि वह खुद बहुत अच्छा था। वह सब पर दया करता था और सबसे न्यायपूर्ण व्यवहार करता था।

जब बच्ची अपने पालने में ही थी कि एक अजीब सी दिखायी देने वाली स्त्री उसके कमरे में घुसी। उसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं था कि वह कौन है और कहॉ से आयी है।

उस बुढ़िया ने उस बच्ची के ऊपर एक कविता पढ़ी और कहा कि उसको खुले आसमान में नहीं जाना चाहिये जब तक कि वह पूरे पन्द्रह साल की न हो जाये। अगर वह गयी तो एक पहाड़ी ट्रौल[105] उसको पकड़ कर ले जायेगा।

[104] The Three Dogs – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_20.html

[105] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

राजा ने जब यह सुना तो यह बात उसके दिल में बैठ गयी। उसने तुरन्त ही अपनी बेटी के चारों तरफ पहरेदार लगा दिये ताकि वे सब इस बात का पूरा ध्यान रखें कि वह पन्द्रह साल की होने तक खुले आसमान के नीचे न जाये।

कुछ समय बीतने के बाद राजा और रानी के एक और बेटी हुई। सारे राज्य में फिर से ढेर सारी खुशियॉ मनायी गयीं। पर वह अक्लमन्द बुढ़िया एक बार फिर से वहॉ प्रगट हुई और राजा को सावधान किया कि इस बच्ची को भी वह खुले आसमान के नीचे न ले जाये जब तक कि वह पूरे पन्द्रह साल की न हो जाये।

कुछ समय बाद भगवान ने उनको एक तीसरी बेटी दी। इस बार भी वह बुढ़िया वहॉ आयी और इसके लिये भी वही कहा जो उसने उसकी पहली दोनों बेटियों के लिये कहा था।

इस बार यह सुन कर राजा को बहुत दुख हुआ क्योंकि वह अपने बच्चों को दुनियॉ की किसी भी चीज़ से बहुत ज़्यादा प्यार करता था। इसलिये उसका यह सख्त हुक्म था कि उसकी बच्चियों को महल की छत के नीचे ही रखा जाये और कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता था।

समय बीतता गया और राजा की बेटियॉ बड़ी होती गयीं। बड़ी हो कर सब बहुत सुन्दर हो गयीं।

अब एक ऐसा समय आया जब राज्य में लड़ाई छिड़ गयी और राजा को उनको छोड़ कर लड़ाई पर जाना पड़ा।

एक दिन जब वह लड़ाई पर बाहर था तो तीनों राजकुमारियॉ खिड़की में बैठी बाहर झॉक रही थीं। बाहर सुन्दर धूप खिली हुई थी जिसमें बागीचे के फूल खूब चमक रहे थे। उन सबकी बहुत इच्छा हुई कि वे बाहर जा कर उन फूलों से खेलें।

सो उन्होंने अपने पहरेदारों से विनती की कि वे बाहर बागीचे में जा कर थोड़ी देर के लिये खेलना चाहती हैं। पर उनके पहरेदारों ने उनको इस बात की इजाज़त नहीं दी क्योंकि वे राजा से डरते थे।

इस पर भी राजकुमारियों ने उनसे बड़े मीठे शब्दों में जिद की कि वे उनको बस थोड़ी देर के लिये जाने दें। फिर वे उनकी विनती को ठुकरा नहीं सके और उनको बाहर जाने दिया।

राजकुमारियॉ अभी बहुत दूर नहीं गयी थीं और जैसे ही वे खुले आसमान के नीचे आयीं कि अचानक एक बादल नीचे आया और उनको वहॉ से उठा ले गया। हालॉकि उनको चारों तरफ ढूँढा गया पर फिर भी उनको वापस लाने की सारी कोशिशें बेकार गयीं। सारे राज्य में दुख और उदासी छा गयी।

जब राजा घर आया तो यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसका यह दुख तो बस सोचा ही जा सकता है। पर जो हो गया था वह तो हो गया था उसको तो वापस नहीं किया जा सकता था। आखीर में उन्होंने अपनी आशा छोड़ दी।

राजा को पता ही नहीं था कि वह अपने आपको तसल्ली देने के लिये क्या करे सो उसने राज्य भर में यह मुनादी पिटवा दी कि

जो कोई भी उसकी तीनों बेटियों को पहाड़ के ट्रौल से छुड़ा कर ले आयेगा तो उन तीनों में से एक की शादी उससे कर दी जायेगी। साथ में उसके उसको आधा राज्य भी दे दिया जायेगा।

यह खबर विदेशों में भी पहुँची। बहुत सारे नौजवान अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर राजकुमारियों की खोज में निकले। राजा के अपने दरबार में भी दो राजकुमार थे जो यह देखने के लिये राजकुमारियों को खोजने के लिये निकले कि उनकी किस्मत इस मामले में काम करती है या नहीं।

उन्होंने अपने आपको सबसे अच्छे तरीके से तैयार किया। सब तरह के कीमती सबसे अच्छे हथियार लिये और शान बघारते हुए वहाँ से चले कि वे बिना राजकुमारियों को लिये हुए वापस नहीं लौटेंगे।

अब हम राजा के बेटों को राजकुमारियों को ढूँढते हुए यहाँ छोड़ते हैं और दूसरे लोगों की तरफ चलते हैं।

बहुत दूर एक जंगल में एक गरीब विधवा रहती थी जिसके एक बेटा था। वह रोज अपनी माँ के सूअर चराने ले जाया करता था।

जब वह मैदानों से हो कर गुजरता था तो उसके पास एक बाँसुरी थी जिसको वह अक्सर बजाता जाता था। वह वह बाँसुरी इतनी अच्छी बजाता था कि जो कोई उसको सुनता था वह उसी को अच्छी लगती थी। वह उसको सुन कर मग्न हो जाता था।

एक बार ऐसा हुआ कि वह नौजवान चरवाहा जंगल में बैठा अपनी बॉसुरी बजा रहा था और उसके तीन सूअर एक पाइन के पेड़ की जड़ें खोद रहे थे कि उसको एक बहुत ही बूढ़ा आता दिखायी दिया। उसकी दाढ़ी बहुत ही घनी थी और लम्बी तो इतनी थी कि वह उसकी कमर से भी नीचे लटक रही थी।

उस बूढ़े के पास एक बहुत बड़ा कुत्ता था। जब नौजवान ने वह बड़ा सा कुत्ता देखा तो सोचा कि इस बूढ़े के पास जंगल के अकेलेपन में यह इतना बड़ा कुत्ता है तो यह तो अपने आपको कितना खुशकिस्मत समझ रहा होगा।

जब बूढ़े ने नौजवान को देखा तो वह समझ गया कि वह क्या सोच रहा होगा। उसने उससे कहा — "मैं यहॉ इसी लिये तो आया हूॅ। मैं अपना कुत्ता तुम्हारे एक सूअर से बदलना चाहता हूॅ।"

वह नौजवान तो तैयार था ही। उसकी यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त ही अपना एक सूअर उसको दे दिया और उसका कुत्ता खुद ले लिया।

जब वह बूढ़ा वहॉ से जाने लगा तो उससे बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस कुत्ते से बहुत खुश और सन्तुष्ट रहोगे। क्योंकि यह कोई दूसरे कुत्तों जैसा मामूली कुत्ता नहीं है। इसका नाम है "पकड़ लो"[106]। और जिस चीज़ को भी तुम इससे पकड़ लेने के

[106] Take Hold

लिये कहोगे यह उसी को पकड़ कर रखेगा चाहे वह कोई कितना भी भयंकर ट्रौल ही क्यों न हो।"

यह कह कर बूढ़ा चला गया। नौजवान ने सोचा कि उसकी खुशकिस्मती थी कि उसको ऐसा अच्छा कुत्ता मिल गया। शाम को उसने अपने कुत्ते को बुलाया और अपने सूअर ले कर घर चला आया।

जब उसकी बूढ़ी मॉ ने सुना कि वह एक सूअर दे कर एक कुत्ता ले आया है वह तो गुस्से से पागल सी हो गयी और उसने अपने बेटे को बहुत डॉट लगायी।

बेटे ने उससे बहुत कहा कि वह शान्त हो जाये पर उसके कहने का कोई असर ही नहीं हो रहा था। जितनी देर होती जा रही थी उसका गुस्सा उतना ही ज़्यादा बढ़ता जा रहा था।

बेटे की समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे सो उसने अपने कुत्ते को पुकारा और कहा "इसे पकड़ ले।"

कुत्ता तुरन्त ही उसकी मॉ की तरफ दौड़ पड़ा और जा कर उसे पकड़ लिया। उसको उसने इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह तो हिल भी नहीं सकी पर उसने उसको कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया। उसने उनके पास जो कुछ था उसका ठीक इस्तेमाल करने का वायदा किया और फिर उन दोनों में सुलह हो गयी।

अगले दिन बेटा फिर से अपने दोनों सूअरों को चराने को लिये अपने कुत्ते को साथ ले कर मैदान में गया। कुछ देर बाद वह बैठ

गया और अपनी बॉसुरी बजाने लगा। कुछ देर बाद ही उसका कुत्ता उसकी बॉसुरी की धुन पर इतने अच्छे तरीके से नाचने लगा कि यह उसको एक जादू जैसा लगा।

और जब वह अपनी बॉसुरी बजा रहा था तो पहले दिन वाला सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा वहॉ फिर से आ पहुँचा। अबकी बार उसके पास एक और कुत्ता था। यह कुत्ता उस कुत्ते से भी बड़ा था जो उसने उससे पहले दिन लिया था।

जब उसने उसके इस कुत्ते को देखा तो उसने अपने मन में सोचा "अगर ऐसे अकेलेपन में किसी के पास ऐसा कुत्ता हो तो उसको तो डरने की कोई जरूरत ही नहीं है।"

जब बूढ़े ने यह देखा कि वह लड़का क्या सोच रहा था तो वह उससे बोला — "इसी लिये तो मैं यहॉ आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं अपने इस कुत्ते को तुम्हें दे कर तुम्हारा एक सूअर ले लूँ।"

नौजवान ने बिल्कुल भी वक्त नहीं गॅवाया और तुरन्त ही उसको अपना एक सूअर दे कर उससे उसका वह शानदार कुत्ता ले लिया।

कुत्ता दे कर जब वह जाने लगा तो वह उससे बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इस कुत्ते से बहुत खुश और सन्तुष्ट रहोगे। क्योंकि यह कोई दूसरे कुत्तों जैसा मामूली कुत्ता नहीं है। इसका नाम है "फाड़ दो"[107]। तुम इसे कोई भी चीज़ दे कर अगर इससे कहोगे "फाड़ दो" तो तुरन्त ही यह उसके टुकड़े टुकड़े कर देगा।"

[107] Tear

यह कह कर उसने उससे सूअर लिया और अपने रास्ते चला गया। पर वह लड़का बहुत खुश था क्योंकि वह समझ रहा था कि उसने एक बहुत ही अच्छा सौदा कर लिया है हालॉकि उसको यह भी पता था कि उसकी बूढ़ी मॉ इस सौदे से बिल्कुल भी सन्तुष्ट नहीं होगी।

जब शाम हुई तो उसने बचे हुए सूअर को बुलाया दोनों कुत्ते साथ लिये और घर चला गया। मॉ तो उस कुत्ते को देख कर बहुत ही गुस्सा हो गयी। पर इस बार वह अपने बेटे को मारने की हिम्मत नहीं कर सकी क्योंकि वह बड़े बड़े कुत्तों से बहुत डरती थी।

पर फिर भी जैसा कि होता है काफी डॉटने के बाद लोग अपने आप ही चुप हो जाते हैं ऐसा ही उसके साथ भी हुआ। उसको काफी डॉटने के बाद वह अपने आप ही चुप हो गयी और फिर दोनों में सुलह हो गयी। क्योंकि मॉ को भी लगा कि जो नुकसान उसके बेटे ने कर दिया है उसको वापस तो नहीं लाया जा सकता।

अगले दिन बेटा फिर से अपने दो कुत्तों और एक सूअर को अपने साथ ले कर मैदान में गया। वह बहुत खुश था। कुछ देर बाद वह फिर बैठ गया और अपनी बॉसुरी बजाने लगा। इस बार उसके दोनों कुत्ते उसकी बॉसुरी की धुन पर इतने अच्छे से नाचने लगे कि लड़के को उनका नाच देखने में बहुत अच्छा लगने लगा।

जब यह लड़का शान्ति से बैठा हुआ था तो पहले दो दिनों वाला सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा वहॉ फिर आ पहुॅचा।

इस बार भी उसके साथ के लिये उसके पास एक शानदार कुत्ता था जिसको देख कर वह लड़का यह सोचे बिना न रह सका कि "अगर किसी के पास जंगल के इस अकेलेपन में ऐसा कुत्ता हो तो उसके पास तो शिकायत करने के लिये कुछ है ही नहीं।"

बूढ़े ने जब यह देखा तो वह उस लड़के से बोला — "इसी लिये तो मैं यहॉ हूँ। मैं अपना यह कुत्ता तुम्हें तुम्हारे आखिरी सूअर से बदलने आया हूँ।"

लड़का भी तुरन्त ही अपने सूअर के बदले में उसका कुत्ता लेने के लिये तैयार हो गया।

बूढ़े ने वह कुत्ता उसको दिया और बोला — "तुमको इस सौदे से कोई शिकायत नहीं होगी क्योंकि यह कुत्ता दूसरे मामूली कुत्तों जैसा कुत्ता नहीं है। इसका नाम है "ध्यान से सुनो"[108]। इसकी सुनने की ताकत इतनी ज़्यादा है कि यह कई मील दूर तक की आवाज भी आसानी से सुन सकता है और घास और पेड़ों को बढ़ते हुए भी सुन सकता है।"

इसके बाद वे दोनों एक दोस्त की तरह से अलग हो गये पर ये कुत्ते पा कर वह लड़का बहुत खुश था कि अब उसे दुनियॉ में किसी चीज़ से डरने की जरूरत नहीं है।

[108] Hark

जब शाम हुई तो उसने अपने तीनों कुत्ते लिये और घर की तरफ चल पड़ा। उसकी मॉ यह देख कर बहुत दुखी थी कि उसने उनके घर की सारी चीज़ें बेच दी थीं।

बेटे ने उसको बहुत समझाया कि वह हिम्मत रखे। वह यह देखेगा कि उन लोगों को किसी बात की कोई कमी न रहे। जब वह खुशी खुशी यह सब अपनी मॉ से कह रहा था तो उसको थोड़ी सी तसल्ली मिली। उसको लगा कि उसका बेटा अब बड़े आदमियों की तरह से अक्लमन्दी और जिम्मेदारी से बात कर रहा था।

अगली सुबह लड़का शिकार करने के लिये जंगल गया तो वह अपने तीनों कुत्तों को अपने साथ ले गया। और शाम को जब वह घर वापस लौटा तो उसके पास इतना शिकार था जितना वह ला सकता था। इस तरह से वह रोज शिकार कर के घर लाना शुरू कर दिया जब तक कि उसकी मॉ का भंडारघर खाने और दूसरी चीज़ों से अच्छी तरह भर नहीं गया।

तब उसने अपने तीनों कुत्तों को बुलाया मॉ को विदा कहा और उससे कहा कि वह अब बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाना चाहता है। मॉ ने उसे इजाज़त दे दी।

वह टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर पहाड़ के ऊपर की तरफ जाने लगा। धीरे धीरे वह एक जंगल के बीच में आ गया। वहॉ उसे फिर वही सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा मिल गया जिससे उसने अपने ये तीनों कुत्ते खरीदे थे। उससे मिल कर नौजवान बहुत खुश हुआ।

वह बोला — "गुड डे बाबा। पिछली बार के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

बूढ़ा बोला — "तुमको भी गुड डे। किधर जाते हो?"

नौजवान बोला — "मैं दुनियॉ में यह देखने के लिये बाहर निकला हूँ कि चलूँ देखूँ मेरी किस्मत में क्या लिखा है।"

बूढ़ा बोला — "तुम यहॉ से सीधे चले जाओ जब तक कि एक शाही महल न आ जाये। वहॉ जा कर तुम्हारी किस्मत पलटा खा जायेगी।" यह कह कर बूढ़ा चला गया।

बूढ़े को धन्यवाद दे कर और उसकी सलाह मान कर वह भी सीधे शाही महल की तरफ चल दिया। धीरे धीरे वह एक सराय तक आ पहुँचा।

वहॉ आ कर उसने अपनी बॉसुरी निकाल ली और उसे बजाने लगा। उसके कुत्ते उसकी बॉसुरी की धुन पर नाचने लगे। यह देख कर सराय वाले ने खुश हो कर उसे खाना और रहने की जगह दे दी। और भी बहुत कुछ दे दिया जो उसको चाहिये था।

जब वह बहुत दूर चक चल लिया तब वह एक बड़े शहर में आ पहुँचा जहॉ की सड़कें लोगों से भरी हुई थीं। यह देख कर नौजवान को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह सब क्या था।

चलते चलते वह एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ राजा के हुक्म की एक मुनादी पिट रही थी कि जो कोई भी राजा की तीन बेटियों

को पहाड़ वाले ताकतवर ट्रौल से छुड़ा कर लायेगा उसके साथ एक राजकुमारी की शादी होगी और आधा राज्य दिया जायेगा।

यह सुन कर उसकी समझ में आ गया कि उस बूढ़े ने उससे ऐसा क्यों कहा था। क्यों उसने उसे यहॉ भेजा था।

उसने अपने कुत्ते बुलाये और राजा के किले की तरफ चल पड़ा। पर जिस दिन से वहॉ से राजकुमारियॉ गायब हुई थीं सारा राजभवन दुख के समुद्र में डूबा पड़ा था। और राजा और रानी का तो रोते रोते बुरा हाल था।

वह लड़का महल के चौकीदार के पास गया और उससे इजाज़त मॉगी कि क्या वह राजा के सामने अपनी बॉसुरी बजा सकता है और उन्हें अपने कुत्तों को दिखा सकता है।

दरबारी लोग तो इस बात के लिये राजी थे क्योंकि वे सोच रहे थे कि यह शायद राजा को कुछ खुश कर सके। सो उसको अन्दर जाने की इजाज़त मिल गयी और उसको अन्दर बुला लिया गया।

जब राजा ने उसको बॉसुरी बजाते सुना और उसके कुत्तों का सुन्दर नाच देखा तो उसका दिल खुश हो गया। किसी ने उसको पिछले सात सालों में जबसे उसकी बेटियॉ गायब हुई थीं इतना खुश कभी नहीं देखा था।

जब कुत्तों का नाच खत्म हो गया तो राजा ने उससे पूछा कि उसको राजा को खुश करने के लिये क्या इनाम चाहिये। नौजवान बोला — "आदरणीय राजा। मैं आपके पास कोई सोना या कपड़ा

मॉगने नहीं आया। मैं आपसे केवल इस बात की इजाज़त मॉगने आया हूँ कि आप मुझे अपनी बेटियों को पहाड़ के ट्रौल से छुड़ा लाने की इजाज़त दें।"

जब राजा ने यह सुना तो राजा और उदास हो गया।

राजा बोला — "तुम मेरी बेटियों को उस ट्रौल से छुड़ा कर लाने की तो सोचना भी मत। यह कोई बच्चों का खेल नहीं है। तुमसे अच्छे अच्छे लोग अब तक कोशिशें कर चुके हैं पर अब तक सबकी कोशिशें बेकार गयी हैं। पर अगर तुम मेरी एक भी बेटी को वहॉ से छुड़ा कर ला सके तो मैं अपने वायदे से नहीं मुकरूँगा।"

सो उसने राजा से इजाज़त ली और पहाड़ के ट्रौल की तरफ चल दिया। उसने निश्चय किया कि वह जब तक वह जो कुछ ढूँढ रहा है वह उसे नहीं मिल जायेगा वह चैन से नहीं बैठेगा।

उसने कई बड़े बड़े राज्य बिना किसी खास घटना के पार किये। वह जहॉ भी गया उसके कुत्ते उसके साथ ही रहे। ध्यान से सुनो उसके बिल्कुल साथ साथ चल रहा था ताकि वह उसके आस पास की हर चीज़ को ध्यान से सुन सके जो उसको सुननी चाहिये।

पकड़ कर रखो अपने मालिक का थैला पकड़ कर ले जा रहा था और फाड़ दो जो इन सब कुत्तों में सबसे ज़्यादा ताकतवर था अपने मालिक को तब उठा कर ले जाता था जब वह चलते चलते थक जाता था।

एक दिन ध्यान से सुनो लड़के के पास दौड़ता हुआ आया और बोला कि वह एक ऊँचे से पहाड़ पर गया था जहाँ उसने राजकुमारी को सुना। उस समय ट्रौल घर में नहीं था और वह वहीं आस पास में ही घूम रहा था। यह सुन कर लड़का बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त ही अपने तीनों कुत्तों के साथ उस पहाड़ की तरफ चल दिया।

जब वे लोग वहाँ पहुँचे तो ध्यान से सुनो बोला — "अब समय बर्बाद करने का समय नहीं है। जो कुछ करना है जल्दी करो। ट्रौल अभी यहाँ से दस मील दूर है। और मैं पत्थरों पर उसके सोने के खुरों की आवाज सुन पा रहा हूँ।"

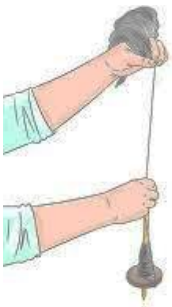

लड़के ने अपने कुत्तों को पहाड़ में एक दरवाजा तोड़ने के लिये कहा जो उन्होंने किया। जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जो उस पहाड़ के एक कमरे में बैठी थी और सोने का धागा एक सोने की तकली[109] पर लपेट रही थी।

लड़का उसकी तरफ बढ़ा और उसको बड़े मीठे शब्दों में नमस्ते की। राजा की बेटी को उस लड़के को वहाँ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोली — "तुम कौन हो जिसने यहाँ पहाड़ वाले ट्रौल के कमरे में आने की हिम्मत की। पिछले सात सालों से मैं यहाँ इस पहाड़ में बैठी हुई हूँ पर मैंने आज तक कोई आदमी यहाँ नहीं देखा।"

[109] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

वह आगे बोली — "भगवान के लिये तुम ट्रौल के घर से जल्दी से जल्दी चले जाओ वरना तुम्हारी जान खतरे में है।"

पर हमारा नौजवान बिल्कुल निडर था। उसने कहा कि वह किसी से डरता नहीं और वह उस ट्रौल के आने का इन्तजार करेगा।

जब वे लोग बातें कर रहे थे तभी ट्रौल अपने घोड़े पर सवार वहॉ आ पहुँचा। उसके घोड़े पर सोने का साज सजा था। जब उसने देखा कि उसका दरवाजा खुला पड़ा है तो वह बहुत गुस्सा हुआ और इतने ज़ोर से चिल्लाया कि सारा पहाड़ कॉप उठा — "किसने मेरे पहाड़ का दरवाजा तोड़ा?"

नौजवान ने बिना किसी डर के जवाब दिया — "मैंने तोड़ा। और अब मैं तुम्हें भी तोड़ दूँगा। ओ पकड़ने वाले पकड़ ले इसको। फाड़ने वाले और ध्यान से सुनने वाले इसके हजारों टुकड़े कर दो।"

जैसे ही उसने यह बोला वैसे ही उसके तीनों कुत्ते भागे और उसके हजारों टुकड़े कर के फेंक दिये। राजकुमारी तो यह देख कर बहुत खुश हुई — "भगवान की जय हो। आखिर मैं यहॉ से छुटकारा पा ही गयी।"

खुशी के मारे वह नौजवान के गले से लिपट गयी और उसको चूम लिया। पर नौजवान वहॉ एक मिनट के लिये भी रुकना नहीं चाहता था। उसने ट्रौल के घोड़े पर जीन कसी उस पर जितना भी

उसको सोना और कपड़ा लादना था लादा और राजकुमारी को ले कर तुरन्त ही राजा के पास दौड़ गया।

वो सब बहुत दूर तक चलते रहे। एक दिन ध्यान से सुनो जो हमेशा लड़के के घोड़े के आगे आगे चला करता था जल्दी से दौड़ता हुआ अपने मालिक के पास आया और बोला कि वह अभी अभी एक ऊँचे से पहाड़ के पास था जब उसने दूसरी राजकुमारी की आवाज सुनी। वह भी उसके अन्दर बैठी बैठी सोने का धागा लपेट रही थी और ट्रौल उस समय वहाँ नहीं था।

नौजवान के लिये तो यह बहुत ही अच्छी खबर थी। वह अपने कुत्तों को ले कर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया। जब वे उस पहाड़ के पास पहुँचे तो ध्यान से सुनो ने उससे कहा — "अब समय गँवाने का नहीं है। ट्रौल यहाँ से केवल आठ मील दूर है और मैं उसके घोड़े के सोने के खुरों की आवाज पत्थरों पर साफ सुन रहा हूँ।"

नौजवान ने अपने कुत्तों को कहा कि वह पहाड़ का दरवाजा तोड़ दें। बस कहने की देर थी कि उन्होंने पहाड़ का दरवाजा तोड़ दिया। जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी हुई सोने का धागा एक सोने की तकली पर लपेट रही है।

राजा की यह बेटी भी लड़के को देख कर आश्चर्यचकित रह गयी बोली — "अरे तुम? तुम कौन हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई

यहाँ इस कमरे में आने की। पिछले सात साल से मैं यहाँ बैठी हुई हूँ पर मैंने अभी तक किसी आदमी को यहाँ आते नहीं देखा।"

उसने आगे कहा — "अगर तुम ट्रौल से अपनी ज़िन्दगी बचाना चाहते हो तो भगवान के लिये यहाँ से तुरन्त चले जाओ।"

तब नौजवान ने उसे बताया कि वह वहाँ क्यों आया था और वह वहाँ बिना किसी परेशानी के ट्रौल के आने का इन्तजार करेगा।

वे लोग अभी बातें कर ही रहे थे कि ट्रौल वहाँ आ पहुँचा और पहाड़ का दरवाजा टूटा हुआ देख कर बहुत गुस्सा हुआ। वह चिल्लाया — "किसने तोड़ा मेरे पहाड़ का दरवाजा?"

नौजवान बोला — "मैंने तोड़ा। और अब मैं तुम्हें भी तोड़ने जा रहा हूँ।" कह कर उसने अपने तीनों कुत्तों को बुलाया और उनसे उसके हजारों टुकड़े कर देने के लिये कहा। बस उसके कहने की देर थी कि तीनों कुत्तों ने मिल कर उसके हजारों टुकड़े कर दिये और उन्हें ऐसे बिखेर दिया जैसे पतझड़ में पत्तियाँ बिखर जाती हैं।

राजा की यह बेटी भी ट्रौल को इस तरह मरा देख कर बहुत खुश हुई। वह भी लड़के के गले लगते हुए और उसे चूमते हुए बोली — "ओह अब मैं आजाद हो गयी।"

लड़का उसको उसकी बहिन के पास ले गया। कोई बस सोच ही सकता है कि वे दोनों बहिनें आपस में एक दूसरे को देख कर कितनी खुश हुई होंगी।

लड़के ने जितना भी खजाना उस पहाड़ में पाया सब बटोरा उसे ट्रौल के घोड़े पर लादा और राजा की दो बेटियों के साथ राजा के घर की तरफ चल पड़ा।

वे लोग फिर बहुत दूर तक चलते रहे कि एक दिन ध्यान से सुनो फिर से दौड़ता हुआ उसके पास आया और बोला कि वह अभी अभी एक ऊँचे से पहाड़ के पास था जब उसने तीसरी राजकुमारी की आवाज सुनी। वह भी उसके अन्दर बैठी बैठी सोने के धागे से जाल बुन रही थी और ट्रौल उस समय वहाँ नहीं था।

नौजवान के लिये यह तो बहुत अच्छी खबर थी। वह अपने कुत्तों को ले कर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया। जब वे उस पहाड़ के पास पहुँचे तो ध्यान से सुनो ने उससे कहा — "अब समय गँवाने का नहीं है। ट्रौल यहाँ से केवल पाँच मील दूर है और मैं उसके घोड़े के सोने के खुरों की आवाज पत्थरों पर साफ सुन रहा हूँ।"

नौजवान ने अपने कुत्तों को कहा कि वह पहाड़ का दरवाजा तोड़ दें। बस कहने की देर थी कि उन्होंने पहाड़ का दरवाजा तोड़ दिया। जब वह उसके अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी हुई सोने के धागे से एक जाल सा बुन रही है। राजा की यह बेटी उसकी तीनों बेटियों में सबसे सुन्दर थी।

राजा की यह बेटी भी लड़के को देख कर आश्चर्यचकित रह गयी बोली — "अरे तुम? तुम कौन हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई

यहाँ इस कमरे में आने की। पिछले सात साल से मैं यहाँ बैठी हुई हूँ पर मैंने अभी तक किसी आदमी को यहाँ आते नहीं देखा।"

उसने आगे कहा — "अगर तुम ट्रौल से अपनी ज़िन्दगी बचाना चाहते हो तो भगवान के लिये यहाँ से तुरन्त चले जाओ।"

तब नौजवान ने उसे बताया कि वह वहाँ क्यों आया था और वह वहाँ बिना किसी परेशानी के ट्रौल के आने का इन्तजार करेगा।

वे लोग अभी बातें कर ही रहे थे कि ट्रौल अपने सोने के खुर वाले घोड़े पर सवार वहाँ आ पहुँचा। जब उसने पहाड़ का दरवाजा टूटा हुआ देखा और बिन बुलाये मेहमान देखे तो वह बहुत डर गया।

उसके दोनों भाइयों के साथ क्या हुआ था यह उसको पता था सो उसने सोचा कि मामला अगर बिना लड़े ही चालाकी से सिलटा लिया जाये तो अच्छा है।

यह सोच कर वह लड़के से बहुत मीठा मीठा बोला। फिर उसने राजा की बेटी से मेहमान को मेहमाननवाजी दिखाने के लिये खाना बनाने के लिये कहा।

क्योंकि इस ट्रौल को बातें बहुत अच्छी करनी आती थीं हमारे नौजवान ने भी उसको बात करने का मौका दिया। इस बात करने में वह इतना घुल मिल गया कि वह अपनी रक्षा की बात बिल्कुल ही भूल गया।

जब खाना मेज पर लगा तो वह उस ट्रौल के साथ मेज पर बैठ गया। पर राजा की बेटी छिप छिप कर रोती रही। उसके कुत्ते भी बहुत बेचैन रहे हालॉकि किसी ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया।

जब ट्रौल और उसके मेहमान ने खाना खत्म कर लिया तो नौजवान ने अपने मेजबान से कहा — "मैंने अपना खाना खत्म कर लिया अब मुझे अपनी प्यास बुझाने के लिये कुछ पीने के लिये चाहिये।

ट्रौल बोला — "पहाड़ की चोटी पर एक सोता[110] है जिसमें से बहुत साफ शराब निकलती है। पर मेरे पास वहॉ से उसे लाने के लिये कोई नहीं है।"

नौजवान बोला — "अगर यही बात है तो मेरे कुत्तों में से एक कुत्ता वहॉ जा कर उसे ला सकता है।"

ट्रौल तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया क्योंकि वह तो दिल ही दिल में यही चाहता था कि उसके कुत्ते वहॉ से चले जायें। नौजवान ने अपने पकड़ कर रखो से पहाड़ की चोटी पर जाने और वहॉ से शराब लाने के लिये कहा।

ट्रौल ने उसको शराब भरने के लिये एक बहुत बड़ा डिब्बा दे दिया और कुत्ता उसको ले कर चला गया पर कोई भी देख सकता था कि वह वहॉ से खुशी खुशी नहीं गया।

[110] Translated for the word "Spring".

समय गुजरता गया पर कुत्ता लौट कर नहीं आया। कुछ देर बाद ट्रौल बोला — "क्या हुआ तुम्हारे कुत्ते को वह अभी तक लौट कर क्यों नहीं आया। शायद तुम अगर अपने दूसरे कुत्ते को उसके पीछे भेजो तो वह उसको वहॉ से ले आये क्योंकि एक तो बर्तन भारी है दूसरे रास्ता लम्बा है।"

नौजवान को इसमें कोई चाल नजर नहीं आयी तो उसने अपने दूसरे कुत्ते फाड़ दो से कहा कि वह जाये और देखे कि पकड़ कर रखो अभी तक क्यों नहीं आया।

कुत्ते ने अपनी पूँछ हिला कर वहॉ से जाने की अपनी अनिच्छा प्रगट की कि वह अपने मालिक को छोड़ कर वहॉ से जाना नहीं चाहता था पर नौजवान ने उसको अपने हाथ से उसे बाहर की तरफ धकेल दिया सो उसे जाना ही पड़ा।

अबकी बार ट्रौल को बहुत ज़ोर की हॅसी आ गयी और राजा की बेटी और ज़ोर से रो पड़ी। पर नौजवान ने उनके हॅसने और रोने पर कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि वह बहुत खुश था और बहुत आराम से बैठा था। वह अपनी तलवार से खेल रहा था अैर उसे आने वाले खतरे का कोई अन्दाज़ा भी नहीं था।

फिर काफी समय बीत गया पर न तो कुत्ते ही आये और न शराब ही आयी। तब ट्रौल बोला — "मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे कुत्ते तुम्हारा कहना नहीं मानते वरना तुम यहॉ प्यासे नहीं बैठे रहते। मुझे लगता है कि अब तुमको अपने तीसरे कुत्ते को उनके पीछे यह

देखने के लिये भेजना पड़ेगा कि वे वापस क्यों नहीं आये। कहाँ रह गये वे।"

नौजवान राजी हो गया। उसने अपने तीसरे कुत्ते ध्यान से सुनो को जाने के लिये कहा। पर ध्यान से सुनो भी वहाँ से बिल्कुल भी जाना नहीं चाहता था। वह आवाज करता हुआ अपने मालिक के पैरों के पास खिसक गया।

इस पर नौजवान गुस्सा हो गया और उसको धक्का दे कर बाहर निकाल दिया। जब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा तो उसके साथ भी वही हुआ जो उसके दूसरे दोनों साथियों के साथ हुआ था। यानी उसके ऊपर पहुँचते ही ट्रौल के जादू से उसके चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार खड़ी हो गयी और वह उसमें कैद हो गया।

अब नौजवान के तीनों कुत्ते वहाँ से जा चुके थे और उसके तीनों कुत्ते कैद हो चुके थे।

सो ट्रौल उठा। अचानक ही उसकी शक्ल बिल्कुल ही बदल गयी। उसने दीवार पर टँगी हुई अपनी एक लम्बी तलवार उठायी और बोला — "अब मैं वह करूँगा जो मेरे भाई नहीं कर पाये। तुमको बस अब तुरन्त ही मरना है क्योंकि तुम अब मेरे काबू में हो।"

यह देख कर नौजवान तो डर गया। अब उसे बहुत अफसोस हो रहा था कि उसने अपने तीनों कुत्तों को वहाँ से क्यों जाने दिया।

फिर भी वह बोला — "मैं तुमसे अपनी जान की भीख नहीं माँगता क्योंकि कभी तो समय आयेगा जब मुझे मरना पड़ेगा पर मैं तुमसे मरने से पहले मैं भगवान की प्रार्थना करने की और अपनी बाँसुरी पर एक साम[111] बजाने की इजाज़त जरूर चाहूँगा। यह हमारे देश का नियम है।"

ट्रौल ने उसकी प्रार्थना स्वीकार तो कर ली पर उसने कहा कि वह यह सब जल्दी कर ले वह बहुत देर तक उसका इन्तजार नहीं करेगा।

सो नौजवान घुटनों के बल बैठ गया और उसने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू की। धीरे धीरे उसकी आवाज इतनी तेज़ हो गयी कि वह सारे पहाड़ पर और घाटियों में गूँजने लगी। बस उसी समय ट्रौल की बनायी हुई जादू की दीवार टूट गयी।

उसके कुत्ते जो उनमें बन्द थे आजाद हो गये। वे तुरन्त ही वहाँ से तूफान की तरह से भागे भागे चले आये और आते ही ट्रौल पर कूद पड़े। नौजवान भी उठ खड़ा हुआ और अपने एक कुत्ते से बोला — "पकड़ कर रखो इस ट्रौल को पकड़ लो। फाड़ डालो और ध्यान से सुनो तुम लोग उसके हजारों टुकड़े कर दो।"

बस उसके कहने की देर थी कि उसके तीनों कुत्ते ट्रौल पर कूद पड़े और उन तीनों ने मिल कर उसके हजारों टुकड़े कर दिये। तब नौजवान ने उसके किले का सारा खजाना उठाया ट्रौल के घोड़ों को

[111] Psalm is a biblical song in praise of God.

एक गाड़ी में जोता और तीनों राजकुमारियों को ले कर राजा के किले की तरफ चल दिया।

जैसा कि सोचा जा सकता है जब राजा की तीनों बेटियॉ फिर से मिलीं तो वह बहुत खुश हुई। सबने नौजवान को उसके उन्हें पहाड़ के ट्रौल से आजाद कराने के लिये धन्यवाद दिया।

पर नौजवान को राजा की सबसे छोटी बेटी से प्यार हो गया था। दोनों ने आपस में एक दूसरे के ज़िन्दगी भर साथ रहने की कसम खायी।

इस तरह राजा की बेटियॉ रास्ते भर आनन्द मनाती जा रही थीं। नौजवान भी उनकी ठीक से वैसी ही सेवा करता जा रहा था जैसी कि राजकुमारियों की करनी चाहिये थी।

जब वे सब लोग इस तरह से जा रहे थे तो राजकुमारियॉ नौजवान के बालों से खेल रही थीं। हर राजकुमारी ने अपनी अपनी सोने की अॅगूठी उसके बालों में बॉध दी ताकि वे उसे याद रहें।

एक दिन जब वे अभी भी यात्रा कर रहे थे कि उसी सड़क से जाते हुए उनको दो यात्री मिले। उन दोनों यात्रियों के कपड़े फटे हुए थे और पैरों में छाले पड़ गये थे। उनका हुलिया बता रहा था कि वे कोई लम्बी यात्रा कर के आ रहे हैं।

नौजवान ने अपनी गाड़ी रोकी और उनसे पूछा कि वे कौन थे और कहॉ से आ रहे थे। उन्होंने जवाब दिया कि वे दोनों राजकुमार थे और उन तीनों लड़कियों की खोज में निकले थे जिनको पहाड़ का

ट्रौल उठा कर ले गया था।[112] पर किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया सो अब उनको बजाय राजकुमार जैसे के यात्री की तरह से वापस जाना पड़ रहा है।

नौजवान ने जब उनकी कहानी सुनी तो वह उनके लिये बहुत दुखी हुआ। उसने उनसे पूछा कि क्या वे उसके साथ उसकी सुन्दर गाड़ी में बैठ कर चलना पसन्द करेंगे। राजकुमारों ने उसके इस प्रस्ताव के लिये उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

वे सब एक साथ चलते चलते उस राजा के किले में आ पहुँचे जिस राजा की वे राजकुमारियॉ थीं।

जब राजकुमारों ने यह सुना कि नौजवान उन तीनों लड़कियों को ट्रौल के चंगुल से छुड़ा लाया है तो उससे उन दोनों राजकुमारों को बहुत जलन हुई कि किस तरीके से वे अपने काम में असफल रहे और वह नौजवान अपना काम कर लाया।

दोनों ने आपस में सलाह की कि किस तरीके से उनको उस नौजवान का सबसे अच्छा इस्तेमाल करना चाहिये ताकि उनकी अपनी ताकत और शान बढ़ सके।

पर उन्होंने अपने इस नीच प्लान को जब तक के लिये छिपा कर रखा जब तक उनको कोई ठीक मौका नहीं मिल जाता।

[112] They were the same two princes who set out in search of the princesses from the King's court.

अचानक वे दोनों अपने साथी के ऊपर कूद पड़े उसको गले से पकड़ कर उसको बॉध दिया और राजकुमारियों को धमकी दी कि अगर उनमें से कोई भी कुछ भी बोला तो वे उनको मार देंगे।

और क्योंकि राजकुमारियॉ अब राजकुमारों के कब्जे में थीं तो वे तो उनको मना कर ही नहीं सकती थीं। पर वे उस नौजवान के लिये बहुत दुखी थीं जिसने उनकी ज़िन्दगी बचाने के लिये अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा दी थी।

उनमें से सबसे छोटी राजकुमारी तो दिल ही दिल में बहुत ज़ोर से रो रही थी क्योंकि ऐसा लग रहा था जैसे अब उसकी हर खुशी खत्म होने जा रही हो।

इतनी बड़ी गलती करने के बाद राजकुमार शाही किले के अन्दर घुसे। अब यह तो केवल सोचा ही जा सकता है कि राजा अपनी तीनों बेटियों को देख कर कितना खुश हुआ होगा।

इस बीच नौजवान अधमरा सा जंगल में पड़ा रहा पर वह अभी पूरा नहीं मरा था। उसके वफादार कुत्ते उसको गर्म रखने के लिये उसके पास ही लेटे हुए थे और उसके घावों को चाट रहे थे। ऐसा वे तब तक करते रहे जब तक उनका मालिक ढंग से होश में नहीं आ गया।

जब वह बिल्कुल ठीक हो गया तो वह अपने कुत्तों को साथ ले कर राजा के किले की तरफ चला। काफी तकलीफें उठाने के बाद वह शाही किले में आया जहॉ राजकुमारियॉ रहती थीं।

जब वह दरबार में घुसा तो उसने देखा कि लोग तो वहाँ बहुत खुश थे और राजा के कमरे से तो गाने और नाचने की आवाजें आ रही थीं। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा कि इस सबका क्या मतलब था।

राजा के नौकर बोले — "लगता है कि तुम कहीं बहुत दूर से आ रहे हो इसलिये तुम्हें पता नहीं है कि राजा की बेटियाँ उस पहाड़ वाले ट्रौल के चंगुल से निकल कर वापस आ गयी हैं जो उनको उठा कर ले गया था। आज राजा की सबसे बड़ी बेटी की शादी है।"

नौजवान ने फिर सबसे छोटी राजकुमारी के बारे में पूछा और पूछा कि उसकी शादी कब होगी तो नौकरों ने बताया कि वह शादी करना नहीं चाहती और दिन भर रोती रहती है। हालाँकि किसी को यह पता नहीं है कि वह क्यों रोती रहती है। यह सुन कर नौजवान बहुत खुश हुआ कि वह अभी भी उसको प्यार करती है।

नौजवान फिर राजा के दरबान के पास गया और उससे राजा को यह कहने के लिये कहा कि उनसे कहो कि मेहमान आया है जो शादी की खुशी में अपने कुत्तों का तमाशा दिखा कर लोगों का दिल बहलाना चाहता है।

यह राजा की पसन्द की चीज़ थी सो उसने हुक्म दिया कि अजनबी को बहुत अच्छे से अन्दर लाया जाये और उसकी ठीक से खातिर की जाये।

जब वह नौजवान अन्दर आया और उसने अपने कुत्तों का नाच दिखाया तो शादी में आये वहॉ बैठे सारे लोगों ने दॉतों तले उॅगली दबा ली। सबने उसकी बहुत तारीफ की कि इतना सुन्दर आदमी उन्होंने पहले कभी नहीं देखा।

पर जैसे ही तीनों राजकुमारियों ने उसे देखा तो तुरन्त ही उसे पहचान लिया कि यह तो वही नौजवान था जो उन सबको ट्रौल के चंगुल से छुड़ा कर लाया था। वे तुरन्त ही मेज पर से उठीं और उसके गले से लिपट गयीं।

उस समय उन दोनों राजकुमारों को लगा कि उनके लिये उस समय यही सबसे अच्छा रहेगा कि वे वहॉ से भाग जायें पर राजा की बेटियों ने राजा को बताया कि किस तरह से उस नौजवान ने उनको ट्रौल के चंगुल छुड़ाया और फिर रास्ते में क्या क्या हुआ। इस बात को साबित करने के लिये वे उसके बालों में अपनी अपनी अंगूठियॉ ढूॅढने लगीं।

जब राजा को उन दोनों राजकुमारों की चालबाजी का पता चला तो वह तो बहुत गुस्सा हो गया और उनको बड़ी बेरहमी से किले के बाहर निकलवा दिया। लेकिन इस नौजवान को उसने वह इज़्ज़त दी जो उसको मिलनी चाहिये थी। उसने अपनी सबसे छोटी बेटी की शादी उससे कर दी।

राजा के मरने के बाद यह नौजवान उसके पूरे राज्य का राजा बन गया। क्या ही शानदार राजा बना वह। वह और उसकी सुन्दर रानी अभी तक वहाँ राज कर रहे हैं।

19 अमीर मार्क[113]

एक बार की बात है कि एक देश में बहुत दूर एक राज्य में एक सौदागर रहता था। उसका नाम था मार्क। वह बहुत अमीर था तो लोग उसको अमीर मार्क कहते थे। उसकी जायदाद और आमदनी को गिनना मुश्किल था।

वह बहुत खुश खुश रहता था और कभी किसी गरीब को अपने घर के दरवाजे पर भी नहीं आने देता था। इतना बेरहम था वह।

एक दिन उसने सपना देखा कि कोई उससे कह रहा था कि "ओ अमीर मार्क तैयार हो जा। भगवान खुद तेरे घर मेहमान बन कर आने वाले हैं।"

सो सुबह को जब वह उठा तो उसने अपनी पत्नी से कहा "आज तुम एक बहुत अच्छी दावत का इन्तजाम करो।"

उसने अपने ऑगन आदि भी जामुनी लाल सुनहरी ब्रोकेड से ढकवा दिये। अपने आस पास के सारे रास्तों पर अपने लोग खड़े कर दिये ताकि वे किसी भी गरीब आदमी को उसके घर तक न आने दें और उन सबको डरा कर दूर रखें।

---

[113] Mark the Rich – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book :
"Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. This book is available at :
https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales
Its Hindi translation is available from : hindifolktales@gmail.com

फिर अमीर मार्क आया और भगवान के आने का इन्तजार करने लगा।

घंटों बीत गये उसके घर कोई मेहमान नहीं आया। गरीबों ने सुना कि आज अमीर मार्क के घर में बहुत बड़ी दावत हो रही है। सो वे उसके घर के चारों तरफ इकट्ठा होने लगे पर मार्क के पहरेदारों ने उन सबको वहॉ से भगा दिया।

लेकिन एक गरीब भिखारी जो अपनी उम्र की वजह से दोहरा हुआ जा रहा था फटे कपड़े पहने था किसी तरह से मार्क के दरवाजे पर पहुँच गया।

जैसे ही मार्क ने अपनी खिड़की से उसे अपने घर की तरफ आते देखा तो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "ए लोगों। क्या तुमको दिखायी नहीं देता कि यह जानवर हमारे ऑगन में से हो कर जा रहा है?" सब नौकरों ने उसे पकड़ लिया और उसको खदेड़ते हुए घर के बाहर छोड़ आये।

एक बुढ़िया ने जब उसकी यह हालत देखी तो उसको उस पर बड़ी दया आयी। वह बोली — "ओ गरीब बूढ़े भिखारी आओ मैं तुम्हें खाना भी खिलाती हूँ और तुम्हें आराम करने के लिये जगह भी देती हूँ।"

वह उसको अपने घर के अन्दर ले गयी। उसको खाना खिलाया शराब पिलायी। फिर उसको सोने की जगह दी। इस तरह

अमीर मार्क को वह भगवान कहीं नहीं मिला जिसका वह इन्तजार कर रहा था।

आधी रात को स्त्री ने एक सपना देखा कि कोई उसकी खिड़की पर खटखटा रहा था और कह रहा था — "ओ न्याय करने वाले क्या तुम आज की रात यहॉ सो रहे हो?"

बूढ़ा बोला "हॉ।"

"पास के एक गॉव में एक गरीब किसान के घर बेटा हुआ है तुम उसको क्या इनाम दोगे?"

गरीब आदमी बोला — "वह अमीर मार्क की सारी सम्पत्ति का मालिक बनेगा।"

अगले दिन उस गरीब भिखारी ने अपनी मेजबान बुढ़िया का घर छोड़ दिया और वहॉ से चला गया। उधर बुढ़िया अमीर मार्क के पास गयी और उसको अपने सपने के बारे में बताया।

तो मार्क उस किसान के पास गया जिसके बच्चा हुआ था और उससे उसका बच्चा मॉगा। उसने कहा — "लाओ यह बच्चा मुझे दे दो। मैं इसको गोद ले लेता हूँ। यह मेरे पास रह कर बड़ा होगा। मैं इसको खूब पढ़ाऊँगा लिखाऊँगा और जब मैं मर जाऊँगा तब अपनी सारी सम्पत्ति इसको दे जाऊँगा।"

लेकिन यह तो उसने केवल कहा था उसके मन में कुछ और था। उसने बच्चे को उस किसान से ले कर बर्फ की घाटी में फेंक दिया — "अब तुम यहॉ पड़े रहो और ठंड में जम जाओ। तुम इसी

तरह से मार्क की सम्पत्ति के हकदार बनोगे।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

उसी रात कुछ शिकारी बड़े खरगोश[114] का शिकार करने के लिये निकले तो उनको वह लड़का मिल गया। वे उसको घर ले गये और उसको पालने पोसने लगे।

इस घटना को बहुत समय बीत गया। एक दिन अमीर मार्क उन शिकारियों के साथ बाहर गया तो उसने उस नौजवान लड़के को देखा तो उनसे उसकी कहानी पूछी तो अपने मन में सोचा कि यह तो वही लड़का है जिसको उसने बर्फ में फेंक दिया था।

सो उसने तुरन्त ही एक चिट्ठी लिखी और उसे उस लड़के को दे कर कहा कि वह चिट्ठी वह उसकी पत्नी को दे दे। उसने उस चिट्ठी में लिखा था वह उस लड़के को कुत्ते की तरह जहर दे दे।

वह बेचारा लावारिस उस चिट्ठी को देने के लिये मार्क के घर चल दिया। रास्ते में उसको एक गरीब आदमी मिला जिसने कमीज के अलावा और कुछ भी नहीं पहन रखा था। यह भिखारी और कोई नहीं बल्कि काइस्ट खुद थे।

उसने लड़के को रास्ते में ही रोका उससे चिट्ठी ली एक मिनट तक अपने हाथ में पकड़े रहा और लो जो कुछ उसके अन्दर लिखा

[114] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit like animal, a little bigger than that – see its picture above.

हुआ वह सब बदल गया "इस लड़के को पूरी इज़्ज़त के साथ घर में बुलाओ और अपनी बेटी की शादी इसके साथ कर दो।"

ऐसा ही किया गया।

अमीर मार्क घर लौटा तो अपने नये नये दामाद को देख कर बहुत गुस्सा हो गया। उसने उससे कहा — "शाम को तुम मेरी शराब की भट्टी पर जाना और वहॉ जा कर वहॉ का काम देखना।"

और उसने अपने लोगों से यह कह दिया कि जैसे ही वे उसको देखें वैसे ही वे उसको भट्टी में फेंक दें। शाम को लड़का शराब बनाने वाली जगह जाने के लिये तैयार हुआ पर अचानक ही उसकी तबियत खराब हो गयी तो उसे घर वापस जाना पड़ा।

अमीर मार्क उसके आने की राह देखता रहा पर जब वह काफी देर तक नहीं आया तब वह उसके देखने के लिये अपने घर तक गया कि वह खुद ही अपनी भट्टी की पकड़ में आ कर उसमें गिर पड़ा।

List of Stories of “Jo Hona Tha Ho Ke Raha”

1. Story of Baldur
2. Achilles' Heel
3. Story of Duryodhan
4. Story of Shishupal
5. Story of King Parikshit
6. Story of Gautam Buddha
7. Story of Varah Mihir
8. The Daughter of the Sun
9. The Milkmaid Queen
10. The Sorceror's Head
11. Ismailian Merchant
12. The Language of the Birds
13. The Laegend of Waterfall
14. The Land Where One Never Dies
15. Wassily the Unlucky
16. Fate
17. Life's Secret
18. The Three Dogs
19. Mark the Rich

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में सौ से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में दस वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाअऐं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करन5 का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022